इतिवुत्तका

त्रिपिटक की संरचना

करने के लिए

त्रिपिटक

विनय पिटक

सुत्त पिटक

दीघा निकया

मज्झिमा निकया

सम्युत्त निकया

अंगुत्तरा निकया

खुद्दका निकया

अभिधम्म पिटक

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तका

इतिवुत्तक, जो 112 लघु प्रवचनों का संग्रह है, का नाम प्रत्येक प्रवचन के आरंभ में दिए गए इस कथन से पड़ा है: यह (इति) भगवान बुद्ध द्वारा कहा गया (वुत्तम)। इस संपूर्ण संग्रह का श्रेय खुज्जुत्तारा नामक एक गृहस्थ महिला को दिया जाता है, जो कोसंबी के राजा उदेना के महल में उनकी एक रानी समवती की सेविका के रूप में कार्य करती थी। रानी के लिए बुद्ध के प्रवचन सुनने के लिए महल छोड़ना संभव नहीं था, इसलिए खुज्जुत्तारा उनकी जगह गईं, बुद्ध के वचनों को याद किया और फिर रानी और उनकी 500 दासियों को प्रवचन देने के लिए महल लौट आईं। उनके इस प्रयास के लिए, बुद्ध ने खुज्जुत्तारा को उनकी विद्वत्ता के मामले में अपनी सबसे श्रेष्ठ गृहस्थ शिष्याओं में स्थान दिया। वह एक प्रभावी शिक्षिका भी थीं: जब बाद में एक अन्य ईर्ष्यालु रानी द्वारा महल के भीतरी कमरों को जला दिया गया, जिसमें रानी और उनके दल की मौत हो गई, तो बुद्ध ने (उदाना 7:10 में) टिप्पणी की कि सभी महिलाएं कम से कम जागृति के पहले चरण तक पहुंच चुकी थीं।

इतिवुत्तक में बुद्ध ध्यान करने और आत्मज्ञान प्राप्त करने का सही तरीका सिखाते हैं। वे सद्भावना, समभाव, ज्ञानोदय, निर्वाण, पुनर्जन्म, यौन विकृति बनाम ब्रह्मचर्य, देवदूत/देवता, ब्रह्मा (सृष्टिकर्ता) आदि जैसे कुछ बहुत ही सूक्ष्म और संवेदनशील पहलुओं पर विस्तार से चर्चा करते हैं।

(नोट: इतिवुत्तका को पढ़ने का सबसे अच्छा तरीका पाली भाषा में सीधे पढ़ना है।)

कुछ महत्वपूर्ण सूत्र:

22. मेट्टासुत्तम (सद्भावना) - बुद्ध अपने पिछले जन्म में सात युगों (कल्पों, ब्रह्मांड के विस्तार और संकुचन के चक्रों) तक ब्रह्मा (सृष्टिकर्ता) थे, क्योंकि उनका मन सद्भाव से परिपूर्ण था।

24. अत्तिपुंजसुत्तम (हड्डियों का ढेर, पुनर्जन्म) - प्रत्येक व्यक्ति एक युग (कल्प) में इतनी बार पुनर्जन्म लेता है कि उसकी हड्डियाँ एकत्र करने पर एक विशाल पर्वत के समान हो जाती हैं।
42. सुक्कधम्मसुत्त (यौन विकृति बनाम ब्रह्मचर्य) - मनुष्य पशुओं से कैसे भिन्न हैं? विवेक, यौन संबंध में शर्म और संयम रखने और ब्रह्मचर्य के उच्च मार्ग का अनुसरण करने के विकल्प के द्वारा।
44. निब्बानधुतुसुत्तम - निर्वाण क्या है? यह इच्छाओं, चाहतों और लालसाओं का क्षय है।
53. दुतियावेदनसुत्तम (तीन प्रकार की संवेदनाएँ) - ध्यान में संवेदनाओं को कैसे देखें? समभाव के साथ।
82. देवसद्दसुत्तम - देवदूत कब उत्सव मनाते हैं? जब कोई व्यक्ति पवित्र मार्ग अपनाता है, प्रगति करता है और विजय प्राप्त करता है।
83. पंचपुब्बनिमित्तसुत्तम - जब देवदूत स्वर्ग से चले जाते हैं, तो उनके साथी देवदूत उनके मनुष्य रूप में पुनर्जन्म की कामना करते हैं, ताकि वे पुण्यमय जीवन जी सकें और स्वर्ग लौट सकें।
93. अग्गिसुत्तम (पुनर्जन्म) - जुनून और घृणा की आग पशुओं, राक्षसों, भूतों, नरक आदि में पुनर्जन्म का कारण बनती है। इन्हें त्यागने से मोक्ष/निर्वासन (पुनर्जन्म से मुक्ति) प्राप्त होता है।
99. तेविज्जसुत्तम (त्रिविध ज्ञान, आत्मज्ञान) - आत्मज्ञान की प्रक्रिया के तीन चरण हैं: (1) पिछले जन्मों का स्मरण, (2) दिव्य दृष्टि से अन्य प्राणियों के पुनर्जन्म को देखना और (3) इच्छाओं के अंत और भीतर प्रकाश के उदय का प्रत्यक्ष ज्ञान (आत्मज्ञान)।
106. सब्रह्मकासुत्तम - माता और पिता प्रधान देवदूतों/ब्रह्मा के समान हैं, इसलिए उनकी देखभाल और आदर करना आवश्यक है।

एकों का समूह (एककानिपाटो)
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

---

1. लोभसुत्तम (लालच)
2. दोससुत्तम (घृणा, नफरत)
3. मोहसुत्तम (भ्रम)
4. कोढ़ासुत्तम (क्रोध)
5. मक्खसुत्तम (अवमानना)
6. मनसुत्तम (दंभ)
7. सब्बापरिण्णसुत्तम (सब कुछ जानना)
8. मनपरिण्णसुत्तम (दंभ)
9.लोभपरिन्नसुत्तम (लालच)
10-13.दोसापरिन्नसुत्तम+ मोहपरिन्नसुत्तम+ कोधापरिन्नसुत्तम+ मक्खपरिन्नसुत्तम (घृणा, भ्रम, क्रोध, तिरस्कार)
14.अविज्जनिवरणसुत्तम (अज्ञान)
15.तन्हासंयोजनसुत्तम (लालसा)
16.पथमशेखसुत्तम (प्रशिक्षण)
17.दुतियाशेखसुत्तम (प्रशिक्षण)
18.संघभेदसुत्तम (संघ में फूट पैदा करना)
19.संघसामग्गिसुत्तम (संघ में सौहार्द)
20.पदुत्थचित्तसुत्तम (भ्रष्ट मानसिकता)
21.पसन्नचित्तसुत्तम (आनंद-मन)
22.मेत्तसुत्तम (सद्भावना)
23.उभयत्थसुत्तम (दिमागीपन)
24.अट्ठिपुंजसुत्तम (हड्डियों का ढेर)
25.मुसवादसुत्तम (झूठ)
26.दानसुत्तम (दान)

27.मेत्तभवनसुत्तम (सद्भावना)

दो लोगों का समूह (डुकानिपाटो)
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

---

28. दुःखविहारसुत्तम (दुख के कारण)
29. सुखविहारसुत्तम (सुख)
30. तपनियासुत्तम (पाप की अग्नि में जलना)
31. अतपानियासुत्तम (पाप की अग्नि में न जलना)
32. पथमशिलासुत्तम (अनैतिकता नरक की ओर ले जाती है)
33. दुतियाशिलासुत्तम (नैतिकता स्वर्ग की ओर ले जाती है)
34. अतपिसुत्तम (मार्ग पर परिश्रम से ज्ञान प्राप्त होता है)
35. पथमनकुहनसुत्तम (ब्रह्मचर्य और ध्यान का पवित्र मार्ग निर्वाण की ओर ले जाता है)
36. दुतियानकुहनसुत्तम (ब्रह्मचर्य और ध्यान का पवित्र मार्ग निर्वाण की ओर ले जाता है)
37. सोमनससुत्तम (मार्ग पर तत्परता और परिश्रम की आवश्यकता)
38. वितक्कासुत्तम (सुरक्षा और संरक्षा प्राप्त होती है) अहिंसा)
39.देशनासुत्तम (बुराई को बुराई के रूप में देखने से मोहभंग और वैराग्य होता है)
40.विज्जासुत्तम (जानना और जागरूकता)
41.पन्नापरिहीनसुत्तम (प्रत्यक्ष ज्ञान का अभाव)
42.सुक्कधम्मसुत्तम (शर्म और ब्रह्मचर्य का महत्व)
43.अजातसुत्तम (अजन्मे, स्टेनलेस, का एक पवित्र राज्य है) दुःखरहित)
44.निब्बानधातुसुत्तम (निर्वाण/निब्बान क्या है)
45.पतिसल्लानासुत्तम (अलोभता)
46.सिक्खनिसंसुत्तम (पालन करने लायक प्रशिक्षण)
47.जागरियासुत्तम (जागृति)
48.आपायिकासुत्तम (गैर ब्रह्मचर्य नरक की ओर ले जाता है)
49.दिथिगतसुत्तम (बुराई) दार्शनिक दृष्टिकोण)

तीन का समूह (टिकानिपाटो)
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

50.मूलसुत्तम (असुरक्षा की जड़ें)
51.धातुसुत्तम (अमरता के गुण)
52.पथमवेदनासुत्तम (3 प्रकार की संवेदनाएं)
53.दुतियावेदनसुत्तम (ध्यान में संवेदनाओं को कैसे देखें)
54.पथमासानासुत्तम (खोज प्रवृत्ति समाप्त होती है)
55.दुतियाएशनसुत्तम (3 प्रकार) खोजने की प्रवृत्ति)
56.पथमासवसुत्तम (3 प्रकार की इच्छाएं/इच्छाएं)
57.दुतियासवसुत्तम (इच्छाओं/इच्छाओं का अंत)
58.तन्हासुत्तम (3 प्रकार की लालसाएं)

चट्टुक्कनिपातो (चारों का समूह)
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

---

1 00.ब्राह्मणधम्मयागसुत्तम (ब्राह्मण धर्म)
101.सुलभसुत्तम (आसानी से उपलब्ध)
102.असवक्खयसुत्तम (इच्छा का क्षय)
103.समानब्राह्मणसुत्तम (भिक्षु और पुजारी)
104.सिलसम्पन्नासुत्तम (सदाचार से भरपूर)
105.तन्हुप्पासुत्तम (तृष्णा का जन्मस्थान)
106.सब्रह्मकसुत्तम (माता और पिता महादूत/ब्रह्मा के समान हैं)
107.बहुकारसुत्तम (सहायक)
108.कुहासुत्तम (धोखा देने वाला)
109.नदीसोतसुत्तम (नदियाँ और झरने)
110.चरसुत्तम (चलते समय...)
111.सम्पन्नासिलसुत्तम (पूर्ण)। सदाचार)
112.लोकसुत्तम (तथागत, बुद्ध द्वारा ज्ञात सभी लोक)

इतिवुत्तक

लोभा सूत्र
त्रिपिटक की संरचना

त्रिपिटक
विनय पिटक
सुत्त पिटक
दीघा निकया
मज्झिमा निकया
सम्युत्त निकया
अंगुत्तरा निकया
खुद्दका निकया
अभिधम्म पिटक
तिपिटक » सुत्त पिटक » खुद्दक निकाय » इतिवुत्तक
पीटीएस : इट.1
भिक्षुओं, एक चीज का त्याग कर दो, और मैं तुम्हें पुनः जन्म का आश्वासन देता हूँ। वह एक चीज क्या है? वह एक चीज है, भिक्षुओं। उसका त्याग कर दो, और मैं तुम्हें पुनः जन्म का आश्वासन देता हूँ। भगवान ने यही कहा। अतः इस संदर्भ में कहा गया:
लोभ में लिप्त प्राणी बुरे जन्मों में पुनर्जन्म लेते हैं। परन्तु लोभ को सही ढंग से समझकर, अंतर्दृष्टि प्राप्त प्राणी उसका त्याग कर देते हैं। लोभ का त्याग करने से वे फिर कभी इस संसार में नहीं लौटते।
मैंने जो सुना है, उसका यही अर्थ है।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 2. दोसासुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 1 <<<<पिछला॥ एक का अध्याय: इतिवुत्तक 2॥ अगला>>>> इतिवुत्तक 3

2. दोसासुत्तम (घृणा, नफरत):
यह बात भगवान बुद्ध (भागवत) ने कही थी, अरहंत ने भी यही कहा था, जैसा मैंने सुना है:
"भिक्षुओं, एक गुण का त्याग करो, और मैं तुम्हें पुनर्जन्म न होने का आश्वासन देता हूँ। वह कौन सा गुण है? केवल दो, घृणा (दोष) का त्याग करो, और मैं तुम्हें पुनर्जन्म न होने का आश्वासन देता हूँ।"
जिस घृणा (दोष) से प्राणी एक बुरे गंतव्य की ओर जाते हैं, परेशान: यह जानते हुए भी कि घृणा,जो लोग ध्यान में गहनता से सतर्क रहते हैं (विपास्सिनो) जाने दो। जाने देना, वे कभी इस दुनिया में नहीं आते दोबारा।

नोट:
1. पुनर्जन्म का उन्मूलन: पुनर्जन्म का निवारण।
2. बुरे जन्म: नरक में पुनर्जन्म, भूखे प्रेत के रूप में पुनर्जन्म, क्रोधित राक्षस के रूप में पुनर्जन्म, या सामान्य पशु के रूप में पुनर्जन्म। अच्छे जन्मों की तरह—मनुष्य के रूप में पुनर्जन्म, स्वर्ग में पुनर्जन्म, या ब्रह्म (प्रधान देवदूत) लोकों में पुनर्जन्म—ये अवस्थाएँ भी क्षणिक हैं और कर्म पर निर्भर हैं।
3. विपश्यना - वे जो अंतर्दृष्टि से सचेत (समभाव से) रहते हैं। यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें व्यक्ति को आंतरिक घटनाओं (शरीर+मन+भावनाएँ+संवेदनाएँ) को अनासक्ति (समभाव/समभाव) से देखना होता है, जिससे उसे शांति, आत्म-जागरूकता और ज्ञान प्राप्त होता है!

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 3. मोहसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 2 <<<पिछला॥ एक का अध्याय: इतिवुत्तक 3॥ अगला >>> इतिवुत्तक 4

3. मोहसुत्तम (मोह):
यह बात भगवान बुद्ध (भागवत) ने कही थी, अरहंत ने भी यही कहा था, जैसा मैंने सुना है:
"हे भिक्षुओं, एक गुण का त्याग कर दो, और मैं तुम्हें पुनर्जन्म न होने का आश्वासन देता हूँ। वह कौन सा गुण है? मोह (मोह) का त्याग कर दो, और मैं तुम्हें पुनर्जन्म न होने का आश्वासन देता हूँ।" वह मोह (मोह) जिसके साथ प्राणी एक बुरे गंतव्य की ओर जाते हैं, अस्पष्ट:
यह जानते हुए भी कि भ्रम है, समभाव से जो लोग ध्यान में गहनता से सतर्क रहते हैं (विपास्सिनो) जाने दो। जाने देना, वे कभी इस दुनिया में नहीं आते दोबारा।
नोट:
1. पुनर्जन्म का उन्मूलन: पुनर्जन्म का निवारण।
2. बुरे जन्म: नरक में पुनर्जन्म, भूखे प्रेत के रूप में पुनर्जन्म, क्रोधित राक्षस के रूप में पुनर्जन्म, या सामान्य पशु के रूप में पुनर्जन्म। अच्छे जन्मों की तरह—मनुष्य के रूप में पुनर्जन्म, स्वर्ग में पुनर्जन्म, या ब्रह्म (प्रधान देवदूत) लोकों में पुनर्जन्म—ये अवस्थाएँ भी क्षणिक हैं और कर्म पर निर्भर हैं।

3. विपश्यना - वे जो अंतर्दृष्टि से सचेत (समभाव से) रहते हैं। यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें व्यक्ति को आंतरिक घटनाओं (शरीर+मन+भावनाएँ+संवेदनाएँ) को अनासक्ति (समभाव/समभाव) से देखना होता है, जिससे उसे शांति, आत्म-जागरूकता और ज्ञान प्राप्त होता है।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 4. कोधासुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 3 <<<पिछला ॥ एक का अध्याय: इतिवुत्तक 4 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 5

4. कोधासुत्तम (क्रोध):
यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:
"भिक्षुओं, एक गुण का त्याग करो, और मैं तुम्हें पुनर्जन्म न होने का आश्वासन देता हूँ। वह कौन सा गुण है? क्रोध को उस एक गुण के रूप में त्याग दो, और मैं तुम्हें पुनर्जन्म न होने का आश्वासन देता हूँ।" जिस क्रोध के साथ प्राणी एक बुरे गंतव्य की ओर जाते हैं, क्रोधित: यह जानते हुए कि क्रोध, जो लोग ध्यान में गहनता से सतर्क रहते हैं (विपास्सिनो) जाने दो। जाने देना, वे कभी इस दुनिया में नहीं आते दोबारा।
नोट:
1. पुनर्जन्म का उन्मूलन: पुनर्जन्म का निवारण।
2. बुरे जन्म: नरक में पुनर्जन्म, भूखे प्रेत के रूप में पुनर्जन्म, क्रोधित राक्षस के रूप में पुनर्जन्म, या सामान्य पशु के रूप में पुनर्जन्म। अच्छे जन्मों की तरह—मनुष्य के रूप में पुनर्जन्म, स्वर्ग में पुनर्जन्म, या ब्रह्म (प्रधान देवदूत) लोकों में पुनर्जन्म—ये अवस्थाएँ भी क्षणिक हैं और कर्म पर निर्भर हैं।
3. विपश्यना - वे जो अंतर्दृष्टि से सचेत (समभाव से) रहते हैं। यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें व्यक्ति को आंतरिक घटनाओं (शरीर+मन+भावनाएँ+संवेदनाएँ) को अनासक्ति (समभाव/समभाव) से देखना होता है, जिससे उसे शांति, आत्म-जागरूकता और ज्ञान प्राप्त होता है।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 5. मक्खसुत्तम
थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 4 <<<पिछला ॥ एक का अध्याय: इतिवुत्तक 5 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 6

5. मक्खसुत्तम (अवमानना):
यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:
"भिक्षुओं, एक गुण का त्याग करो, और मैं तुम्हें पुनर्जन्म न होने का आश्वासन देता हूँ। वह कौन सा गुण है? अवमानना को एक गुण के रूप में त्याग दो, और मैं तुम्हें पुनर्जन्म न होने का आश्वासन देता हूँ।"
जिस अवमानना के साथ

प्राणी एक बुरे गंतव्य की ओर जाते हैं,

तिरस्कारपूर्ण:

इस अवमानना को जानते हुए भी, समभाव से

जो लोग ध्यान में गहनता से सतर्क रहते हैं

(विपास्सिनो)

जाने दो।

जाने देना,

वे कभी इस दुनिया में नहीं आते

दोबारा।

नोट:
1. पुनर्जन्म का उन्मूलन: पुनर्जन्म का निवारण।
2. बुरे जन्म: नरक में पुनर्जन्म, भूखे प्रेत के रूप में पुनर्जन्म, क्रोधित राक्षस के रूप में पुनर्जन्म, या सामान्य पशु के रूप में पुनर्जन्म। अच्छे जन्मों की तरह—मनुष्य के रूप में पुनर्जन्म, स्वर्ग में पुनर्जन्म, या ब्रह्म (प्रधान देवदूत) लोकों में पुनर्जन्म—ये अवस्थाएँ भी क्षणिक हैं और कर्म पर निर्भर हैं।
3. विपश्यना - वे जो अंतर्दृष्टि से सचेत (समभाव से) रहते हैं। यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें व्यक्ति को आंतरिक घटनाओं (शरीर+मन+भावनाएँ+संवेदनाएँ) को अनासक्ति (समभाव/समभाव) से देखना होता है, जिससे उसे शांति, आत्म-जागरूकता और ज्ञान प्राप्त होता है।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 6. मनसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 5 <<<पिछला ‖ एक का अध्याय: इतिवुत्तक 6 ‖ अगला >>> इतिवुत्तक 7

6. मनसुत्तम (अहंकार):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, एक गुण का त्याग करो, और मैं तुम्हें पुनर्जन्म न होने का आश्वासन देता हूँ। वह कौन सा गुण है? अहंकार को त्याग दो, और मैं तुम्हें पुनर्जन्म न होने का आश्वासन देता हूँ।”

जिस अहंकार के साथ

प्राणी एक बुरे गंतव्य की ओर जाते हैं,

गर्व:

यह जानते हुए भी कि अहंकार,

जो लोग ध्यान में गहनता से सतर्क रहते हैं

(विपास्सिनो)

जाने दो।

जाने देना,

वे कभी इस दुनिया में नहीं आते

दोबारा।

नोट:
1. पुनर्जन्म का उन्मूलन: पुनर्जन्म का निवारण।
2. बुरे जन्म: नरक में पुनर्जन्म, भूखे प्रेत के रूप में पुनर्जन्म, क्रोधित राक्षस के रूप में पुनर्जन्म, या सामान्य पशु के रूप में पुनर्जन्म। अच्छे जन्मों की तरह—मनुष्य के रूप में पुनर्जन्म, स्वर्ग में पुनर्जन्म, या ब्रह्म (प्रधान देवदूत) लोकों में पुनर्जन्म—ये अवस्थाएँ भी क्षणिक हैं और कर्म पर निर्भर हैं।
3. विपश्यना - वे जो अंतर्दृष्टि से सचेत (समभाव से) रहते हैं। यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें व्यक्ति को आंतरिक घटनाओं (शरीर+मन+भावनाएँ+संवेदनाएँ) को अनासक्ति (समभाव/समभाव) से देखना होता है, जिससे उसे शांति, आत्म-जागरूकता और ज्ञान प्राप्त होता है।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 7. सब्बापरिन्नसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 6 <<<पिछला ‖ एक का अध्याय: इतिवुत्तक 7 ‖ अगला >>> इतिवुत्तक 8

7. सब्बपरिन्नसुत्तम (सर्वज्ञान):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:
“भिक्षुओं, जिसने सर्वस्व को पूर्णतः नहीं जाना और पूर्णतः नहीं समझा है, [1] जिसका मन इसके प्रति आसक्ति से शुद्ध नहीं हुआ है, जिसने इसका त्याग नहीं किया है, वह दुखों का अंत करने में असमर्थ है। परन्तु जिसने सर्वस्व को पूर्णतः जान लिया और पूर्णतः समझ लिया है, जिसका मन इसके प्रति आसक्ति से शुद्ध हो गया है, जिसने इसका त्याग कर दिया है, वह दुखों का अंत करने में सक्षम है।”
सब कुछ जानना
चारों ओर से,
जुनून से प्रेरित नहीं
सभी स्थानों पर:
उसने समझ लिया
सभी,
आगे बढ़ गया है
सभी प्रकार के कष्ट।
नोट: 1. “सर्व” का अर्थ है छह इंद्रियाँ (दृष्टि, श्रवण, गंध, स्वाद, स्पर्श और चिंतन) और उनसे संबंधित विषय। इसमें अनुभव के वे सभी पहलू शामिल हैं जिनका वर्णन किया जा सकता है, लेकिन निर्वाण इसमें शामिल नहीं है।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 8. मनपरिन्नसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।

इतिवुत्तक 7 <<<पिछला ॥ एक का अध्याय: इतिवुत्तक 8 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 9

8. मनपरिन्नसुत्तम (अहंकार):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, जिसने अहंकार को पूर्णतः नहीं जाना और पूर्णतः नहीं समझा है, जिसका मन इससे शुद्ध नहीं हुआ है, जिसने इसका त्याग नहीं किया है, वह दुखों का अंत करने में असमर्थ है। परन्तु जिसने अहंकार को पूर्णतः जान लिया और पूर्णतः समझ लिया है, जिसका मन इससे शुद्ध हो गया है, जिसने इसका त्याग कर दिया है, वह दुखों का अंत करने में सक्षम है।"
लोग हैं

अहंकार से ग्रस्त

अहंकार से बंधा हुआ

होने से प्रसन्न (भाव)।

अहंकार को न समझ पाने के कारण,

वे आगे चलकर भाव (भव) की अवस्था में पहुँचते हैं।

लेकिन जो लोग अहंकार को त्याग देते हैं,

इसके विनाश में, मुक्त हो जाते हैं,

अहंकार के बंधन पर विजय प्राप्त करना,

परे जाओ

सभी बांड।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 9. लोभपरिन्नसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।

इतिवुत्तक 8 <<<पिछला ॥ एक का अध्याय: इतिवुत्तक 9 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 10-13

9. लोभपरिन्नसुत्तम (लालच):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, जिसने लोभ को पूर्णतः नहीं जाना और पूर्णतः नहीं समझा है, जिसने अपने मन को इससे अलग नहीं किया है और इसे त्याग नहीं दिया है, वह दुखों का अंत करने में असमर्थ है। परन्तु जिसने लोभ को पूर्णतः जान लिया है और पूर्णतः समझ लिया है, जिसने अपने मन को इससे अलग कर दिया है और इसे त्याग दिया है, वह दुखों का अंत करने में सक्षम है।"
जिस लालच के साथ

प्राणी एक बुरे गंतव्य की ओर जाते हैं,

लालच करना:

यह जानते हुए भी कि लालच,

जो लोग ध्यान में गहनता से सतर्क रहते हैं

(विपास्सिनो)

जाने दो।

जाने देना,

वे कभी इस दुनिया में नहीं आते

दोबारा।

नोट:
1. बुरे जन्म: नरक में पुनर्जन्म, भूखे प्रेत के रूप में, क्रोधित राक्षस के रूप में, या सामान्य पशु के रूप में। अच्छे जन्मों की तरह—मनुष्य के रूप में पुनर्जन्म, स्वर्ग में, या ब्रह्म (प्रधान देवदूत) लोकों में—ये अवस्थाएँ भी क्षणिक हैं और कर्म पर निर्भर हैं।

2. विपश्यना - वे जो अंतर्दृष्टि से सचेत (समभाव से) रहते हैं। यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक अंतर्दृष्टि ध्यान को संदर्भित करता है, जिसमें व्यक्ति को आंतरिक घटनाओं (शरीर+मन+भावनाएँ+संवेदनाएँ) को अनासक्ति (समभाव/समभाव) से देखना होता है, जिससे उसे शांति, आत्म-जागरूकता और ज्ञान प्राप्त होता है।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> इतिवुत्तका >> 10-13. दोसामोहकोधामक्खा

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।

इतिवुत्तक 9 <<<पिछला || एक का अध्याय: इतिवुत्तक 10-13 || अगला >>> इतिवुत्तक 14

10-13. दोसपरिन्नसुत्तम + मोहपरिन्नसुत्तम + कोधपरिन्नसुत्तम + मक्खपरिन्नसुत्तम (घृणा, मोह, क्रोध, तिरस्कार)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, जिसने घृणा, मोह, क्रोध, तिरस्कार को पूर्णतः नहीं जाना और पूर्णतः नहीं समझा है, जिसने अपने मन को इससे अलग नहीं किया है और इसे त्याग नहीं दिया है, वह दुखों का अंत करने में असमर्थ है। परन्तु जिसने घृणा, मोह, क्रोध, तिरस्कार को पूर्णतः जान लिया है और पूर्णतः नहीं समझा है, जिसने अपने मन को इससे अलग कर दिया है और इसे त्याग दिया है, वह दुखों का अंत करने में सक्षम है।” [इन प्रवचनों के श्लोक 2-5 के श्लोकों के समान हैं।]
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 14. अविज्जनिवरणसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 10—13 <<<पिछला ‖ एक का अध्याय: इतिवुत्तक 14 ‖ अगला >>> इतिवुत्तक 15

14. अविज्जनिवरणसुत्तम (अज्ञान):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, मुझे अज्ञान (अविज्जा) के अवरोध के समान कोई दूसरा अवरोध दिखाई नहीं देता, जिसके कारण लोग लंबे समय तक भटकते और पुनर्जन्म लेते रहते हैं। अविज्जा के अवरोध के कारण ही लोग लंबे समय तक भटकते और पुनर्जन्म लेते रहते हैं।”
कोई और बात नहीं

इसलिए लोगों को बाधा पहुंचाता है

वे दिन-रात भटकते रहते हैं।

जैसे कि जब वे अवरुद्ध होते हैं

भ्रम के कारण।

लेकिन जो लोग भ्रम को त्याग देते हैं,

अंधकार के विशाल समूह को चकनाचूर कर दो,

अब और आगे मत भटको।

उनके कारण का पता नहीं चल पाया है।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 15. तन्हासंयोजनसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 14 <<<पिछला ‖ एक का अध्याय: इतिवुत्तक 15 ‖ अगला >>> इतिवुत्तक 16

15. तन्हासंयोजनसुत्तम् (लालसा):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, मैं तन्हा के बंधन के समान किसी अन्य बंधन की कल्पना भी नहीं करता—जिससे जुड़े प्राणी लंबे समय तक भटकते और पुनर्जन्म लेते रहते हैं। तन्हा के बंधन से बंधे प्राणी
लंबे समय तक भटकते और पुनर्जन्म लेते रहते हैं।”
अपने साथी के लिए लालसा (तन्हा) के साथ, एक आदमी

बहुत लंबे समय तक भटकता रहता है।

न ही इस राज्य में यहाँ

और न ही कहीं और

क्या वह इससे आगे जाता है?

भटकते रहना।

इस कमी को जानते हुए—

वह लालसा (तन्हा) दुख को जन्म देती है—

लालसा से मुक्त (तन्हा),

आसक्ति से रहित,

ध्यानमग्न भिक्षु

वह भिक्षु जीवन व्यतीत करता है।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 16. पथमशेखसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 15 <<<पिछला॥ एक का अध्याय: इतिवुत्तक 16॥ अगला >>> इतिवुत्तक 17

16. पथमसेकसुत्तम (प्रशिक्षण)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया था, अरहंत द्वारा कहा गया था, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, आंतरिक कारकों के संबंध में, मैं उचित ध्यान[1] जैसे किसी अन्य कारक की कल्पना नहीं करता, जो प्रशिक्षण में लगे भिक्षु[2] के लिए इतना कुछ कर सके, जिसने हृदय के लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया है, लेकिन बंधन से अतुलनीय सुरक्षा[3] पर ध्यान केंद्रित करता है। जो भिक्षु उचित रूप से ध्यान देता है, वह अकुशलता को त्याग देता है और कुशलता को विकसित करता है।

उचित ध्यान

एक गुणवत्ता के रूप में

प्रशिक्षण ले रहे भिक्षु का:

और कुछ नहीं

इतना करता है

सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए।

एक भिक्षु, उचित प्रयास करते हुए,

दुखों का अंत प्राप्त होता है।

टिप्पणी
1. उचित ध्यान (योनिसो मनसिकारा) वह क्षमता है जिसके द्वारा ध्यान उन प्रश्नों पर केंद्रित किया जा सकता है जो दुख के अंत की ओर ले जाते हैं। एमएन 2 में निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यान के लिए अनुपयुक्त बताया गया है: “क्या मैं अतीत में था? क्या मैं अतीत में नहीं था? मैं अतीत में क्या था? मैं अतीत में कैसा था? ... क्या मैं भविष्य में होऊंगा? क्या मैं भविष्य में नहीं होऊंगा? मैं भविष्य में क्या होऊंगा? मैं भविष्य में कैसा होऊंगा? ... क्या मैं हूं? क्या मैं नहीं हूं? मैं क्या हूं? मैं कैसा हूं? यह अस्तित्व कहां से आया है? यह कहां जा रहा है?” प्रवचन में निम्नलिखित मुद्दों को भी ध्यान के लिए उपयुक्त बताया गया है: “यह दुख है। यह दुख का उद्‌गम है। यह दुख का निवारण है। यह दुख के निवारण का मार्ग है।” अन्य अंश दर्शाते हैं कि उचित ध्यान अनुभव को न केवल चार आर्य सत्यों के संदर्भ में देखता है, बल्कि उन सत्यों के अनुरूप कर्तव्यों के संदर्भ में भी देखता है। एसएन 22:122 और एसएन 46:51 देखें।
2. “प्रशिक्षण में” वह व्यक्ति है जिसने कम से कम जागृति का पहला स्तर प्राप्त कर लिया है,
लेकिन अंतिम स्तर तक नहीं पहुंचा है।
3. बंधन = चार बंधन: कामुक वासना, भाव, मनोवृत्ति और अज्ञान।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 17. दुतियाशेखसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 16 <<<पिछला ॥ एक का अध्याय: इतिवुत्तक 17 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 18

17. दुतियासेखसुत्तम (प्रशिक्षण)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, बाह्य कारकों के संदर्भ में, मैं प्रशंसनीय लोगों के साथ मित्रता[1] जैसे किसी अन्य कारक को प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे भिक्षु के लिए इतना महत्वपूर्ण नहीं मानता, जिसने हृदय के लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया है, लेकिन बंधन से पूर्णतम सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित करता है। प्रशंसनीय लोगों के साथ मित्रता रखने वाला भिक्षु अकुशलता का त्याग करता है और कुशलता का विकास करता है।”
एक भिक्षु जो दोस्त है

शुभचिंतक को

—जो आदरणीय और सम्मानजनक हो,

अपने दोस्तों की सलाह मानना—

सचेत, पूरी तरह सतर्क,

चरण दर चरण प्राप्त करता है

सभी बंधनों का अंत।

नोट:
1. एसएन 45:2 में बुद्ध कहते हैं, "प्रशंसनीय लोगों (कल्याण-मित्र) को मित्र, साथी और सहकर्मी के रूप में रखना ही वास्तव में पवित्र जीवन का सार है। जब किसी भिक्षु के मित्र, साथी और सहकर्मी प्रशंसनीय होते हैं, तो उससे यह अपेक्षा की जा सकती है कि वह श्रेष्ठ अष्टांगिक मार्ग का विकास और अनुसरण करेगा... मेरे जैसे प्रशंसनीय मित्र पर निर्भर रहने से ही जन्म के अधीन प्राणियों को जन्म... बुढ़ापा... मृत्यु... दुःख, विलाप, पीड़ा, कष्ट और निराशा से मुक्ति मिली है।"
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 18. संघभेदसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।

इतिवुत्तक 17 <<<पिछला || एक का अध्याय: इतिवुत्तक 18 || अगला >>> इतिवुत्तक 19

18. संघभेदसूत्त (संघ में फूट उत्पन्न करना)

यह बात भगवान बुद्ध (भागवत) ने कही थी, अरहंत ने कही थी, जैसा मैंने सुना है:

"हे भिक्षुओं, जब एक बात संसार में उत्पन्न होती है, तो वह अनेकों के लिए हानि, अनेकों के लिए दुःख और अनेक प्राणियों, चाहे मनुष्य हों या देवता, के लिए दुःख का कारण बनती है। वह कौन सी बात है? संघ में फूट। जब संघ विभाजित हो जाता है, तो आपस में वाद-विवाद होता है, एक-दूसरे को अपशब्द कहे जाते हैं, एक-दूसरे के विरुद्ध गुटबंदी की जाती है, एक-दूसरे का त्याग किया जाता है। वहाँ जो लोग [शिक्षा में] कम विश्वास रखते हैं, वे अपना सारा विश्वास खो देते हैं, जबकि कुछ जो
विश्वास रखते हैं, उनका विश्वास बदल जाता है।"
एक युग के लिए अभिशप्त

अभाव की ओर,

भाड़ में:

वह व्यक्ति जिसने संघ (भिक्षुओं का संप्रदाय) को विभाजित किया हो।

गुटों में आनंद लेते हुए,

अविवेकी—

उस पर प्रतिबंध लगा दिया गया है।

गुलामी से सुरक्षा।

एकमत से संघ को विभाजित करने के बाद,

उसे युगों तक पकाया जाता है

नरक में।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 19. संघसमाग्गिसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 18 <<<पिछला ॥ एक का अध्याय: इतिवुत्तक 19 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 20

19. संघसमग्गिसुत्तम (संघ में सामंजस्य):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“हे भिक्षुओं, जब कोई वस्तु संसार में उत्पन्न होती है, तो वह अनेकों के कल्याण, अनेकों के सुख, अनेक प्राणियों के कल्याण और सुख के लिए उत्पन्न होती है, चाहे वे मनुष्य हों या दिव्य। वह कौन सी वस्तु है? संघ में सामंजस्य। जब संघ में सामंजस्य होता है, तो आपस में कोई वाद-विवाद नहीं होता, कोई एक-दूसरे का अपमान नहीं करता, कोई एक-दूसरे के विरुद्ध गुटबंदी नहीं करता, कोई एक-दूसरे का त्याग नहीं करता। वहाँ वे लोग जो [शिक्षा में] कम विश्वास रखते हैं, उनका विश्वास बढ़ जाता है, जबकि जो पहले से ही विश्वास रखते हैं, उनका विश्वास और भी बढ़ जाता है।”
संघ (भिक्षुओं के समूह) में सामंजस्य ही आनंदमय है।

जो सामंजस्य स्थापित करने में सहायता करता है—

सामंजस्य में आनंदित होना,

विवेकपूर्ण—

उसे गुलामी से सुरक्षा का अधिकार नहीं है।

संघ में सामंजस्य स्थापित करने के बाद,

वह युगों तक आनंदित रहता है

स्वर्ग में।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 20. पदुत्थचित्तसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।

इतिवुत्तक 19 <<<पिछला ॥ एक का अध्याय: इतिवुत्तक 20 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 21

20. पदुत्थचित्तसुत्तम् (भ्रष्ट मन):

यह बात भगवान बुद्ध (भागवत) ने कही थी, अरहंत ने कही थी, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, एक ऐसा मामला है जहाँ एक व्यक्ति भ्रष्ट मन का है। उस मन को अपनी चेतना से घेरकर, मैं यह समझता हूँ, 'यदि यह व्यक्ति इसी क्षण मर जाए, तो मानो उसे उठाकर ले जाया जाए, तो वह नरक में पहुँच जाएगा।' ऐसा क्यों है? क्योंकि उसका मन भ्रष्ट है। भ्रष्ट मन के कारण ही ऐसे मामले होते हैं जहाँ प्राणी—मृत्यु के बाद शरीर के टूटने पर—वंचित लोक, बुरे गंतव्य, निचले लोक, नरक में पुनः प्रकट होते हैं।”
मामले को जानते हुए

भ्रष्ट मानसिकता वाले व्यक्ति का,

जागृत व्यक्ति ने इसका अर्थ समझाया

भिक्षुओं की उपस्थिति में।

अगर वह व्यक्ति

यदि इसी क्षण मेरी मृत्यु हो जाए,

वह नरक में पुनः प्रकट होगा

क्योंकि उसका दिमाग भ्रष्ट है—

मानो उसे उठाकर ले जाया गया हो

और वहां रख दिया।

यह भ्रष्ट मानसिकता के कारण है

कि प्राणी जाते हैं

एक बुरे गंतव्य की ओर।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 21. पसन्नचित्तसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।

इतिवुत्तक 20 <<<पिछला ॥ एक का अध्याय: इतिवुत्तक 21 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 22

21. पसन्नचित्तसुत्तम् (आनंदमय मन):

यह बात भगवान बुद्ध (भागवत) ने कही थी, अरहंत ने कही थी, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, एक ऐसा मामला है जहाँ एक व्यक्ति आनंदमय मन से है। उस मन को अपनी चेतना से घेरकर, मैं यह समझता हूँ, 'यदि यह व्यक्ति इसी क्षण मर जाए, तो मानो उसे उठाकर ले जाया जाए, तो वह स्वर्ग में पहुँच जाएगा।' ऐसा क्यों है? क्योंकि उसका मन आनंदमय है। आनंदमय मन के कारण ही कुछ प्राणी शरीर के विखंडन के बाद, मृत्यु के बाद स्वर्गलोक में पुनः प्रकट होते हैं।"
मामले को जानते हुए

आनंदमय मन वाले व्यक्ति का

जागृत व्यक्ति ने इसका अर्थ समझाया

भिक्षुओं की उपस्थिति में।

अगर वह व्यक्ति

यदि इसी क्षण मेरी मृत्यु हो जाए,

वह स्वर्ग में पुनः प्रकट होगा

क्योंकि उसका मन आनंदित है—

मानो उसे उठाकर ले जाया गया हो

और वहां रख दिया।

यह आनंदमय मन की वजह से है

कि प्राणी जाते हैं

एक अच्छे गंतव्य तक।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 22. मेट्टसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।

इतिवृत्तक 21 <<<पिछला ॥ एक का अध्याय: इतिवृत्तक 22 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 23

22. मेट्टासुत्तम (सद्भावना)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, पुण्य कर्मों से भयभीत न हों। यह आनंदमय, वांछनीय, मनभावन, प्यारा, आकर्षक—अर्थात पुण्य कर्मों का पर्यायवाची है। मैं प्रत्यक्ष रूप से जानता हूँ कि, लंबे समय तक पुण्य कर्म करने से, मैंने लंबे समय तक वांछनीय, मनभावन, प्यारा, आकर्षक परिणाम अनुभव किए। सात वर्षों तक सद्भावना का भाव विकसित करने के बाद, संकुचन और विस्तार के सात युगों तक मैं इस संसार में वापस नहीं आया। जब भी युग संकुचन के दौर से गुजर रहा था, मैं प्रकाश के लोक में प्रवेश कर गया। जब भी युग विस्तार के दौर से गुजर रहा था, मैं एक खाली ब्रह्मा (प्रधान देव) निवास में पुनः प्रकट हुआ। वहाँ मैं ब्रह्मा (प्रधान देव), महान ब्रह्मा, अजेय विजेता, पूर्ण द्रष्टा, शक्ति का स्वामी था। फिर छत्तीस बार मैं देवताओं का शासक, सक्का था। सैकड़ों बार मैं एक राजा, एक चक्र-घुमाने वाला सम्राट, एक धम्म के धर्मात्मा राजा, पृथ्वी के चारों कोनों पर विजय प्राप्त करने वाले, ग्रामीण क्षेत्रों पर स्थिर नियंत्रण रखने वाले, सात रत्नों से संपन्न—और उन समयों का उल्लेख नहीं जब मैं एक स्थानीय राजा था। मेरे मन में यह विचार आया, 'यह मेरे किस कर्म का फल है, किस कर्म का परिणाम है कि अब मेरे पास इतनी महान शक्ति और सामर्थ्य है?' तब मेरे मन में यह विचार आया, 'यह मेरे तीन प्रकार के कर्मों का फल है, तीन प्रकार के कर्मों का परिणाम है कि अब मेरे पास इतनी महान शक्ति और सामर्थ्य है: अर्थात् उदारता, आत्म-संयम और संयम।'

पुण्य कर्मों में प्रशिक्षण प्राप्त करें

जो परमानंद का सर्वोपरि लाभ प्रदान करते हैं—

उदारता विकसित करें,

एक सामंजस्यपूर्ण जीवन,

सद्भावपूर्ण मन।

इनका विकास करना

तीन बातें

जो आनंद लाते हैं,

बुद्धिमान लोग पुनः प्रकट होते हैं

आनंद की दुनिया में

शुद्ध।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 23. उभयत्थसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।

पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 22 <<<पिछला॥ एक का अध्याय: इतिवुत्तक 23॥ अगला >>> इतिवुत्तक 24

23. उभयत्थसुत्तम् (सजगता):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"हे भिक्षुओं, इस एक गुण को विकसित और अभ्यास करने से दोनों प्रकार के लाभ सुरक्षित रहते हैं: इस जीवन में लाभ और आने वाले जन्मों में लाभ। वह कौन सा गुण है? कुशल गुणों के प्रति सजगता। यही वह गुण है, जिसे विकसित और अभ्यास करने से दोनों प्रकार के लाभ सुरक्षित रहते हैं: इस जीवन में लाभ और आने वाले जन्मों में लाभ।"
वे सजगता की प्रशंसा करते हैं, बुद्धिमान लोग।

पुण्य कर्म करने में।

जब सचेत, बुद्धिमान,

आपको दोनों प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं:

इस जीवन में मिलने वाले लाभ,

और आने वाले जीवन में इसके लाभ।

आपके लाभ के लिए सफलता प्राप्त करके,

आपको प्रबुद्ध कहा जाता है।

ढंग।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 24. अट्ठिपंजसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 23 <<<पिछला॥ एक का अध्याय: इतिवुत्तक 24॥ अगला >>> इतिवुत्तक 25

24. अत्तिपुंजसुत्तम (हड्डियों का ढेर):

यह बात भगवान बुद्ध (भागवत) ने कही थी, अरहंत ने कही थी, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, यदि कोई एक व्यक्ति युगों (कप्पा, कल्प) तक भटकता और पुनर्जन्म लेता रहे, तो वह अपने पीछे हड्डियों की एक श्रृंखला, हड्डियों का एक ढेर, हड्डियों का एक ऐसा समूह छोड़ जाएगा जो इस वेपुल्ला पर्वत जितना बड़ा होगा, बशर्ते कोई उन्हें एकत्र करने वाला हो और वह संग्रह नष्ट न हो।"
संचय

किसी एक व्यक्ति का

युगों से हड्डियाँ

यह ढेर होगा

पहाड़ के बराबर,

महान ऋषि ने ऐसा कहा था।

(उन्होंने इसे घोषित किया)

महान माउंट वेपुल्ला

वल्चर पीक के उत्तर में

पर्वतीय घेरे में

मगधों का।)[1]

लेकिन जब वह व्यक्ति देखता है

सही प्रत्यक्ष समझ के साथ

चार आर्य सत्य—

कष्ट,

पीड़ा का कारण,

दुखों से मुक्ति पाना,

और आर्य अष्टांगिक मार्ग,

दुखों को शांत करने का मार्ग—

भटकते हुए

तो, अधिकतम सात बार ही सही।

सभी बंधनों के अंत के साथ,

वह इसे समाप्त करता है

पीड़ा का।

नोट:
1. बुद्ध के समय में मगध एक राज्य था, जो लगभग वर्तमान बिहार राज्य के बराबर था। इसकी राजधानी राजगृह पाँच पर्वतों की एक श्रृंखला से घिरी हुई थी। गिद्ध शिखर, जो श्रृंखला के मध्य में स्थित एक एकांत चट्टानी टीला था, बुद्ध का पसंदीदा स्थान था।
यह भी देखें: SN 15:3
2. कल्प (संस्कृत) के लिए इऑन

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 25. मुसावादसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 24 <<<पिछला || एक का अध्याय: इतिवुत्तक 25 || अगला >>> इतिवुत्तक 26

25. मुसवदासुतम् (झूठ बोलना):

यह बात भगवान बुद्ध (भागवत) ने कही थी, अरहंत ने कही थी, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, जो व्यक्ति एक भी अपराध करता है, उसके लिए ऐसा कोई पाप नहीं है जो नहीं किया जा सकता। वह कौन सा अपराध है? यह: जानबूझकर झूठ बोलना।"
झूठ बोलने वाले व्यक्ति के लिए,

जो इस एक बात में उल्लंघन करता है,

दुनिया के प्रति चिंता से परे:

कोई बुराई नहीं है

ऐसा नहीं किया जाना चाहिए।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 26. दानसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 25 <<<पिछला || एक का अध्याय: इतिवुत्तक 26 || अगला >>> इतिवुत्तक 27

26. दानसुत्तम (दान):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“हे भिक्षुओं, यदि प्राणी दान और साझा करने के फल को जानते, जैसा कि मैं जानता हूँ, तो वे बिना दान दिए भोजन नहीं करते, और न ही स्वार्थ का दाग उनके मन पर हावी होता। चाहे वह उनका अंतिम निवाला ही क्यों न हो, यदि कोई उनका दान ग्रहण करने वाला हो, तो वे बिना दान दिए भोजन नहीं करते। परन्तु क्योंकि प्राणी दान और साझा करने के फल को नहीं जानते, जैसा कि मैं जानता हूँ, वे बिना दान दिए भोजन करते हैं। स्वार्थ का दाग उनके मन पर हावी हो जाता है।”

यदि प्राणियों को पता होता
महान द्रष्टा ने क्या कहा,
साझा करने का परिणाम कैसा होता है
इसमें बहुत अच्छे फल लगते हैं,
फिर, स्वार्थ के कलंक को दबाते हुए
बढ़ी हुई जागरूकता के साथ,
वे मौसम में हार मान लेंगे
नेक लोगों के लिए,
जहां दान से बहुत अच्छा फल मिलता है।
भोजन देने के बाद
एक भेंट के रूप में
उन लोगों को जो भेंट के योग्य हैं,
कई दानदाताओं,
जब वे इस दुनिया से चले जाते हैं,
मानव अवस्था,
जाना
स्वर्ग के लिए।
वे वहाँ गए थे
स्वर्ग के लिए,
आनंद मनाओ,
कामुक सुखों का आनंद लेना।
वे निस्वार्थ हैं।
परिणाम में भाग लेना
साझा करने का।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 27. मेट्टभवनसुत्तम
थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।

इतिवुत्तक 26 <<<पिछला ॥ एक का अध्याय: इतिवुत्तक 27 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 28

27. मेत्तभावनासुत्तम् (सद्भावना):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, स्वर्ग में स्वतः आरोहण की ओर ले जाने वाले पुण्य कर्मों के सभी आधार सद्भावना के माध्यम से प्राप्त चेतना-मुक्ति के सोलहवें भाग के बराबर भी नहीं हैं। सद्भावना—उनसे कहीं बढ़कर—चमकती, प्रज्वलित और चकाचौंध करती है।

जिस प्रकार सभी तारों की चमक चंद्रमा की चमक के सोलहवें भाग के बराबर भी नहीं है, जिस प्रकार चंद्रमा—उनसे कहीं बढ़कर—चमकती, प्रज्वलित और चकाचौंध करती है, उसी प्रकार स्वर्ग में स्वतः आरोहण की ओर ले जाने वाले पुण्य कर्मों के सभी आधार सद्भावना के माध्यम से प्राप्त चेतना-मुक्ति के सोलहवें भाग के बराबर भी नहीं हैं। सद्भावना—उनसे कहीं बढ़कर—चमकती, प्रज्वलित और चकाचौंध करती है।”

"जैसे शरद ऋतु के अंतिम महीने में, जब आकाश निर्मल और बादलों से रहित होता है, सूर्य आकाश में आरोहण करते हुए अंधकार में डूबे हुए स्थान को भेद देता है, चमकता है, दमकता है और चकाचौंध कर देता है, ठीक उसी प्रकार, स्वर्ग में स्वतः प्रकट होने की ओर ले जाने वाले पुण्य कर्मों के सभी आधार सद्भावना के माध्यम से प्राप्त चेतना-मुक्ति के सोलहवें भाग के बराबर भी नहीं हैं। सद्भावना—उनसे कहीं अधिक—चमकती है, दमकती है और चकाचौंध कर देती है।

" "जैसे रात्रि के अंतिम चरण में भोर का तारा चमकता है, दमकता है और चकाचौंध कर देता है, ठीक उसी प्रकार, स्वर्ग में स्वतः प्रकट होने की ओर ले जाने वाले पुण्य कर्मों के सभी आधार सद्भावना के माध्यम से प्राप्त चेतना-मुक्ति के सोलहवें भाग के बराबर भी नहीं हैं। सद्भावना—उनसे कहीं अधिक—चमकती है, दमकती है और चकाचौंध कर देती है।"

जब कोई व्यक्ति सचेतनता विकसित करता है—
असीम सद्भावना,
बेड़ियाँ घिस कर टूट गई हैं।
अंत देखकर
उपाधि (मानसिक अर्जितियों/गुणों) का।
यदि निर्मल मन से
आपको अच्छा लगेगा
यहां तक कि एक प्राणी के लिए भी,
इससे आप कुशल बन जाते हैं।
लेकिन एक नेक व्यक्ति पैदा करता है
सहानुभूतिपूर्ण मन
सभी प्राणियों के लिए,
गुणों की प्रचुरता।
राजसी द्रष्टाओं ने पृथ्वी पर विजय प्राप्त की
जीवों से भरा हुआ,
उन्होंने त्याग करना शुरू कर दिया:
अश्व बलि, मानव बलि,
जल अनुष्ठान, सोमा अनुष्ठान,
और "बाधा रहित,"
लेकिन ये बराबर नहीं हैं
एक सोलहवां
एक सुविकसित, सद्भावपूर्ण मन का—
क्योंकि सभी तारामंडल ऐसा नहीं करते हैं,
एक सोलहवां
चंद्रमा की चमक का।
जो न तो हत्या करता है
और न ही दूसरों को हत्या करने के लिए उकसाता है।
न ही कोई जीतता है,
और न ही दूसरों को जीत दिलाता है।
सभी प्राणियों के प्रति सद्भावना के साथ,
किसी से कोई शत्रुता नहीं रखता
बिल्कुल भी।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 28. दुक्खविहारसुत्तम
थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।

पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 27 <<<पिछला ॥ दो का अध्याय: इतिवुत्तक 28 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 29

28. दुःखविहारसुत्तम (दुख के कारण)
यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“हे भिक्षुओं, दो चीजों से युक्त होकर, भिक्षु वर्तमान जीवन में दुःख में रहता है—दुखी, दुःखमुक्त और बुखार से ग्रस्त—और मृत्यु के बाद शरीर के टूटने पर, एक बुरे गंतव्य की अपेक्षा की जा सकती है। वे दो चीजें क्या हैं? इंद्रियों के द्वारों की रक्षा न करना और भोजन में संयम न जानना। इन दो चीजों से युक्त होकर, भिक्षु वर्तमान जीवन में दुःख में रहता है—दुखी, दुःखमुक्त और बुखार से ग्रस्त—और मृत्यु के बाद शरीर के टूटने पर, एक बुरे गंतव्य की अपेक्षा की जा सकती है।”
आँख, कान और नाक जीभ, शरीर और मन:
जब कोई भिक्षु इन दरवाजों को बिना पहरे के छोड़ देता है
—खाने-पीने में संयम न जानने वाला,
अपनी इंद्रियों को नियंत्रित न करते हुए—
उसे पीड़ा का अनुभव होता है:
शरीर में पीड़ा, कष्ट
मन में।
शरीर में जलन,
मन में जल रही है,
चाहे दिन हो या रात,
इस तरह का एक
दुख और पीड़ा में जीवन व्यतीत करता है।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 29. सुखविहारसुत्तम
थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 28 <<<पिछला ॥ दो का अध्याय: इतिवुत्तक 29 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 30

29. सुखविहारसुत्तम (सुख):
यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:
“हे भिक्षुओं, दो गुणों से युक्त होकर भिक्षु वर्तमान जीवन में सहजता से रहता है—अविचलित, कष्टरहित और निर्बल—और मृत्यु के बाद शरीर के विखंडन पर, एक अच्छे गंतव्य की अपेक्षा की जा सकती है। वे दो गुण कौन से हैं? इंद्रियों के द्वारों की रक्षा करना और भोजन में संयम बरतना। इन दो गुणों से युक्त होकर भिक्षु वर्तमान जीवन में सहजता से रहता है—अविचलित, कष्टरहित और निर्बल—और मृत्यु के बाद शरीर के विखंडन पर, एक अच्छे गंतव्य की अपेक्षा की जा सकती है।”
आँख, कान और नाक जीभ, शरीर और मन:
जब कोई भिक्षु इन दरवाजों की अच्छी तरह से सुरक्षा करवाता है
भोजन में संयम का ज्ञान होना,
अपनी इंद्रियों को नियंत्रित करते हुए—
उसे सहजता का अनुभव होता है:
शरीर में सहजता, सहजता
मन में।
शरीर में जलन नहीं हो रही है।

मन में कोई जलन नहीं,
चाहे दिन हो या रात,
इस तरह का एक
आराम से जीवन व्यतीत करता है।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 30. तपनियासुत्तम
थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 29 <<<पिछला ‖ दो का अध्याय: इतिवुत्तक 30 ‖ अगला >>> इतिवुत्तक 31

30. तपनियासुत्तम (पाप की अग्नि में जलना)
यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:
"भिक्षुओं, पश्चाताप के दो कारण हैं। वे दो क्या हैं? एक वह व्यक्ति है जिसने प्रशंसनीय कार्य नहीं किया, कुशलता नहीं दिखाई, भय में डूबे लोगों की रक्षा नहीं की, बल्कि दुष्ट, बर्बर और क्रूर कार्य किया है। यह सोचकर कि 'मैंने प्रशंसनीय कार्य नहीं किया,' उसे पश्चाताप होता है। यह सोचकर कि 'मैंने दुष्ट कार्य किया है,' उसे पश्चाताप होता है। ये दो कारण पश्चाताप का कारण बनते हैं।"
संलग्न होने के बाद

शारीरिक दुर्व्यवहार में,

मौखिक दुर्व्यवहार,

मन का दुराचार,[1]

या जो भी अन्य त्रुटिपूर्ण हो,

कुशल कार्य न करने के कारण,

बहुत कुछ ऐसा करने के बाद जो उचित नहीं है,

शरीर के विखंडन के समय,

अविवेकी व्यक्ति पुनः प्रकट होता है

नरक।

नोट: 1. एएन 10:176 शारीरिक दुराचार को हत्या, चोरी और यौन दुराचार के रूप में परिभाषित करता है; मौखिक दुराचार को झूठ, फूट डालने वाली बातें, कठोर बातें और व्यर्थ की बकवास के रूप में; और मानसिक दुराचार को लोभ, द्वेष और गलत विचारों के रूप में परिभाषित करता है (संख्या 32 की टिप्पणी देखें)।
यह भी देखें: एएन 4:184
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 31. अतापनियासुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।

पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 30 <<<पिछला ‖ दो का अध्याय: इतिवुत्तक 31 ‖ अगला >>> इतिवुत्तक 32

31. अतापाणियसुत्तम (पाप की अग्नि में न जलना):

यह बात भगवान बुद्ध (भागवत) ने कही थी, अरहंत ने कही थी, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, दो ऐसी बातें हैं जिनसे पश्चाताप नहीं होता। वे कौन सी दो बातें हैं? एक वह व्यक्ति है जिसने प्रशंसनीय कार्य किया है, कुशलता से कार्य किया है, भयभीत लोगों की रक्षा की है, और कोई भी बुरा, बर्बर या क्रूर कार्य नहीं किया है। यह सोचकर कि 'मैंने प्रशंसनीय कार्य किया है,' उसे पश्चाताप नहीं होता। यह सोचकर कि 'मैंने बुरा कार्य नहीं किया है,' उसे पश्चाताप नहीं होता। ये दो बातें पश्चाताप का कारण नहीं बनतीं।"
त्यागने के बाद

शारीरिक दुर्व्यवहार,

मौखिक दुर्व्यवहार,

मानसिक दुराचार

और जो कुछ भी अन्य त्रुटिपूर्ण है,

जो कार्य कुशल नहीं है, उसे न करने के कारण,

बहुत कुछ करने के बाद,

शरीर के विखंडन के समय,

विवेकशील व्यक्ति पुनः प्रकट होता है

स्वर्ग में।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 32. पथमशिलासुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 31 <<<पिछला ‖ दो का अध्याय: इतिवुत्तक 32 ‖ अगला >>> इतिवुत्तक 33

32. पथमासिलसुत्तम (अनैतिकता नरक की ओर ले जाती है)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“हे भिक्षुओं, दो चीजों से युक्त व्यक्ति—मानो उठा ले जाया गया हो—इस प्रकार नरक में डाल दिया जाता है। वे दो चीजें क्या हैं? बुरी आदतें और बुरे विचार। इन दो चीजों से युक्त व्यक्ति—मानो उठा ले जाया गया हो—इस प्रकार नरक में डाल दिया जाता है।”
बुरी आदतें और

बुरे विचार: [1]

एक व्यक्ति, जो विवेकहीन हो।

इन दो चीजों से संपन्न,

शरीर के टूटने पर

नरक में पुनः प्रकट होता है।

नोट: 1. एमएन 22 एक बुरे दृष्टिकोण का निम्नलिखित उदाहरण देता है: “जैसा कि मैं भगवान बुद्ध द्वारा सिखाए गए धम्म को समझता हूँ, भगवान बुद्ध जिन कार्यों को बाधक कहते हैं, उनमें लिप्त होने पर वे वास्तव में बाधक नहीं होते।” एमएन 38 एक और उदाहरण देता है: “जैसा कि मैं भगवान बुद्ध द्वारा सिखाए गए धम्म को समझता हूँ, यह केवल यही चेतना है जो [जन्म-जन्म] चलती और भटकती रहती है, कोई और नहीं।”
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 33. दुतियासिलसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 32 <<<पिछला ॥ दो का अध्याय: इतिवुत्तक 33 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 34

33. दुतियाशीलसुत्तम (नैतिकता स्वर्ग की ओर ले जाती है)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“हे भिक्षुओं, दो गुणों से युक्त व्यक्ति—मानो उठाकर स्वर्ग में ले जाया गया हो—इस प्रकार स्वर्ग में पहुँच जाता है। वे दो गुण कौन से हैं? शुभ आदतें और शुभ विचार। इन दो गुणों से युक्त व्यक्ति—मानो उठाकर स्वर्ग में ले जाया गया हो—इस प्रकार स्वर्ग में पहुँच जाता है।”
शुभ आदतें और

शुभ दृश्य:

एक विवेकशील व्यक्ति

इन दो चीजों से संपन्न,

शरीर के टूटने पर

स्वर्ग में पुनः प्रकट होता है।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 34. अतपिसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 33 <<<पिछला ॥ दो का अध्याय: इतिवुत्तक 34 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 35

34. अतपिसुत्तम् (मार्ग में परिश्रम से ज्ञान प्राप्ति होती है)

यह बात भगवान बुद्ध (भागवत) ने कही है, अरहंत ने कही है, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, जो व्यक्ति उत्साह और पश्चाताप से रहित है, वह आत्म-जागृति, निर्वाण और बंधन से पूर्णतः मुक्ति प्राप्त करने में असमर्थ है। वहीं, जो व्यक्ति उत्साह और पश्चाताप से युक्त है, वह आत्म-जागृति, निर्वाण और बंधन से पूर्णतः मुक्ति प्राप्त करने में सक्षम है।”

बिना किसी उत्साह के, बिना

पश्चाताप,

आलसी, कम दृढ़ता वाला,

आलस्य और सुस्ती से भरा हुआ,

निर्लज्ज, सम्मानहीन:

वह असमर्थ है।

इस तरह का एक भिक्षु,

स्पर्श करने का अतिशयोक्तिपूर्ण

आत्मबोधि (सम्बोधि)।

लेकिन जो कोई भी ध्यान करता है, प्रयास करता है, निपुण होता है,

उत्साही, केंद्रित और सतर्क

जन्म और बुढ़ापे के बंधन को तोड़ते हुए,

ठीक यहीं स्पर्श करें

एक अद्वितीय आत्म-जागरूकता।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 35. पथमानकुहनसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 34 <<<पिछला ॥ दो का अध्याय: इतिवुत्तक 35 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 36

35. पथमनकुहनसुत्तम् (निर्वाण के लिए ब्रह्मचर्य और ध्यान का पवित्र मार्ग)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, यह पवित्र ब्रह्मचर्य जीवन लोगों को धोखा देने के लिए नहीं, लोगों को लुभाने के लिए नहीं, लाभ, भेंट और भेंट के पुरस्कारों के लिए नहीं, और न ही इस विचार से जिया जाता है कि 'इस प्रकार लोग मुझे जानें।' यह पवित्र ब्रह्मचर्य जीवन संयम और त्याग के लिए जिया जाता है।" भगवान ने ऐसा कहा, जो मैं आपको बताता हूँ:

इंद्रियों पर संयम बरतो।

ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत करें।

भगवान बुद्ध ने शिक्षा दी है,

एक पवित्र मार्ग, रुकने का मार्ग,

(जुनून/सुख)

के लिए अग्रणी

निर्वाण (मुक्ति/मोक्ष)।

इस मार्ग (मग्गा) का अनुसरण किया जाता है

महान उद्देश्य वाले लोगों द्वारा,

महान द्रष्टा।

जो लोग इसका अनुसरण करते हैं,

जैसा कि प्रबुद्ध व्यक्ति (बुद्ध) द्वारा सिखाया गया है,

गुरु के मार्ग का अनुसरण करते हुए,

अंत कर देगा

सभी प्रकार के कष्टों के लिए।

इस प्रकार प्रभु ने कहा, जिसे मैंने सुना।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 36. दुतियानाकुहनसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 35 <<<पिछला ॥ दो का अध्याय: इतिवुत्तक 36 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 37

36. दुतियानकुहनसुत्तम् (निर्वाण के लिए ब्रह्मचर्य और ध्यान का पवित्र मार्ग)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया था, अरहंत द्वारा कहा गया था, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, यह पवित्र ब्रह्मचर्य जीवन लोगों को धोखा देने के लिए नहीं, लोगों को लुभाने के लिए नहीं, लाभ, भेंट और भेंट के पुरस्कारों के लिए नहीं, और न ही इस विचार से जिया जाता है कि 'इस प्रकार लोग मुझे जान सकें।' यह पवित्र ब्रह्मचर्य जीवन प्रत्यक्ष ज्ञान[1] (अनुभवजन्य) और पारलौकिक ज्ञान[2] (भौतिक क्षेत्र से परे) के लिए जिया जाता है।" भगवान ने ऐसा कहा, जो मैं बताता हूँ:

प्रत्यक्ष ज्ञान के लिए और

पारलौकिक ज्ञान,

भगवान बुद्ध ने शिक्षा दी

एक पवित्र ब्रह्मचर्य जीवन,

रोकने का,

(जुनून/सुख)

के लिए अग्रणी

निर्वाण (मुक्ति/मोक्ष)।

इस मार्ग (मग्गा) का अनुसरण किया जाता है

महान उद्देश्य वाले लोगों द्वारा,

महान द्रष्टा।

जो लोग इसका अनुसरण करते हैं,

जैसा कि प्रबुद्ध व्यक्ति द्वारा सिखाया गया है,

शिक्षक के संदेश पर ध्यान देते हुए,

अंत कर देगा

सभी प्रकार के कष्टों के लिए।

इस प्रकार प्रभु ने कहा, जिसे मैंने सुना।

नोट: 1. प्रत्यक्ष ज्ञान = अभिजान। अभि (वर्तमान, प्रत्यक्ष) + जन (ज्ञान)। धर्मग्रंथ में अभिजान के छह प्रकार भी बताए गए हैं: मानसिक शक्तियाँ, श्रवण शक्ति, दूसरों के मन को पढ़ने की क्षमता, पूर्व जन्मों का स्मरण, दूरदर्शिता और सबसे महत्वपूर्ण - मानसिक आसवों (इच्छाओं/इच्छाओं) के अंत का ज्ञान।
2. पारलौकिक ज्ञान = परिजान। परि (पारलौकिक) + जन (ज्ञान)।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 37. सोमनस्ससुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 36 <<<पिछला ॥ दो का अध्याय: इतिवुत्तक 37 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 38

37. सोमनससुत्तम (मार्ग पर आवश्यक तत्परता और परिश्रम का भाव)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“दो गुणों से संपन्न, भिक्षु वर्तमान क्षण में सहजता से रहते हैं और आसवों (इच्छाओं/इच्छाओं) के अंत के लिए उचित रूप से प्रेरित होते हैं। वे दो गुण कौन से हैं? उन चीजों के प्रति तत्परता का भाव[1] जो तत्परता को प्रेरित करती हैं और तत्परता का अनुभव करते हुए, उचित परिश्रम। दो गुणों से संपन्न, भिक्षु वर्तमान क्षण में सहजता से रहते हैं और आसवों (इच्छाओं/इच्छाओं) के अंत के लिए उचित रूप से प्रेरित होते हैं।”
मुझे यहाँ तुरंत कार्रवाई करने की आवश्यकता महसूस हो रही है।

जिस ओर तत्परता की आवश्यकता होनी चाहिए,

समझदार,

उत्कृष्ट,

गहन ध्यान में लीन भिक्षु

जांच करनी चाहिए

प्रत्यक्ष समझ (पन्ना) के साथ।

जो व्यक्ति इस प्रकार उत्साहपूर्वक जीवन व्यतीत करता है,

बेचैन नहीं, बल्कि शांत।

जागरूकता और शांति के प्रति प्रतिबद्ध,

अंत तक पहुँच जाएगा

पीड़ा और कष्ट का।

नोट:

1. तात्कालिकता = संवेग। इस शब्द के अन्य अर्थों में विस्मय, सदमा, निराशा और अलगाव शामिल हैं। पाली कैनन में, यह भावना अक्सर भय और अत्यधिक खतरे से बचने की तीव्र आवश्यकता के साथ होती है। तात्कालिकता को प्रेरित करने वाली बातें एएन 5:57 में सूचीबद्ध पाँच चिंतनों में से पहले चार हैं: “मैं वृद्धावस्था के अधीन हूँ, वृद्धावस्था से परे नहीं गया हूँ। मैं रोग के अधीन हूँ, रोग से परे नहीं गया हूँ। मैं मृत्यु के अधीन हूँ, मृत्यु से परे नहीं गया हूँ। मैं भिन्न हो जाऊँगा, उन सभी चीजों से अलग हो जाऊँगा जो मुझे प्रिय और आकर्षक हैं।” उचित प्रयास पाँचवें चिंतन द्वारा इंगित किया गया है: “मैं कर्मों का स्वामी हूँ, कर्मों का उत्तराधिकारी हूँ, कर्मों से जन्मा हूँ, कर्मों के माध्यम से संबंधित हूँ, और कर्म ही मेरे मध्यस्थ हैं। मैं जो कुछ भी करता हूँ, अच्छा या बुरा, उसी का उत्तराधिकारी होऊंगा।”
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 38. वितक्कसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 37 <<<पिछला ‖ दो का अध्याय: इतिवुत्तक 38 ‖ अगला >>> इतिवुत्तक 39

38. वितक्कसुत्तम (अहिंसा से ही सुरक्षा प्राप्त होती है)

यह बात भगवान बुद्ध (भागवत) ने कही थी, अरहंत ने कहा था, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, योग्य और सही मायने में आत्म-जागृत तथागत (बुद्ध) के मन में अक्सर दो विचार आते हैं: सुरक्षा का विचार और एकांतवास का विचार। तथागत (बुद्ध) द्वेषहीनता का आनंद लेते हैं, द्वेषहीनता में प्रसन्न होते हैं। उनके मन में—द्वेषहीनता का आनंद लेते हुए, द्वेषहीनता में प्रसन्न होते हुए—अक्सर यह विचार आता है: 'इस कर्म से मैं किसी को भी हानि नहीं पहुँचाता, चाहे वह दुर्बल हो या दृढ़।' तथागत (बुद्ध) एकांतवास का आनंद लेते हैं, एकांतवास में प्रसन्न होते हैं। उनके मन में—एकांतवास का आनंद लेते हुए, एकांतवास में प्रसन्न होते हुए—अक्सर यह विचार आता है: 'जो कुछ भी अकुशल है, उसका त्याग कर दिया जाता है।' अतः, भिक्षुओं, आपको भी द्वेषहीनता का आनंद लेते हुए, द्वेषहीनता में प्रसन्न होते हुए जीवन व्यतीत करना चाहिए।” आपमें—जो द्वेषहीनता का आनंद लेते हैं, द्वेषहीनता में प्रसन्न होते हैं—अक्सर यह विचार आएगा: 'इस गतिविधि से हम किसी को भी हानि नहीं पहुँचाते, चाहे वह कमजोर हो या दृढ़।' आपको भी एकांत में रहकर, एकांत का आनंद लेते हुए जीवन व्यतीत करना चाहिए। आपमें, जो एकांत में रहकर, एकांत का आनंद लेते हैं—अक्सर यह विचार आएगा: 'क्या अकुशल है? क्या अभी तक त्यागा नहीं गया है? हम क्या त्याग रहे हैं?'
तथागत (बुद्ध) को,

जागृत,

जिन्होंने असहनीय पीड़ा सहन की।

दो विचार मन में आते हैं:

सुरक्षा सबसे पहला विचार था जिसका उल्लेख किया गया;

दूसरे ने एकांतवास की घोषणा की।

अंधकार को दूर करने वाला, मुक्त

आसव (चाहत/इच्छा) का

महान द्रष्टा

जो इससे आगे बढ़ चुका है,

उपलब्धि प्राप्त कर ली,

महारत हासिल कर ली,

जहरों को पार कर लिया;

क्रेविंग (तन्हा) के अंत में किसे रिहा किया जाता है:

वह ऋषि

उसका अंतिम शरीर धारण किए हुए है,

उसने मारा (मृत्युदेवता) से छुटकारा पा लिया है, मैं तुम्हें बताता हूँ।

यह उम्र बढ़ने की सीमा को पार कर चुका है।

जैसे कोई चट्टानी कगार पर खड़ा हो

नीचे चारों ओर लोगों को देख सकेंगे।

अतः बुद्धिमान व्यक्ति,

सर्वांगीण दृष्टि से,

टावर पर चढ़ने के बाद

धम्म से बना हुआ,

दुःख को पार कर लेने के बाद,

दुःख से व्याकुल लोगों पर निगाहें गड़ाए हुए,

वृद्धावस्था और मृत्यु से पराजित।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 39. देसनसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 38 <<<पिछला ‖ दो का अध्याय: इतिवुत्तक 39 ‖ अगला >>> इतिवुत्तक 40

39. देसनसुत्तम (बुराई को बुराई के रूप में देखकर वैराग्य और वैराग्य प्राप्त करना)

यह बात भगवान बुद्ध (भागवत) ने कही थी, अरहंत ने कही थी, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, तथागत (बुद्ध)—योग्य और सही मायने में आत्म-जागृत—ने क्रमानुसार दो धम्म प्रवचन दिए हैं। वे कौन से दो हैं? 'बुराई को बुराई के रूप में देखो।' यह पहला धम्म प्रवचन है। 'बुराई को बुराई के रूप में देखकर, वहीं पर वैराग्य और वैराग्य प्राप्त करो, वहीं पर मुक्त हो जाओ।' यह दूसरा धम्म प्रवचन है। ये दो धम्म प्रवचन हैं जो तथागत (बुद्ध)—योग्य और सही मायने में आत्म-जागृत—ने क्रमानुसार दिए हैं।”
दोनों कथनों को देखें,

क्रमानुसार घोषित,

तथागत (बुद्ध) द्वारा

जागृत, सहानुभूतिपूर्ण

सभी प्राणियों के लिए।

पहला: बुराई को पहचानना।

वहाँ निष्पक्ष रहें

बुराई की ओर।

फिर, एक तटस्थ मन से,

आप अंत कर देंगे

पीड़ा और कष्ट का।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 40. विज्जसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।

पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 39 <<<पिछला ॥ दो का अध्याय: इतिवुत्तक 40 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 41

40. विजयसुत्तम (ज्ञान और जागरूकता)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया था, अरहंत द्वारा कहा गया था, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, अज्ञान (अविज्जा)[1] अकुशल गुणों के आगमन से पहले आता है; लज्जा का अभाव और पश्चाताप का अभाव[2] इसके बाद आते हैं। स्पष्ट ज्ञान कुशल गुणों के आगमन से पहले आता है; लज्जा और पश्चाताप इसके बाद आते हैं।"

कोई भी खराब गंतव्य

इस दुनिया में, अगली दुनिया में,

ये सभी अज्ञान (अविज्जा) में निहित हैं।

संचय

इच्छा और लोभ का।

और जब कोई व्यक्ति बुरी इच्छाएं रखता है

शर्म और सम्मान का अभाव है।

बुराई उसी से उत्पन्न होती है।

और वह इस तरह चला जाता है

अभाव की ओर।

इसलिए सफाई करना

अज्ञान (अविज्जा), इच्छा और लोभ

एक भिक्षु जो स्पष्ट ज्ञान को जन्म देता है

सभी बुरे गंतव्यों को छोड़ देंगे।

टिप्पणी:
1. अज्ञान (अविज्जा) का अर्थ है दुख, उसके उद्गम, उसके निवारण और निवारण के मार्ग का अज्ञान।
2. लज्जा (हिरी) का अर्थ है बुराई करने के विचार से उत्पन्न आत्मसम्मान से प्रेरित स्वस्थ लज्जा
। पश्चाताप (ओत्तप्पा) का अर्थ है बुराई करने के परिणामों का भय।

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 40 <<<पिछला || दो का अध्याय: इतिवुत्तक 41 || अगला >>> इतिवुत्तक 42

41. पन्नापरिहीनसुत्तम (प्रत्यक्ष ज्ञान का अभाव):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, वे प्राणी वास्तव में वंचित हैं जो श्रेष्ठ प्रत्यक्ष ज्ञान (पन्न) से वंचित हैं। वे वर्तमान जीवन में कष्ट में रहते हैं—दुखी, निर्धन और बुखार से ग्रस्त—और मृत्यु के बाद शरीर के टूटने पर, एक बुरे गंतव्य की अपेक्षा की जा सकती है। "वे प्राणी वंचित नहीं हैं जो श्रेष्ठ प्रत्यक्ष ज्ञान (पन्न) से वंचित नहीं हैं। वे वर्तमान जीवन में आराम से रहते हैं—दुखी, निर्धन और बुखार से मुक्त—और मृत्यु के बाद शरीर के टूटने पर, एक अच्छे गंतव्य की अपेक्षा की जा सकती है।"
दुनिया को देखो

इसमें इसके दिव्य प्राणी भी शामिल हैं:

प्रत्यक्ष ज्ञान से वंचित (पन्ना),

नाम और रूप में निवास स्थान बनाना,

यह मानता है कि 'यही सत्य है।'

दुनिया में सर्वश्रेष्ठ प्रत्यक्ष समझ (पन्ना)

यही वह चीज है जो आगे ले जाती है

प्रवेश के लिए,

क्योंकि यह सही ढंग से पहचान करता है

जन्म और विकास (भाव) का पूर्ण अंत।

मनुष्य और दिव्य प्राणी

उन्हें प्रिय समझें:

जो स्वयं जागृत हैं,

ध्यानमग्न (ध्यान में),

उनके अंतिम शरीरों को ले जाते हुए

आनंदमय प्रत्यक्ष-समझ (पन्ना) के साथ।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 42. सुक्कधम्मसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 41 <<<पिछला ‖ दो का अध्याय: इतिवुत्तक 42 ‖ अगला >>> इतिवुत्तक 43

42. सुक्कधम्मसुत्तम (शर्म और ब्रह्मचर्य का महत्व)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, ये दो उज्ज्वल गुण संसार की रक्षा करते हैं। वे दो कौन से हैं? शर्म और संयम। यदि ये दो उज्ज्वल गुण संसार की रक्षा न करते, तो "माता," "मौसी," "चाचा की पत्नी," "गुरु की पत्नी," या "सम्मान के योग्य पुरुषों की पत्नी" का भेद नहीं हो पाता। संसार व्यभिचार में डूब जाता, जैसे भेड़ें बकरियों के साथ, मुर्गे सूअरों के साथ, या कुत्ते सियार के साथ। परन्तु क्योंकि ये दो उज्ज्वल गुण संसार की रक्षा करते हैं, इसलिए "माता," "मौसी," "चाचा की पत्नी," "गुरु की पत्नी," और "सम्मान के योग्य पुरुषों की पत्नी" का भेद संभव है।"
जिनमें

शर्म और संकोच

हमेशा नहीं पाए जाते

भटक गए हैं

चमकीली जड़ से,

आगे बढ़ रहे हैं

जन्म और मृत्यु तक।

लेकिन जिनमें

शर्म और संकोच

हमेशा सही ढंग से स्थापित होते हैं,

जो पवित्र ब्रह्मचर्य जीवन में परिपक्व हो चुके हैं:

वे शांत हैं।

उनका आगे का विकास (पुनर्जन्म)

सड़ गया।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 43. अजातसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 42 <<<पिछला ॥ दो का अध्याय: इतिवुत्तक 43 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 44

43. अजातसुत्तम् (एक पवित्र, निर्मल, दुःखरहित अवस्था है)

यह बात भगवान बुद्ध (भागवत) ने कही थी, अरहंत ने कही थी, जैसा कि मैंने सुना है:

"हे भिक्षुओं, एक अजन्मा[1] है—जो अजन्मा है—अनिर्मित है—अव्यक्त है। यदि वह अजन्मा—अजन्मा—अव्यक्त—अव्यक्त न होता, तो जन्म—जन्म—निर्मित—निर्मित से मुक्ति का ज्ञान न होता। परन्तु अजन्मा—अजन्मा—अव्यक्त—अव्यक्त होने के कारण ही जन्म—जन्म—निर्मित—निर्मित से मुक्ति का ज्ञान होता है।"
जन्म लेना, बनना, उत्पन्न होना,

निर्मित, गढ़ा हुआ, अस्थायी,

वृद्धावस्था और मृत्यु से निर्मित,

बीमारियों का एक घोंसला, नष्ट हो रहा है,

पोषण के माध्यम से अस्तित्व में आना

और वह मार्गदर्शक [जो लालसा करता है]—

आनंद के लिए अनुपयुक्त है।

उससे मुक्ति

है

शांतिपूर्ण, स्थायी,

एक ऐसा क्षेत्र जो अनुमानों से परे है,

अजन्मा, अउत्पादित,

दुःख रहित, निष्कलंक अवस्था,

कष्टदायी गुणों का अंत,

विचारों की शांति से मिलने वाला आनंद।

नोट:
1. कुछ विद्वानों का तर्क है कि “अजन्मा” शब्द का प्रयोग निर्वाण और पुनर्जन्म में अंतर करने के लिए नहीं किया जा सकता, क्योंकि कुछ प्रवचन (जैसे कि SN 15:3) यह कहते हैं कि पुनर्जन्म का कोई आरंभ बिंदु नहीं है, जिसका अर्थ है कि यह भी अजन्मा है। इसलिए उनका तर्क है कि इस अंश में ‘अजातम’ शब्द, यद्यपि भूतकालिक कृदंत है, का अनुवाद “जन्म रहित” होना चाहिए। हालांकि, यह तर्क दो संदिग्ध आधारों पर आधारित है। पहला, यह मान लेता है कि निर्वाण की तुलना यहाँ पुनर्जन्म से की जा रही है, जबकि अंश में केवल इसकी तुलना गढ़ी हुई चीज़ से की गई है। दूसरा, यदि यह मान भी लिया जाए कि “जन्म लेने वाला—बनने वाला”, आदि वाक्यांश पुनर्जन्म का संदर्भ है, तो भी विद्वानों का तर्क SN 15:3 की गलत व्याख्या पर आधारित है। वहाँ पुनर्जन्म का आरंभ बिंदु “अकल्पनीय” या “अज्ञात” बताया गया है। यह कहना कि यह अजन्मा है, इससे बहुत भिन्न है। यदि पुनर्जन्म अजन्मा होता, तो वह अकल्पनीय होता (देखें एएन 3:47), जो स्पष्ट रूप से सत्य नहीं है। अतः, इस शब्द का अनुवाद करते समय, मैंने "अजन्मा" शब्द को ही व्याकरणिक रूप से सत्य माना है।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 44. निब्बानधातुसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 43 <<<पिछला ‖ दो का अध्याय: इतिवुत्तक 44 ‖ अगला >>> इतिवुत्तक 45

44. निर्वाण/निर्वाण क्या है?

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, निर्वाण के दो रूप हैं। वे कौन से दो हैं? शेष ईंधन के साथ निर्वाण, और शेष ईंधन के बिना निर्वाण।

और शेष ईंधन के साथ निर्वाण क्या है? एक ऐसा मामला है जहां एक भिक्षु अरहंत है जिसके आसव (इच्छाएं/इच्छाएं) क्षीण हो गए हैं, जिसने पूर्णता प्राप्त कर ली है, कार्य पूरा कर लिया है, बोझ उतार दिया है, सच्चे लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है, होने के बंधन (भाव) को नष्ट कर दिया है, और सही दिव्य जागृति के माध्यम से मुक्त हो गया है। उसकी पांच इंद्रियां अभी भी बनी हुई हैं और, उनके अक्षुण्ण होने के कारण, वह सुख और दुख का अनुभव करता है, और सुख और दुख के प्रति संवेदनशील है। उसके राग, घृणा और भ्रम का अंत शेष ईंधन के साथ निर्वाण कहलाता है।[1]

और क्या है? निर्वाह की मुक्ति (निब्बान) का वह रूप जिसमें कोई ईंधन शेष नहीं रहता? एक ऐसा मामला है जहाँ एक भिक्षु अरहंत है जिसके आसव (इच्छाएँ/इच्छाएँ) क्षीण हो गए हैं, जिसने पूर्णता प्राप्त कर ली है, कार्य पूरा कर लिया है, बोझ उतार दिया है, सच्चे लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है, होने के बंधन (भाव) को तोड़ दिया है, और सही दिव्य जागृति के माध्यम से मुक्त हो गया है। उसके लिए, जो कुछ भी इंद्रियों द्वारा अनुभव किया जाता है, वह आनंदहीन होकर यहीं ठंडा पड़ जाएगा।
इसे निर्वाह की मुक्ति का रूप कहा जाता है।

इन दोनों ने घोषणा की

दूरदर्शी व्यक्ति द्वारा,

निर्वाण (मुक्ति) के गुण एक स्वतंत्र हैं,

जो ऐसा है: [2]

इस जीवन में, एक ही संपत्ति है।

शेष ईंधन के साथ

[लालसा] के विनाश से,

भाव बनने की मार्गदर्शिका

और वह भी बिना ईंधन बचे,

इस जीवन के बाद,

जिसमें सभी भाव (भाव) बन जाते हैं

पूरी तरह से बंद हो जाता है।

जो लोग जानते हैं

यह अस्वाभाविक अवस्था,

उनके दिमाग मुक्त हो गए

[लालसा] के विनाश के माध्यम से,

बनने के लिए मार्गदर्शिका,

वे धम्म के सार को प्राप्त करके,

अंत में आनंद लेना,[3]

उन्होंने सभी प्रकार के विकास को त्याग दिया है:

वे, ऐसे।

टिप्पणी

1. ईंधन शेष (सा-उपादिशेष) और ईंधन न शेष (अनुपादिशेष): यहाँ उपमा आग से दी गई है। पहले मामले में, लपटें बुझ चुकी हैं, लेकिन अंगारे अभी भी सुलग रहे हैं। दूसरे में, आग इतनी पूरी तरह बुझ चुकी है कि अंगारे ठंडे पड़ गए हैं। यहाँ "ईंधन" पाँच स्कंद (खंड: रूप, भावनाएँ (संवेदनाएँ), बोध, विचार और चेतना: शब्दावली देखें) हैं। जब तक अरहंत जीवित रहता है, वह पाँच स्कंदों का अनुभव करता है, लेकिन वे राग, घृणा या भ्रम की आग से नहीं जलते। अरहंत के देहांत होने पर, यहाँ या कहीं और स्कंदों का कोई अनुभव नहीं रहता।
2. ऐसा (तदिन): यह विशेषण उस व्यक्ति का वर्णन करने के लिए प्रयोग किया जाता है जिसने लक्ष्य प्राप्त कर लिया है। यह इंगित करता है कि व्यक्ति की स्थिति अवर्णनीय है और किसी भी प्रकार के परिवर्तन या प्रभाव के अधीन नहीं है।
3. बर्मी और पीटीएस संस्करणों में दिए गए पाठ के अनुसार: धम्म-सरदिगामा खाये राता। थाई संस्करण में लिखा है, धम्म-सरदिगामाक्खाये राता—धम्म के सार की प्राप्ति के अंत में आनंदित होना—जो तर्कसंगत नहीं है।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 45. पतिसल्लनसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 44 <<<पिछला || दो का अध्याय: इतिवुत्तक 45 || अगला >>> इतिवुत्तक 46

45. पतिसलानसुत्तम (वैराग्य):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, वैराग्य का आनंद लेते हुए, वैराग्य में प्रसन्नता पाते हुए, आंतरिक रूप से सजगता-शांति के प्रति समर्पित होकर, ध्यान (झान) का उपशामक न होकर, स्पष्ट दृष्टि से संपन्न होकर और एकांत भवनों में बार-बार जाकर जीवन व्यतीत करो। जब तुम वैराग्य का आनंद लेते हुए, वैराग्य में प्रसन्नता पाते हुए, आंतरिक रूप से सजगता-शांति के प्रति समर्पित होकर, ध्यान (झान) का उपशामक न होकर, स्पष्ट दृष्टि से संपन्न होकर और एकांत भवनों में बार-बार जाकर जीवन व्यतीत करोगे, तो दो फलों में से एक की अपेक्षा की जा सकती है: या तो इसी क्षण दिव्य जागृति, या—यदि आसक्ति-पोषण का कोई अंश शेष हो—तो पुनर्जन्म न होना।”
शांत मन वाले लोग—

उत्कृष्ट,

ध्यानमग्न

ध्यान (सम्मोहन) में लीन—

धम्म को सही ढंग से स्पष्ट रूप से समझें,

कामुक सुखों में लिप्त न होना।

सतर्कता में आनंद लेते हुए,

शांत,

आलस्य में खतरा देखकर, वे

—जो दूर नहीं जा सकता—

वे निर्वाण (मुक्ति) की उपस्थिति में सही हैं।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 46. सिक्खनिसम्ससुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 45 <<<पिछला ॥ दो का अध्याय: इतिवुत्तक 46 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 47

46. सिक्खनिसंसासुत्तम् (अनुसरण योग्य प्रशिक्षण):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, उच्चतर सद्‌गुण, उच्चतर मन और उच्चतर प्रत्यक्ष-ज्ञान (पन्ना) के प्रशिक्षणों को अपने पुरस्कार के रूप में ग्रहण करो, प्रत्यक्ष-ज्ञान (पन्ना) को सर्वोपरि रखते हुए, सार (मोक्ष) को मुक्त करो, और सजगता को मार्गदर्शक सिद्धांत मानो। जब आप प्रशिक्षणों को अपने पुरस्कार के रूप में ग्रहण करते हैं, प्रत्यक्ष अनुभवात्मक ज्ञान (पन्ना) को सर्वोपरि रखते हुए, सार (मोक्ष) को मुक्त करते हैं, और सजगता को मार्गदर्शक सिद्धांत मानते हैं, तो दो फलों में से एक की अपेक्षा की जा सकती है: या तो इसी क्षण में दिव्य जागृति, या—यदि आसक्ति-पोषण का कोई अंश शेष रहे तो अप्रतिदेयता।"
प्रशिक्षण पूरा करें,

पतन के अधीन नहीं,[1]

प्रत्यक्ष अनुभवजन्य ज्ञान (पन्ना) प्राप्त करने वाला व्यक्ति

सबसे ऊपर,

जन्म के रुकने, उसके अंत को देखना:

वह ऋषि

उसका अंतिम शरीर धारण किए हुए है,

उसने मारा (मृत्युदेवता) से छुटकारा पा लिया है, मैं तुम्हें बताता हूँ।

यह उम्र बढ़ने की सीमा को पार कर चुका है।

तो, हमेशा

ध्यान में आनंदित होना,

केंद्रित (समाधि की अवस्था में),

उत्साही (प्रयास करते हुए),

पुनर्जन्म के रुकने, उसके अंत को देखकर,

मारा (राक्षस) और उसकी सेनाओं पर विजय प्राप्त करना,[2]

भिक्षुओं,

बुढ़ापे और मृत्यु से परे, विदा हो जाओ।

टिप्पणी:
1. श्रीलंका के एक संस्करण में पाया गया पाठ: अपरिहाना-धम्मम है। थाई, बर्मी और एक अन्य श्रीलंकाई संस्करण में अपहाना-धम्मम है, जिसका अर्थ है "त्याग के अधीन नहीं", जो छंद के अनुकूल तो है, लेकिन श्लोक के अर्थ से मेल नहीं खाता। टीका अधिक प्रचलित पाठ का अर्थ "भटकने के अधीन नहीं" बताती है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं करती कि ऐसा कैसे हो सकता है।
2. सं. 3:2 में मारा (शैतान) की सेनाओं को इस प्रकार पहचाना गया है: कामुक वासनाएँ; असंतोष; भूख और प्यास; लालसा; आलस्य और सुस्ती; आतंक; अनिश्चितता; पाखंड और हठ; लाभ, भेंट, प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा; और स्वयं की प्रशंसा करते हुए दूसरों को नीचा दिखाने का रवैया।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 47. जगरियासुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 46 <<<पिछला॥ दो का अध्याय: इतिवुत्तक 47॥ अगला >>> इतिवुत्तक 48

47. जागृति सूत्र (जागरूकता):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, एक भिक्षु को जागृत रहना चाहिए: ध्यान में एकाग्र, पूर्णतः सतर्क, समाधि में केंद्रित, आनंदित, सतर्क (विपश्यना) और उचित समय पर लाभकारी धर्म में शांत रहना चाहिए। और वहां उसे उचित समय पर, कुशल मानसिक गुणों में अंतर्दृष्टिपूर्ण रूप से सतर्क (विपश्यना) रहना चाहिए। जो भिक्षु जागृत है—ध्यान में एकाग्र, पूर्णतः सतर्क, समाधि में केंद्रित, आनंदित, सतर्क (विपश्यना) और उचित समय पर लाभकारी धर्म में शांत, कुशल मानसिक गुणों में—उसके लिए दो फलों में से एक की अपेक्षा की जा सकती है: या तो इसी क्षण दिव्य जागृति, या—यदि आसक्ति-पोषण का कोई अवशेष हो—तो पुनर्जन्म नहीं।”
जो लोग जागरूक हैं, वे इसे ध्यान से सुनें!

जो सो रहे हैं, जाग जाओ!

नींद से बेहतर जागना है।

जो लोग जागरूक हैं,

कोई खतरा नहीं, कोई डर नहीं।

जो कोई भी जागृत है,

ध्यानमग्न

पूरी तरह सतर्क,

समाधि की अवस्था में केंद्रित,

आनंदित, सतर्क (विपस्सनो),

एवं कल्याणकारी धर्म में शांत रहना,

उचित समय पर,

वह (अतींद्रिय के साथ) एकात्म हो जाने पर

अंधकार को चीर सकता है।

इसलिए जागरूकता के प्रति समर्पित रहें।

उत्साही, परिश्रमी भिक्षु

— निपुण, ध्यान (सम्मोहन) की अवस्था प्राप्त करना,

पुनर्जन्म और वृद्धावस्था के बंधन को तोड़ना—

ठीक यहीं स्पर्श करें

अद्वितीय आत्मबोध (समबोधि)।

टिप्पणी:
विपश्यना/विपस्सिनो/विपसन्नास्सा - अंतर्दृष्टिपूर्ण सतर्कता (समभाव के साथ)। यह बुद्ध द्वारा सिखाई गई 'विपश्यना' नामक अंतर्दृष्टिपूर्ण ध्यान विधि को संदर्भित करता है, जिसमें व्यक्ति को आंतरिक घटनाओं (शरीर+मन+भावनाएँ+संवेदनाएँ) को अनासक्ति (समभाव/समभाव) के साथ देखना होता है, जिससे उसे शांति, आत्म-जागरूकता और ज्ञान की प्राप्ति होती है।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 48. अपायिकासुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 47 <<<पिछला ॥ दो का अध्याय: इतिवुत्तक 48 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 49

48. अपयिकसुत्तम (ब्रह्मचर्य न मानने से नरक होता है)

यह बात भगवान बुद्ध (भागवत) ने कही थी, अरहंत ने भी यही कहा है, जैसा मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, ये दो लोग अपने आचरण का त्याग न करने के कारण नरक में जाने के लिए अभिशप्त हैं। वे कौन से दो हैं? एक वह जो ब्रह्मचर्य का पालन न करते हुए ब्रह्मचर्य का पालन करने का दिखावा करता है; और दूसरा वह जो पूर्णतः ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले पर बिना किसी आधार के ब्रह्मचर्य का पालन न करने का आरोप लगाता है। ये दो लोग अपने आचरण का त्याग न करने के कारण नरक में जाने के लिए अभिशप्त हैं।”
वह नरक में जाता है।

जो दावा करता है

जो घटित नहीं हुआ,

जैसा कि वह भी करता है

जिसने ऐसा करने के बाद,

वह कहता है, 'मैंने नहीं किया।'

दोनों—कम अभिनय क्षमता वाले लोग—

वहाँ बराबर हो जाते हैं:

मृत्यु के बाद, परलोक में।

उनके गले में गेरू रंग का वस्त्र बंधा हुआ था।

कई लोगों में बुरे गुण होते हैं

बेलगाम, दुष्ट

उनके बुरे कर्मों के कारण, वे पुनः उत्पन्न हो जाते हैं।

नरक में।

लोहे की गेंद खाना बेहतर है

—चमकते हुए, जलते हुए—

इससे भी बढ़कर, सिद्धांतहीन और

अनियंत्रित,

तुम्हें देश की भीख खानी चाहिए।

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 48 <<<पिछला ॥ दो का अध्याय: इतिवुत्तक 49 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 50

49. दित्थिगतसुत्तम् (दार्शनिक दृष्टिकोणों का दोष)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"दो दृष्टिकोणों से अभिभूत होकर, हे भिक्षुओं, कुछ मनुष्य और दैवीय प्राणी पालन करते हैं, अन्य मनुष्य और दैवीय प्राणी इससे भटक जाते हैं, जबकि दूरदृष्टि वाले देखते हैं।
"और कुछ कैसे पालन करते हैं? मनुष्य और दैवीय प्राणी होने (भाव) का आनंद लेते हैं, होने (भाव) में प्रसन्न होते हैं, होने (भाव) से संतुष्ट होते हैं। जब धम्म का उपदेश होने (भाव) के निवारण के लिए दिया जाता है, तो उनका मन इसे ग्रहण नहीं करता, इससे शांत नहीं होता, इस पर स्थिर नहीं होता या इस पर दृढ़ संकल्पित नहीं होता। इस प्रकार कुछ लोग पालन करते हैं।"

"और कुछ लोग कैसे बच निकलते हैं? कुछ लोग, उस भाव से भयभीत, अपमानित और घृणाग्रस्त होकर, अस्तित्वहीनता में आनंदित होते हैं: 'जब यह आत्मा, मृत्यु के बाद शरीर के विखंडन पर, नष्ट हो जाती है और मृत्यु के बाद अस्तित्वहीन हो जाती है, तो वह शांति है, वह उत्कृष्टता है, वह पूर्णता है!' इस प्रकार कुछ लोग बच निकलते हैं।

"और दूरदर्शी कैसे देखते हैं? एक उदाहरण है जहाँ एक भिक्षु जो कुछ भी हुआ है उसे उसी रूप में देखता है। जो कुछ भी हुआ है उसे उसी रूप में देखकर, वह उसके प्रति अनासक्ति, उसके प्रति वैराग्य और उसके अंत का अभ्यास करता है। इस प्रकार दूरदर्शी देखते हैं।"
जिन्होंने देखा है

जो हो गया है

जैसा कि अब हो रहा है,

और जो कुछ उससे आगे बढ़ गया है

जो कुछ हुआ है,

क्रम से जारी किए जाते हैं

जो कुछ हो चुका है, उसके साथ

लालसा (तन्हा) की समाप्ति के माध्यम से

(भाव) बनने के लिए।

अगर उन्हें समझ आ गया है

जो कुछ हुआ है,

और लालसा (तन्हा) से मुक्त हैं।

बनने और न बनने के लिए,

अनुपयुक्त के साथ

जो कुछ भी हो चुका है,

भिक्षु आते हैं

आगे और न बनने की स्थिति (भाव)।

नोट: 1. यह प्रवचन तकनीकी रूप से उचित ध्यान के कार्य को दर्शाता है, जैसा कि क्रमांक 16 के नोट में समझाया गया है। एसएन 12:15 इसी बिंदु को एक अलग दृष्टिकोण से प्रस्तुत करता है: “यह संसार अस्तित्व और गैर-अस्तित्व की ध्रुवीयता को अपना विषय बनाता है। लेकिन जब कोई सही प्रत्यक्ष अनुभवात्मक ज्ञान (पन्ना) के साथ संसार की उत्पत्ति (यानी छह इंद्रियों और उनके विषयों) को देखता है, तो संसार के संदर्भ में 'गैर-अस्तित्व' का विचार मन में नहीं आता। जब कोई सही प्रत्यक्ष अनुभवात्मक ज्ञान (पन्ना) के साथ संसार के अंत को देखता है, तो संसार के संदर्भ में 'अस्तित्व' का विचार मन में नहीं आता। कुल मिलाकर, यह संसार आसक्ति, मोह और पूर्वाग्रहों के बंधन में है। लेकिन ऐसा व्यक्ति इन आसक्ति, मोह, जागरूकता की स्थिरता, पूर्वाग्रहों या जुनूनों में संलग्न नहीं होता है और न ही इनसे चिपका रहता है; न ही वह 'मैं' पर केंद्रित होता है।” उन्हें इस बात का कोई संदेह या शंका नहीं है कि दुख उत्पन्न होने पर उत्पन्न होता है; दुख समाप्त होने पर समाप्त हो जाता है। इस मामले में उनका ज्ञान दूसरों से स्वतंत्र है। कच्छायन, सही दृष्टिकोण इसी हद तक है।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 50. मूलसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 49 <<<पिछला॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 50॥ अगला >>> इतिवुत्तक 51

50. मूलसुत्तम (असुरक्षा के मूल)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, असुरक्षा के ये तीन मूल हैं। वे तीन कौन से हैं? असुरक्षा का मूल लोभ है, असुरक्षा का मूल घृणा है, असुरक्षा का मूल मोह है। ये असुरक्षा के तीन मूल हैं।”
लोभ, घृणा और भ्रम विनाश करते हैं।

वही दुष्ट मानसिकता वाला व्यक्ति

जिनसे वे पैदा हुए हैं,

फलने-फूलने की तरह

बांस का।

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 50 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 51 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 52

51. धातुसुत्तम (अमरता के गुण)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया था, अरहंत द्वारा कहा गया था, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, ये तीन गुण हैं। कौन से तीन? रूप का गुण, निराकार का गुण, और निर्वाह का गुण। [1] ये तीन गुण हैं।”
रूप के गुण को समझना,

निराकार में कोई रुख न अपनाना,

निरोध में रिहा किए गए लोग

ये वे लोग हैं जिन्होंने मृत्यु को पीछे छोड़ दिया है।

अपने शरीर से स्पर्श करने के बाद

अमरता

संपत्ति मुक्त

उपाधि (मानसिक अर्जितियों/गुणों) से,

त्याग का अहसास होने पर

उपाधि का,

असावा (चाहत/इच्छा)-मुक्त,

सही

स्वयंजागृत व्यक्ति (बुद्ध)

राज्य को सिखाता है

बिना किसी दुःख के,

धूल नहीं।

नोट: 1. रूप का गुणधर्म, ध्यान (ध्यानमग्न अवस्था) के प्रथम चार स्तरों में उपस्थित शरीर के रूप के अनुभव से संबंधित है। निराकार का गुणधर्म, ध्यान (ध्यानमग्न अवस्था) के चौथे स्तर पर आधारित निराकार अनुभवों से संबंधित है: अनंत अंतरिक्ष का आयाम, अनंत चेतना का आयाम, शून्यता का आयाम और न तो बोध और न ही अबोध का आयाम। दुख के पूर्ण निवारण (केंद्रीय आत्म-जागरूकता) का गुणधर्म दुख के पूर्ण निवारण का अनुभव है।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 52. पथमवेदानसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 51 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 52 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 53

52. पथमावेदनासुत्तम (तीन प्रकार की संवेदनाएँ):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, ये तीन संवेदनाएँ हैं। कौन सी तीन? सुख की संवेदना, दुख की संवेदना, और न सुख न दुख की संवेदना। ये तीन भावनाएँ हैं।"
समाधि की अवस्था में,

पूर्णतः जागरूक (स्वयं के भीतर),

केंद्रित,

बुद्ध का

शिष्य

संवेदनाओं को पहचानता है,

संवेदनाएं किस प्रकार भूमिका निभाती हैं,

जहां वे समाप्त हो जाते हैं,

और उनके अंत का मार्ग।

संवेदनाओं के अंत के साथ, एक भिक्षु

इच्छा से मुक्त

पूर्णतया बंधनमुक्त (निर्वाण प्राप्त)।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 53. दुतियावेदनासुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 52 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 53 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 54

53. दुतियावेदनसुत्तम् (ध्यान में संवेदनाओं को कैसे देखें)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, ये तीन संवेदनाएँ हैं। कौन सी तीन? सुख की संवेदना, दुख की संवेदना, और न सुख की संवेदना।

(1) सुख की संवेदना को दुखदायी समझना चाहिए।

(2) दुख की संवेदना को तीर के समान समझना चाहिए।

(3) न सुख की संवेदना को अस्थिर समझना चाहिए।

जब कोई भिक्षु सुख की संवेदना को दुखदायी, दुख की संवेदना को तीर के समान और न सुख की संवेदना को अस्थिर समझता है, तब वह श्रेष्ठ, सही दृष्टि वाला, तृष्णा (तन्हा) का नाश करने वाला, बंधनों को तोड़ने वाला और अहंकार को सही ढंग से तोड़कर दुख और पीड़ा का अंत करने वाला भिक्षु कहलाता है।"
जो भी देखता है

सुख ही दुख है,

दर्द को तीर की तरह देखता है,

शांति को न तो सुख दिखता है और न ही दुख

अस्थिर के रूप में:

वह एक भिक्षु है

जो समभाव से देखा जाता है।

उसे वहाँ से रिहा कर दिया गया।

प्रत्यक्ष ज्ञान का उस्ताद,

शांति में, (एक योगी),

वह एक ऋषि हैं

बंधनों से परे चला गया।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 54. पथमेसनसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 53 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 54 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 55

54. पथमेसनसुत्तम (खोज प्रवृत्ति का अंत)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया था, अरहंत द्वारा कहा गया था, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, ये तीन खोजें (एस्ना) हैं। कौन सी तीन? कामुकता की खोज, भव की खोज, और ब्रह्मचर्य जीवन की खोज। ये तीन खोजें हैं।"
केंद्रित (समाधि की अवस्था में),

पूर्णतः जागरूक (स्वयं के भीतर),

एकाग्रचित्त (ध्यान में),

बुद्ध का

शिष्य

खोजों को पहचानता है,

खोज किस प्रकार भूमिका निभाती है,

जहां वे समाप्त हो जाते हैं,

और उनके अंत का मार्ग।

खोज समाप्त होने के साथ ही, एक भिक्षु

इच्छा से मुक्त

पूर्णतया बंधनमुक्त (निर्वाण प्राप्त)।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 55. दुतियासनसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 54 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 55 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 56

55. दुतियाएशनसुत्तम (तीन प्रकार की खोज प्रवृत्तियाँ)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, ये तीन खोजें हैं। कौन सी तीन? कामुकता की खोज, भाव की खोज, और ब्रह्मचर्य जीवन की खोज। ये तीन खोजें हैं।”
इंद्रिय-खोज, विकास-खोज,

पवित्र ब्रह्मचर्य जीवन की खोज के साथ-साथ—

यानी, सत्य को हथियाने की कोशिश करना

संचय के आधार पर

दृष्टिकोणों के बारे में:

खोजों को त्यागने के माध्यम से

और (दार्शनिक) दृष्टिकोणों का उन्मूलन

किसी निष्पक्ष व्यक्ति का

सभी जुनून (राग),

और अंत में जारी किया गया

लालसा (तन्हा) की

खोजों के अंत के माध्यम से, भिक्षु

बिना उलझन के, मुक्त

लालसा की।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 56. पथमासावसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 55 <<<पिछला॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 56॥ अगला >>> इतिवुत्तक 57

56. पथमासवसुत्तम (तीन प्रकार की इच्छाएँ/इच्छाएँ):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, ये तीन आसव (इच्छाएँ/इच्छाएँ) हैं। कौन से तीन? कामुकता का आसव, भाव का आसव, अज्ञान का आसव (अविज्ज)। ये तीन आसव (इच्छाएँ/इच्छाएँ) हैं।”
केंद्रित (समाधि की अवस्था में),

पूर्णतः जागरूक (स्वयं के भीतर),

एकाग्रचित्त (ध्यान में),

बुद्ध का

शिष्य

आसवों (इच्छाओं/इच्छाओं) को पहचानता है,

आसव किस प्रकार भूमिका निभाते हैं,

जहां वे समाप्त हो जाते हैं,

और उनके अंत का मार्ग।

आसवों के समाप्त होने के साथ, एक भिक्षु

लालसा से मुक्त (तन्हा)

पूर्णतया बंधनमुक्त (निर्वाण प्राप्त)।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 57. दुतियासवसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 56 <<<पिछला || त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 57 || अगला >>> इतिवुत्तक 58

57. दुतियासवसुत्तम (इच्छाओं का अंत):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, ये तीन आसव (इच्छाएँ/इच्छाएँ) हैं। कौन से तीन? कामुकता का आसव, भाव का आसव, अज्ञान का आसव (अविज्ज)। ये तीन आसव (इच्छाएँ/इच्छाएँ) हैं।”
उसकी कामुकता की आसव (चाहत/इच्छा)

सड़ गया,

उसका अज्ञान (अविज्जा)

फीका है,

उसका भाव (भाव)

थका हुआ:

एक पूर्णतः मुक्त, उपाधि (गुणों) से रहित,

उसका अंतिम शरीर धारण किए हुए है,

मारा (मृत्युदेवता) पर विजय प्राप्त करने के बाद

अपने घोड़े के साथ।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 58. तन्हासुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 57 <<<पिछला ‖ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 58 ‖ अगला >>> इतिवुत्तक 59

58. तन्हासुत्तम (तीन प्रकार की तृष्णाएँ)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, ये तीन प्रकार की तृष्णाएँ (तन्हा) हैं। कौन सी तीन? कामुकता की तृष्णा, भाव की तृष्णा, और अनभाव की तृष्णा। ये तीन प्रकार की तृष्णाएँ (तन्हा) हैं।"
लालसा (तन्हा) के बंधन से बंधा हुआ,

उनके मन मोहित हो गए

भाव और गैर- के साथ

वे मारा (मृत्यु के देवता) के बंधन में जकड़े हुए हैं।

जिन लोगों को गुलामी से कोई सुरक्षा नहीं है,

भटकते हुए प्राणी,

जन्म और मृत्यु की ओर अग्रसर।

जबकि जिन्होंने लालसा (तन्हा) का त्याग कर दिया है,

भाव और अनात्म बनने की लालसा (तन्हा) से मुक्त।

आसवों (इच्छाओं/इच्छाओं) के अंत तक पहुँचना,

हालांकि दुनिया में,

आगे बढ़ गए हैं।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 59. मराधेयसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 58 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 59 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 60

59. मराधेय्यासुत्तम (मृत्यु के देवता, राक्षस मरा पर विजय कैसे प्राप्त करें):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"तीन गुणों से युक्त, भिक्षु मरा (राक्षस) के क्षेत्र (भौतिक संसार और पुनर्जन्म) से परे जाकर सूर्य के समान चमकता है। वे तीन गुण कौन से हैं? एक स्थिति वह है जब भिक्षु प्रशिक्षण से परे व्यक्ति (अर्थात अरहंत) के सद्गुणों (नैतिकता, शील) के समूह, प्रशिक्षण से परे व्यक्ति की समाधि (सम्मोहन) के समूह और प्रशिक्षण से परे व्यक्ति के प्रत्यक्ष ज्ञान (पन्ना) के समूह से युक्त होता है। इन तीन गुणों से युक्त भिक्षु मरा के क्षेत्र से परे जाकर सूर्य के समान चमकता है।"
शील (सद्गुण), समाधि (सम्मोहन), पन्ना (दिव्य अंतर्दृष्टि):

जिसमें ये गुण अच्छी तरह विकसित हों,

मारा के क्षेत्र से परे जाते हुए,

(शैतान का क्षेत्र - भौतिक संसार, इच्छाएँ, दुख, मृत्यु, पुनर्जन्म)

चमकता

सूर्य की तरह।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 60. पुन्नकिरियावत्थुसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 59 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 60 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 61

60. पुन्नकिरियावत्थुसुत्तम् (पुण्य कैसे प्राप्त करें):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, पुण्य कर्म के ये तीन आधार हैं। वे तीन कौन से हैं? दान से उत्पन्न पुण्य कर्म का आधार, सद्‌गुण (नैतिकता, शील) से उत्पन्न पुण्य कर्म का आधार, और ध्यान में बोध से उत्पन्न पुण्य कर्म का आधार। ये पुण्य कर्म के तीन आधार हैं।”
पुण्य कर्मों में प्रशिक्षण प्राप्त करें

जो परमानंद का सर्वोपरि लाभ प्रदान करते हैं—

उदारता (दान करने की भावना) विकसित करना,

एक ऐसा जीवन जो धार्मिकता के अनुरूप हो।

सद्‌भावपूर्ण मन।

इनका विकास करना

तीन बातें

जो आनंद लाते हैं,

बुद्धिमान लोग पुनः प्रकट होते हैं

आनंद की दुनिया में

शुद्ध।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 61. चक्खुसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 60 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 61 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 62

61. चक्खुसुत्तम (आँखें और दिव्य आँखें)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया था, अरहंत द्वारा कहा गया था, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, ये तीन आँखें हैं। कौन सी तीन? देह की आँख, दिव्य आँख, [1] और प्रत्यक्ष ज्ञान (पन्ना) की आँख। ये तीन आँखें हैं।”
मांस की आंख,

दिव्य दृष्टि,

प्रत्यक्ष ज्ञान की दृष्टि (पन्ना) अतुलनीय है:

इन तीनों आँखों को सिखाया गया था

सर्वोत्कृष्ट पुरुष द्वारा।

मांस की आंख (जागरूकता) का उदय

क्या यही दिव्य दृष्टि का मार्ग है?

जब समझ उत्पन्न होती है,

प्रत्यक्ष ज्ञान (पन्ना) की दृष्टि अतुलनीय (प्राप्त) है:

जो भी इस आंख को प्राप्त करेगा

सभी दुखों और पीड़ाओं से मुक्त है।

जारी किया।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 62. इंद्रियसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 61 <<<पिछला॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 62॥ अगला >>> इतिवुत्तक 63

62. इंद्रियसूत्तम् (ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञात की शक्तियाँ)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया था, अरहंत द्वारा कहा गया था, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, ये तीन शक्तियाँ हैं। कौन सी तीन? 'मैं उस ज्ञान को जानने वाला हूँ जो अभी तक पूरी तरह से ज्ञात नहीं है' की शक्ति, अंतिम ज्ञान की शक्ति, और उस व्यक्ति की शक्ति जिसने अंततः ज्ञान प्राप्त कर लिया है।[1] ये तीन शक्तियाँ हैं।"
प्रशिक्षण ले रहे शिक्षार्थी के लिए

सीधे रास्ते पर:

सर्वप्रथम, अंत का ज्ञान;

फिर, तुरंत,

जागृति;

फिर, अंत से

बंधन का—बनना—

ज्ञान तो है ही,

एक मुक्त व्यक्ति का जागरण

जो ऐसा है: [2]

'मेरी रिहाई बिना किसी उकसावे के हुई है।' [3]

इन क्षमताओं में निपुण व्यक्ति,

शांतिपूर्ण,

शांतिपूर्ण अवस्था का आनंद लेते हुए,

उसका अंतिम शरीर धारण किए हुए है,

मारा (मृत्युदेवता) पर विजय प्राप्त करने के बाद

अपने घोड़े के साथ।

टिप्पणी:
1. टीका के अनुसार, इन क्षमताओं में से पहली क्षमता प्रथम श्रेष्ठ प्राप्ति, यानी जलप्रवेश के मार्ग से संबंधित है; दूसरी क्षमता जलप्रवेश की प्राप्ति से लेकर अरहंतत्व के मार्ग तक की अगली छह प्राप्तियों से संबंधित है; और तीसरी क्षमता सर्वोच्च प्राप्ति, यानी अरहंतत्व की प्राप्ति से संबंधित है। इस इतिवुत्तक का गद्य भाग एसएन 48:23 पर दोहराया गया है। एसएन 12:70, एएन 3:86 और क्रमांक 102 भी देखें।
2. ऐसा (तदिन): क्रमांक 44 की टिप्पणी देखें।
3. अकुप्पा। इस शब्द का अनुवाद कभी-कभी "अविचल" के रूप में किया जाता है, लेकिन इसका शाब्दिक अर्थ है, "अविचलित"। यह स्पष्ट रूप से धातु के सिद्धांत, या प्रकृति में भौतिक या मनोवैज्ञानिक घटनाओं के अंतर्निहित गुणों को संदर्भित करता है। इस सिद्धांत के अनुसार भौतिक गुण चार हैं: पृथ्वी (ठोसता), द्रव, ऊष्मा और वायु (गति)। इनमें से तीन - द्रव, ऊष्मा और वायु - संभावित रूप से सक्रिय हैं। जब वे उत्तेजित, व्याकुल या उकसाए जाते हैं—यहाँ पाली शब्द 'पकुप्पति' का प्रयोग मनोवैज्ञानिक स्तर पर भी किया गया है, जिसका अर्थ है क्रोधित या परेशान—तो वे प्राकृतिक क्रिया के मूल कारण के रूप में कार्य करते हैं। उकसावा समाप्त होने पर, संबंधित क्रिया शांत हो जाती है। यद्यपि क्रमांक 44 में निर्वाण के दो गुण बताए गए हैं, ये दोनों गुण इस मायने में विशिष्ट हैं कि निर्वाण का अनुभव इनके उकसावे से उत्पन्न नहीं होता। क्योंकि सच्ची मुक्ति किसी भी चीज के उकसावे से उत्पन्न नहीं होती—यह तथ्य अनुभव के तुरंत बाद ही ज्ञात हो जाता है—इसलिए यह परिवर्तन के अधीन नहीं है।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 63. अद्धसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 62 <<<पिछला॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 63॥ अगला >>> इतिवुत्तक 64

63. अद्धसुत्तम (काल):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, ये तीन काल हैं। कौन से तीन? भूतकाल, भविष्यकाल, वर्तमानकाल। ये तीन काल हैं।"
संकेतों, प्राणियों के संदर्भ में बोध करना

संकेतों पर अपना रुख स्पष्ट करें।

संकेतों को पूरी तरह से न समझ पाने के कारण, वे

बंधनों में आना

मौत की।

लेकिन संकेतों को पूरी तरह से समझना, एक

किसी संकेतक की व्याख्या नहीं करता।

मन से मुक्ति को स्पर्श करते हुए,

अद्वितीय शांति की स्थिति।

संकेतों के संदर्भ में पूर्ण,

शांतिपूर्ण,

शांतिपूर्ण अवस्था का आनंद लेते हुए,

विवेकपूर्ण,

ज्ञान प्राप्त करने वाला

वर्गीकरणों का उपयोग करता है

लेकिन इसे वर्गीकृत नहीं किया जा सकता।

टिप्पणी: 1. पहली नज़र में, यहाँ दिए गए श्लोक गद्य प्रस्तावना से अधिक संबंधित नहीं लगते। हालाँकि, यदि इन्हें एमएन 2 (संख्या 16 की टिप्पणी देखें) के संदर्भ में देखा जाए, तो इनका संबंध स्पष्ट हो जाता है: जो व्यक्ति भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल की अवधारणा पर उचित ध्यान देता है, वह स्वयं को इन शब्दों में परिभाषित नहीं करता, और इसलिए इन शब्दों में किसी भी प्रकार की आत्म-पहचान से आसक्त नहीं रहता। आसक्ति के बिना, व्यक्ति जन्म और मृत्यु के बंधन से मुक्त हो जाता है।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 64. दुकारितासुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 63 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 64 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 65

64. दुच्चरितसुत्तम (दुराचार नरक की ओर ले जाता है)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया था, अरहंत द्वारा कहा गया था, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, दुराचार के ये तीन प्रकार हैं। कौन से तीन? शारीरिक दुराचार, वाणी दुराचार, मानसिक दुराचार।[1] ये दुराचार के तीन प्रकार हैं।”
संलग्न होने के बाद

शारीरिक दुर्व्यवहार में,

मौखिक दुर्व्यवहार के कृत्य,

मानसिक दुराचार

या जो भी अन्य त्रुटिपूर्ण हो,

उचित कार्य न करने के कारण,

बहुत कुछ ऐसा करने के बाद जो उचित नहीं है,

शरीर के विखंडन के समय,

अविवेकी व्यक्ति पुनः प्रकट होता है

नरक।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 65. सुकारितासुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 64 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 65 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 66

65. सुचरितसुत्तम (सद्गुण स्वर्ग की ओर ले जाता है)

यह बात भगवान बुद्ध (भागवत) ने कही थी, अरहंत ने कही थी, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, तीन प्रकार के सद्गुण होते हैं। वे कौन से तीन प्रकार हैं? शारीरिक सद्गुण, वाणी सद्गुण, मानसिक सद्गुण। ये तीन प्रकार के सद्गुण हैं।”

त्यागने के बाद

शारीरिक दुर्व्यवहार,

मौखिक दुर्व्यवहार के कृत्य,

मानसिक दुराचार

और जो कुछ भी अन्य त्रुटिपूर्ण है,

जो कार्य कुशल नहीं है, उसे न करने के कारण,

बहुत कुछ करने के बाद,

शरीर के विखंडन के समय,

विवेकशील व्यक्ति पुनः प्रकट होता है

स्वर्ग में।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 66. सोसेयसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 65 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 66 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 67

66. समाज्यसुत्तम (शुद्धता):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, शुद्धता के ये तीन प्रकार हैं। कौन से तीन? शारीरिक शुद्धता, वाणी की शुद्धता, मानसिक शुद्धता। ये शुद्धता के तीन प्रकार हैं।”
शरीर से शुद्ध,

वाणी में शुद्ध,

शुद्ध चेतना (मन)

—आसव (चाहत/इच्छा)-मुक्त—

जो स्वच्छ हो,

स्वच्छता में निपुण,

ऐसा कहा जाता है कि उसने त्याग दिया है

सभी।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 67. मनीयासुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 66 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 67 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 68

67. धन्यसूत्त (संतत्व के प्रकार)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, संतत्व के ये तीन रूप हैं। कौन से तीन? शारीरिक संतत्व, वाणी का संतत्व, मानसिक संतत्व। ये संतत्व के तीन रूप हैं।"
शरीर से संत, वाणी से संत

मन से संत, आसव (इच्छा/इच्छा) से मुक्त:

एक संत जो संतत्व से परिपूर्ण है

ऐसा कहा जाता है कि स्नान करने से बुरी शक्तियां दूर हो जाती हैं।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 68. पथमारगसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 67 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 68 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 69

68. पथमरगसुत्तम (वासना):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, जिसकी वासना (राग) निःस्वार्थ है, जिसकी घृणा (दोष) निःस्वार्थ है, जिसका मोह (मोह) निःस्वार्थ है, वह मारा (राक्षस) के शिविर में चला गया है, मारा के वश में आ गया है। राक्षस उस व्यक्ति के साथ जैसा चाहे कर सकता है। परन्तु जिसकी वासना निःस्वार्थ है, जिसकी घृणा निःस्वार्थ है, जिसका मोह (मोह) निःस्वार्थ है, वह मारा के शिविर में नहीं गया है, उसने मारा के वश से मुक्त हो गया है। राक्षस उस व्यक्ति के साथ जैसा चाहे नहीं कर सकता।"
कोई भी

जिसका राग (राग), द्वेष (डोसा), और अज्ञान (अविज्जा)

लुप्त हो गए हैं,

ऐसा कहा जाता है

मन को शांत रखते हुए,

ब्रह्मा-बनना (प्रधानदेव),

जागृत, तथागत (परलोक चले गए),

जिसके लिए भय और शत्रुता

अतीत हैं,

जो त्याग दिया गया हो

सभी।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 69. दुतियारागसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 68 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 69 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 70

69. दुतियारागसुत्तम (वासना)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"हे भिक्षुओं, कोई भी—भिक्षु या भिक्षुणी—जिसमें वासना (राग) का त्याग नहीं हुआ है, घृणा (दोष) का त्याग नहीं हुआ है, और मोह (मोह) का त्याग नहीं हुआ है, ऐसा कहा जाता है कि उसने लहरों, बवंडरों, भंवरों, पकड़ने वालों और राक्षसों सहित सागर को पार नहीं किया है।[1] कोई भी—भिक्षु या भिक्षुणी—जिसमें वासना, घृणा और मोह का त्याग हो गया है, ऐसा कहा जाता है कि उसने लहरों, बवंडरों, भंवरों, पकड़ने वालों और राक्षसों सहित सागर को पार कर लिया है। पार करके, दूर तट पर पहुँचकर, वह उच्च स्थान पर खड़ा होता है, एक ब्राह्मण।"
वह जिसका राग (राग), द्वेष (डोसा), और अज्ञान (अविज्जा)

लुप्त हो गए हैं,

इस महासागर को पार कर चुका है

अपने ज़ब्तीकर्ताओं के साथ,

राक्षस,

खतरनाक लहरें,

पार करना बहुत मुश्किल है।

उपाधि (मानसिक गुणों) से मुक्त

बंधनों पर विजय प्राप्त की गई,

मृत्यु ने त्याग दिया—

उसने पीड़ा का त्याग कर दिया है

आगे कोई और भाव उत्पन्न नहीं होता।

लक्ष्य तक पहुँचने के बाद

वह अपरिभाषित है,[2]

उसने मात दे दी है, मैं तुम्हें बताता हूँ।

मृत्यु का राजा (मारा)।

टिप्पणी:

1. क्रमांक 109 देखें।
2. क्रमांक 63 देखें। अरहंत के अपरिभाषित होने पर आगे की चर्चा के लिए, एसएन 23:2, एसएन 22:36 और प्रश्नों में कौशल, परिशिष्ट चार देखें।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 70. मिच्चादित्तिकासुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 69 <<<पिछला॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 70॥ अगला >>> इतिवुत्तक 71

70. मिच्छदित्तिकसुत्तम् (गलत आचरण का परिणाम)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, मैंने ऐसे प्राणियों को देखा है जो शारीरिक दुराचार, वाणी दुराचार और मानसिक दुराचार से ग्रस्त थे; जिन्होंने श्रेष्ठ लोगों की निंदा की, गलत विचार रखे और गलत विचारों के प्रभाव में कर्म किए—मृत्यु के बाद शरीर के टूटने पर, नरक में, अभाव के लोक में, बुरे गंतव्य में, नरक में पुनः प्रकट हुए हैं। यह मैंने किसी अन्य तपस्वी (भिक्षु) या ब्राह्मण से सुनकर नहीं कहा है कि मैंने ऐसे प्राणियों को देखा है जो शारीरिक दुराचार, वाणी दुराचार और मानसिक दुराचार से ग्रस्त थे; जिन्होंने श्रेष्ठ लोगों की निंदा की, गलत विचार रखे और गलत विचारों के प्रभाव में कर्म किए—मृत्यु के बाद शरीर के टूटने पर, अभाव के लोक में, बुरे गंतव्य में, नरक में पुनः प्रकट हुए हैं। यह वह लोक है, नरक। मैंने स्वयं इसे जाना है, स्वयं देखा है, स्वयं अनुभव किया है, इसलिए मैं आपको बताता हूँ कि मैंने ऐसे प्राणियों को

देखा है जो शारीरिक दुराचार, वाणी दुराचार और मानसिक दुराचार से ग्रस्त थे; जिन्होंने श्रेष्ठ लोगों की निंदा की, गलत विचार रखे और गलत विचारों के प्रभाव में आकर कर्म किए—मृत्यु के बाद शरीर के विखंडन पर, एक निम्न लोक, एक बुरे गंतव्य, एक निचले लोक, नरक में पुनः प्रकट हुए हैं।
गलत दिशा में निर्देशित मन के साथ,

गलत बात बोलना,

शरीर के साथ गलत काम करना:

यहां एक व्यक्ति

लगभग नगण्य ज्ञान के कारण,

बुराई करने वाला

इस लगभग नगण्य जीवन में,

शरीर के विखंडन के समय,

अविवेकी,

नरक में पुनः प्रकट होता है।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 71. सम्मदित्तिकासुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 70 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 71 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 72

71. सम्मदित्तिकसुत्तम् (धार्मिक आचरण का परिणाम)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, मैंने ऐसे प्राणियों को देखा है जो शारीरिक रूप से अच्छे आचरण, मौखिक रूप से अच्छे आचरण और मानसिक रूप से अच्छे आचरण से संपन्न थे; जिन्होंने श्रेष्ठ लोगों की निंदा नहीं की, जिन्होंने सही विचार रखे और सही विचारों के प्रभाव में कर्म किए—मृत्यु के बाद शरीर के विखंडन पर, एक अच्छे गंतव्य, एक स्वर्गलोक में पुनः प्रकट हुए हैं। यह मैंने किसी अन्य तपस्वी (भिक्षु) या ब्राह्मण (पुजारी) से सुनकर आपको नहीं बताया है कि मैंने ऐसे प्राणियों को देखा है जो शारीरिक रूप से अच्छे आचरण, मौखिक रूप से अच्छे आचरण और मानसिक रूप से अच्छे आचरण से संपन्न थे; जिन्होंने श्रेष्ठ लोगों की निंदा नहीं की, जिन्होंने सही विचार रखे और सही विचारों के प्रभाव में कर्म किए—मृत्यु के बाद शरीर के विखंडन पर, एक अच्छे गंतव्य, एक स्वर्गलोक में पुनः प्रकट हुए हैं। यह मैंने स्वयं इसे जाना है, स्वयं देखा है, स्वयं इसका अनुभव किया है, इसलिए मैं आपको बताता हूँ कि मैंने ऐसे प्राणियों को देखा है जो शारीरिक, मौखिक और मानसिक रूप से अच्छे आचरण से संपन्न थे; जिन्होंने श्रेष्ठ लोगों की निंदा नहीं की, जिन्होंने सही विचार रखे और सही विचारों के प्रभाव में कार्य किए—शरीर के नष्ट होने पर, मृत्यु के बाद, एक अच्छे गंतव्य, एक स्वर्गलोक में पुनः प्रकट हुए।
सही दिशा में निर्देशित मन के साथ,

सही वाणी बोलना,

शरीर से सही कर्म करना:

यहां एक व्यक्ति

बहुत ज्ञानवान,

पुण्य कर्म करने वाला

इस लगभग नगण्य जीवन में,

शरीर के विखंडन के समय,

विवेकशील,

स्वर्ग में पुनः प्रकट होता है।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 72. निस्सारण्यसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 71 <<<पिछला || त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 72 || अगला >>> इतिवुत्तक 73

72. निस्सारनियासुत्तम (मुक्ति का ज्ञान)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, मुक्ति के ये तीन गुण हैं। वे कौन से तीन हैं? यह इंद्रिय सुख से मुक्ति है: त्याग।[1] यह रूप से मुक्ति है: निराकारता। और जो कुछ भी अस्तित्व में आया है, जो निर्मित है और आश्रित रूप से सह-उत्पन्न है, उससे मुक्ति का साधन है निश्चलता। ये मुक्ति के तीन गुण हैं।"

कामुकता से मुक्ति का मार्ग जानकर,

और रूपों पर विजय प्राप्त करना

— उत्साही

हमेशा-

शांत करने को छूना

सभी संस्कारों (मनगढ़ंत बातों/पापों/आदतों) में से:

वह एक भिक्षु है

जो समभाव से देखा जाता है।

उसे वहाँ से रिहा कर दिया गया।

प्रत्यक्ष ज्ञान का उस्ताद,

शांति पर,

वह एक ऋषि (योगी) हैं।

बंधनों से परे चला गया।

नोट: 1. यहाँ त्याग का तात्पर्य ध्यान (सम्मोहन) की प्रथम अवस्था से है, जो इंद्रिय सुख और अकुशल मानसिक गुणों से विरक्त होने पर प्राप्त होती है। निराकारता और निराकारता के विषय में, क्रमांक 51 की टिप्पणी देखें। एएन 5:200 भी देखें।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 73. संततरसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 72 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 73 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 74

73. संतारासुत्तम् (शांतिपूर्ण घटनाएँ)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया था, अरहंत द्वारा कहा गया था, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, निराकार घटनाएँ साकार घटनाओं से अधिक शांतिपूर्ण हैं; निर्गमन निराकार घटनाओं से अधिक शांतिपूर्ण है।"
वे प्राणी रूपों की ओर अग्रसर हुए,

और जो निराकार में खड़े हैं,

समाप्ति की जानकारी के बिना,

आगे के विकास (पुनर्जन्म) की ओर लौटना।

लेकिन, रूप को समझते हुए,

निराकार चीजों के प्रति कोई रुख न अपनाना,

जो लोग मोक्ष प्राप्त कर चुके हैं

ये वे लोग हैं जिन्होंने मृत्यु को पीछे छोड़ दिया है।

अपने शरीर से स्पर्श करने के बाद

अमरता का गुण मुक्त

उपाधि (मानसिक अर्जितियों/गुणों) से,

त्याग का अहसास होने पर

अधिग्रहणों का,

असावा (चाहत/इच्छा)-मुक्त,

सही मायने में आत्मजागृत व्यक्ति (बुद्ध)

राज्य को सिखाता है

बिना किसी दुःख के,

कोई गंदगी नहीं।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 74. पुत्तसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 73 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 74 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 75

74. पुत्तसुत्तम (पुत्र एवं पुत्री के प्रकार)

यह बात भगवान बुद्ध (भागवत) ने कही है, अरहंत ने कहा है, जैसा मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, संसार में तीन प्रकार के पुत्र एवं पुत्रियाँ पाई जाती हैं। वे कौन से तीन हैं? एक उच्च कुल का, एक समान कुल का, और एक निम्न कुल का।

और उच्च कुल (जाति/वर्ग) का पुत्र या पुत्री कैसा होता है? ऐसा मामला है जहाँ पुत्र या पुत्री के माता-पिता ने बुद्ध की शरण नहीं ली है, धम्म की शरण नहीं ली है, संघ (भिक्षु संघ) की शरण नहीं ली है। वे जीव-जंतुओं को मारने, चोरी करने, यौन दुराचार करने, झूठी वाणी बोलने, और आलस्य उत्पन्न करने वाले मादक पेय पदार्थों के सेवन से परहेज नहीं करते। वे स्वभाव से सिद्धांतहीन और दुष्ट होते हैं। वे निम्न कुल (जाति/वर्ग) के होते हैं। परन्तु उनका पुत्र या पुत्री बुद्ध की शरण में गया है, धम्म की शरण में गया है, और संघ की शरण में गया है।" वह किसी की जान लेने, चोरी करने, यौन दुराचार करने, झूठी बातें बोलने और आलस्य उत्पन्न करने वाले मादक पेय पदार्थों से

परहेज करता है। वह स्वभाव से सिद्धांतवादी और प्रशंसनीय होता है। ऐसे व्यक्ति को उच्च कुल (जाति/वर्ग) का पुत्र या पुत्री कहा जाता है।

“सर्वोत्तम कुल (जाति/वर्ग) का पुत्र या पुत्री कैसा होता है? एक उदाहरण है, जहाँ पुत्र या पुत्री के माता-पिता बुद्ध की शरण में गए हैं, धम्म की शरण में गए हैं, संघ की शरण में गए हैं। वे हत्या, चोरी, यौन दुराचार, झूठी वाणी और आलस्य उत्पन्न करने वाले मादक पेय पदार्थों से परहेज करते हैं। वे स्वभाव से सिद्धांतवादी और प्रशंसनीय हैं। उनका पुत्र या पुत्री भी बुद्ध की शरण में गया है, धम्म की शरण में गया है, संघ की शरण में गया है। वह भी हत्या, चोरी, यौन दुराचार, झूठी वाणी और आलस्य उत्पन्न करने वाले मादक पेय पदार्थों से परहेज करता है। वह भी स्वभाव से सिद्धांतवादी और प्रशंसनीय है। इसे सर्वोत्तम कुल (जाति/वर्ग) का पुत्र या पुत्री कहा जाता है।

“निम्न कुल का पुत्र या पुत्री कैसा होता है?” एक ऐसा मामला है जहाँ पुत्र या पुत्री के माता-पिता ने बुद्ध की शरण ली है, धम्म की शरण ली है, संघ की शरण ली है। वे हत्या, चोरी, यौन दुराचार, झूठी वाणी और आलस्य उत्पन्न करने वाले मादक पेय पदार्थों से परहेज करते हैं। वे स्वभाव से सिद्धांतवादी और प्रशंसनीय हैं। परन्तु उनका पुत्र या पुत्री न तो बुद्ध की शरण में गया है, न धम्म की शरण में, न संघ की शरण में। वह हत्या, चोरी, यौन दुराचार, झूठी वाणी और आलस्य उत्पन्न करने वाले मादक पेय पदार्थों से परहेज नहीं करता। वह स्वभाव से सिद्धांतहीन और दुष्ट है। इसे निम्न जाति का पुत्र या पुत्री कहा जाता है।
एक बच्चे के लिए बुद्धिमान आशा

उच्चतम या उच्च कुल का,

एक के लिए भी नहीं

निम्न जन्म दर का,

परिवार का विनाशक।

दुनिया के ये बच्चे,

आम अनुयायी

—सद्‌गुणों (शील) और आस्था से परिपूर्ण;

उदार, कंजूसी से मुक्त—

किसी भी सभा में अपनी चमक बिखेरें

चांद की तरह

जब बादल से मुक्त हो जाए।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 75. अवुत्थिकासुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 74 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 75 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 76

75. अवुत्थिकासुत्तम (मनुष्य और बादल)

यह बात भगवान बुद्ध (भागवत) ने कही है, अरहंत ने कहा है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, संसार में तीन प्रकार के व्यक्ति पाए जाते हैं। वे कौन से तीन हैं? एक बिना वर्षा वाले बादल के समान, एक स्थानीय वर्षा करने वाला, और एक हर जगह वर्षा करने वाला।

"और बिना वर्षा वाले बादल के समान व्यक्ति कैसे होता है? वह व्यक्ति किसी को भी भोजन, पेय, वस्त्र, वाहन, माला, सुगंध, मलहम, बिस्तर, आवास या प्रकाश नहीं देता है: न तो तपस्वियों को, न ब्राह्मणों को, न ही पुरोहितों को, न ही किसी दुखी, बेघर या भिखारी को। इस प्रकार व्यक्ति बिना वर्षा वाले बादल के समान होता है।"

"और स्थानीय वर्षा करने वाला व्यक्ति कैसे कहलाता है? एक उदाहरण यह है कि कोई व्यक्ति कुछ तपस्वियों (भिक्षुओं) और ब्राह्मणों, कुछ दुखी, बेघर और भिखारियों को भोजन, पेय, वस्त्र, वाहन, माला, सुगंध, मलहम, बिस्तर, आवास और प्रकाश देता है, परन्तु दूसरों को नहीं। इस प्रकार एक व्यक्ति स्थानीय वर्षा करने वाला कहलाता है।

"और सर्वव्यापी वर्षा करने वाला व्यक्ति कैसे कहलाता है? एक उदाहरण यह है कि कोई व्यक्ति सभी तपस्वियों (भिक्षुओं) और ब्राह्मणों, सभी दुखी, बेघर और भिखारियों को भोजन, पेय, वस्त्र, वाहन, माला, सुगंध, मलहम, बिस्तर, आवास और प्रकाश देता है। इस प्रकार एक व्यक्ति सर्वव्यापी वर्षा करने वाला कहलाता है। "ये तीन प्रकार के व्यक्ति हैं जो संसार में विद्यमान पाए जाते हैं।"
तपस्वियों (भिक्षुओं) के लिए नहीं।

ब्राह्मणों (पुजारियों) को

दुखी लोगों के लिए,

न ही बेघरों के लिए

क्या वह अपने द्वारा अर्जित ज्ञान को साझा करता है?

खाना,

पेय पदार्थ,

पोषण।

वह, वह नीचतम व्यक्ति,

इसे बिना बारिश वाला बादल कहा जाता है।

कुछ लोगों को वह कुछ नहीं देता।

वह दूसरों के साथ ऐसा करता है:

बुद्धिमान लोग उसे कहते हैं

जो स्थानीय स्तर पर बारिश करता है।

अनुरोधों का जवाब देने वाला व्यक्ति,

सभी प्राणियों के प्रति सहानुभूति रखने वाला,

दान-पुण्य करने में आनंदित होना:

उन्हें दे दो!

देना!"

वह कहता है।

जब बादल गरजते हुए, गड़गड़ाहट करते हुए बारिश करते हैं,

पानी से भर जाना, भीग जाना

पठार और घाटियाँ:

इस तरह का व्यक्ति

ऐसा ही है।

सही ढंग से संचित करने के बाद

पहल के माध्यम से अर्जित धन,

वह भोजन और पेय से उचित रूप से तृप्त होता है।

जो लोग गिर गए

बेघर अवस्था।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 76. सुखपत्थनसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 75 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 76 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 77

76. सुखापट्ठनासुत्तम (आनंद का मार्ग)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“हे भिक्षुओं, इन तीन प्रकार के आनंद की आकांक्षा रखते हुए, एक बुद्धिमान व्यक्ति को अपने सद्‌गुण (शील) की रक्षा करनी चाहिए। वे तीन कौन से हैं? [यह सोचकर] 'मेरी स्तुति हो,' एक बुद्धिमान व्यक्ति को अपने सद्‌गुण (शील) की रक्षा करनी चाहिए। [यह सोचकर] 'मेरी संपत्ति बढ़े,' एक बुद्धिमान व्यक्ति को अपने सद्‌गुण (शील) की रक्षा करनी चाहिए। [यह सोचकर] 'मृत्यु के बाद, शरीर के टूटने पर, मैं एक अच्छे स्थान, स्वर्गलोक में पुनर्जन्म लूं,' एक बुद्धिमान व्यक्ति को अपने सद्‌गुण की रक्षा करनी चाहिए। इन तीन प्रकार के आनंद की आकांक्षा रखते हुए, एक बुद्धिमान व्यक्ति को अपने सद्‌गुण (शील) की रक्षा करनी चाहिए।”
बुद्धिमान,

आपको अपने सद्‌गुण (शील) की रक्षा करनी चाहिए।

तीन प्रकार के आनंद की आकांक्षा:

प्रशंसा;

धन प्राप्ति;

और, मृत्यु के बाद, आनंद मनाना

स्वर्ग में।

भले ही तुम कोई बुराई न करो

लेकिन ऐसे व्यक्ति को खोजें जो ऐसा करता हो।

आप पर बुराई करने का संदेह है।

आपकी बदनामी

बढ़ता है।

जिस तरह के व्यक्ति से दोस्ती की जा सकती है,

जिस तरह के लोगों की आप तलाश करते हैं,

तुम भी उसी तरह के इंसान बन जाते हो—

आपका साथ रहना

उस तरह का।

जो इससे जुड़ा हुआ है,

जो जोड़ता है,

जिसने स्पर्श किया है,

जो किसी दूसरे को स्पर्श करता है

—जैसे कोई तीर विष से सना हो—

तरकश को दूषित कर देता है।

इसलिए, संदूषण के डर से, बुद्धिमानों ने

साथी नहीं होने चाहिए

बुरे लोगों के साथ।

एक आदमी जो सड़ी हुई मछली लपेटता है

कुसा घास के एक तिनके में

इससे घास में बदबू आने लगती है:

सो है

यदि तुम मूर्खों की तलाश करोगे।

लेकिन एक आदमी जो पिसी हुई अगरबत्ती लपेटता है

पेड़ के पत्ते में

इससे पत्ती सुगंधित हो जाती है:

सो है

यदि आप तलाश करते हैं

समझदार।

इसलिए,

अपने परिणाम को जानना

जैसे पत्ते लपेटने वाले का,

आपको तलाश नहीं करनी चाहिए

जो अच्छे नहीं हैं।

बुद्धिमान लोग इसे जोड़ेंगे

उनके साथ जो हैं।

जो लोग अच्छे नहीं हैं

आपको नरक में ले जाएगा।

अच्छी मदद आपको पहुँचने में मदद करती है

एक अच्छा गंतव्य।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 77. भिदुरसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 76 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 77 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 78

77. भिदुरसुत्तम (क्षय):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया था, अरहंत द्वारा कहा गया था, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, यह शरीर क्षीण होता है; चेतना लुप्त होने के अधीन है; सभी मानसिक गुण/प्राप्तियाँ अस्थिर, दुखद और परिवर्तनशील हैं।"
शरीर को सड़ते हुए जानते हुए,

और चेतना धीरे-धीरे विलीन होती जा रही है,

अधिग्रहणों में निहित खतरे को पहचानना (मानसिक गुण/लालसा),

आप इससे भी आगे निकल गए हैं

जन्म और मृत्यु।

सर्वोच्च शांति प्राप्त करने के बाद,

आप सही समय का इंतजार करें,

शांत।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 78. धातुसोसमसंदानसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 77 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 78 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 79

78. धातुसोसंदनासुत्तम् (समान गुणों के अनुसार संगति):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, प्राणी अपने गुणों के अनुसार एक दूसरे के साथ एकत्रित होते हैं और संगति करते हैं। निम्न स्वभाव वाले प्राणी निम्न स्वभाव वाले प्राणियों के साथ एकत्रित होते हैं और संगति करते हैं। प्रशंसनीय स्वभाव वाले प्राणी प्रशंसनीय स्वभाव वाले प्राणियों के साथ एकत्रित होते हैं और संगति करते हैं। अतीत में, प्राणी अपने गुणों के अनुसार एक दूसरे के साथ एकत्रित होते थे और संगति करते थे। भविष्य में, प्राणी अपने गुणों के अनुसार एक दूसरे के साथ एकत्रित होंगे और संगति करेंगे... और वर्तमान में, प्राणी अपने गुणों के अनुसार एक दूसरे के साथ एकत्रित होते हैं और संगति करते हैं। निम्न स्वभाव वाले प्राणी निम्न स्वभाव वाले प्राणियों के साथ एकत्रित होते हैं और संगति करते हैं। प्रशंसनीय स्वभाव वाले प्राणी प्रशंसनीय स्वभाव वाले प्राणियों के साथ एकत्रित होते हैं और संगति करते हैं।"
झाड़ियों में पैदा हुआ

संघ का

काट दिया गया है

गैर-सहयोग द्वारा।

जैसे कोई सवार

एक छोटा लकड़ी का तख्ता

डूब जाएगा

विशाल समुद्र में,

सही जीवन जीने का तरीका भी ऐसा ही है।

डूबना,

आलसी लोगों के साथ संगति करना।

इसलिए आलसी लोगों से बचें,

जिनकी दृढ़ता कम होती है।

नेक लोगों के साथ रहो—

एकांत में, दृढ़ निश्चयी, ध्यान (सम्मोहन) में लीन,

उनकी दृढ़ता ने लगातार उत्तेजना पैदा की

समझदार।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 79. परिहनसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 78 <<<पिछला॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 79॥ अगला >>> इतिवुत्तक 80

79. परिहानसुत्तम (पवित्र मार्ग से पतन)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, ये तीन बातें प्रशिक्षणार्थी भिक्षु के पतन का कारण बनती हैं। वे तीन कौन सी हैं? एक स्थिति यह है कि प्रशिक्षणार्थी भिक्षु गतिविधि में आनंद लेता है, गतिविधि में प्रसन्न होता है, गतिविधि के आनंद में लीन रहता है। वह गपशप में आनंद लेता है, गपशप में प्रसन्न होता है, गपशप के आनंद में लीन रहता है। वह नींद में आनंद लेता है, नींद में प्रसन्न होता है, नींद के आनंद में लीन रहता है। ये तीन बातें प्रशिक्षणार्थी भिक्षु के पतन का कारण बनती हैं।

“ये तीन बातें प्रशिक्षणार्थी भिक्षु के पतन से बचने का कारण बनती हैं। वे तीन कौन सी हैं? एक स्थिति यह है कि प्रशिक्षणार्थी भिक्षु गतिविधि में आनंद नहीं लेता है, गतिविधि में प्रसन्न नहीं होता है, गतिविधि के आनंद में लीन नहीं रहता है। वह गपशप में आनंद नहीं लेता है, गपशप में प्रसन्न नहीं होता है, गपशप के आनंद में लीन नहीं रहता है। उसे नींद में आनंद नहीं आता, नींद से खुशी नहीं मिलती, और न ही वह नींद के आनंद पर ध्यान केंद्रित करता है। ये तीन बातें ही प्रशिक्षण ले रहे भिक्षु को पथभ्रष्ट होने से बचाती हैं।
गतिविधि का आनंद लेना,

बातचीत में आनंद लेते हुए,

नींद का आनंद लेना,

& बेचेन होना:

वह असमर्थ है

—इस तरह का एक भिक्षु—

स्पर्श करने का अतिशयोक्तिपूर्ण

आत्मजागरूकता।

इसलिए उसे कम कर्तव्यों वाला व्यक्ति होना चाहिए।

छोटे आलसी का,

बेचैन नहीं।

वह सक्षम है

—इस तरह का एक भिक्षु—

स्पर्श करने का अतिशयोक्तिपूर्ण

आत्मजागरूकता।

नोट:

1. गतिविधि = विभिन्न प्रकार के काम, जैसे निर्माण कार्य, वस्त्र बनाना, आदि। SN 7:17 और थिग 13:2 देखें।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 80. विटक्कसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 79 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 80 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 81

80. वितक्कसुत्तम (व्यर्थ विचार)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया था, अरहंत द्वारा कहा गया था, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, तीन प्रकार के अकुशल विचार होते हैं। वे कौन से तीन हैं? तिरस्कृत न होने की इच्छा से संबंधित विचार; [1] लाभ, भेंट और भेंट से संबंधित विचार; [2] दूसरों के प्रति सहानुभूति से संबंधित विचार। अकुशल विचार तीन प्रकार के होते हैं।"

जंजीरों में जकड़ा हुआ

तिरस्कृत नहीं होना चाहते;

लाभ, भेंट, सम्मान के लिए;

साथियों के साथ आनंद लेना:

आप बंधनों के अंत से बहुत दूर हैं।

लेकिन यहाँ जो भी हो,

त्यागने के बाद

बेटों,

पशु,

शादी,

घनिष्ठ संबंधियों:

वह सक्षम है

—इस तरह का एक भिक्षु—

स्पर्श करने का अतिशयोक्तिपूर्ण

आत्मजागरूकता।

टिप्पणी:

1. एएन 3:102 देखें।
2. टीका के अनुसार, यह भिक्षु की आम लोगों के साथ अत्यधिक घनिष्ठता, उनके उतार-चढ़ाव के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होने, "उनके सुख में प्रसन्न होने, उनके दुख में दुखी होने, और उनके मामलों में व्यस्त रहने" की प्रवृत्ति को संदर्भित करता है।
यह भी देखें: एसएन 17:5; एसएन 17:8; थिग 5:6
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 81. सक्करसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 80 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 81 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 82

81. सक्करासुत्तम (अर्पण एवं सम्मान ग्रहण करना)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, मैंने ऐसे प्राणियों को देखा है जो अर्पण ग्रहण करने से पराजित हो जाते हैं, शरीर के टूटने पर, मृत्यु के बाद, वे अभाव के लोक में, एक बुरे गंतव्य में, एक निम्न लोक में, नरक में पुनः प्रकट होते हैं, उनका मन व्याकुल हो जाता है। मैंने ऐसे प्राणियों को भी देखा है जो

अर्पण ग्रहण न करने से पराजित हो जाते हैं—उनका मन व्याकुल हो जाता है—शरीर के टूटने पर, मृत्यु के बाद, वे अभाव के लोक में, एक बुरे गंतव्य में, एक निम्न लोक में, नरक में पुनः प्रकट होते हैं। मैंने ऐसे प्राणियों को भी देखा है जो अर्पण ग्रहण करने और न करने दोनों से पराजित हो जाते हैं—उनका मन व्याकुल हो जाता है—शरीर के टूटने पर, मृत्यु के बाद, वे अभाव के लोक में, एक बुरे गंतव्य में, एक निम्न लोक में, नरक में पुनः प्रकट होते हैं।

"यह किसी अन्य तपस्वी (भिक्षु) से सुनने से नहीं है या हे ब्राह्मण (पुजारी), मैं कहता हूँ, 'मैंने ऐसे प्राणियों को देखा है जो भेंट ग्रहण करने से पराजित होकर व्याकुल हो जाते हैं—मृत्यु के बाद शरीर के विखंडन पर, अभाव के लोक में, एक बुरे गंतव्य में, एक निम्न लोक में, नरक में पुनः प्रकट होते हैं। मैंने ऐसे प्राणियों को भी देखा है जो भेंट ग्रहण न करने से पराजित होकर व्याकुल हो जाते हैं—मृत्यु के बाद शरीर के विखंडन पर, उनका मन व्याकुल हो जाता है, अभाव के लोक में, एक बुरे गंतव्य में, एक निम्न लोक में, नरक में पुनः प्रकट होते हैं। मैंने ऐसे प्राणियों को भी देखा है जो भेंट ग्रहण करने और न करने दोनों से पराजित होकर व्याकुल हो जाते हैं—मृत्यु के बाद शरीर के विखंडन पर, अभाव के लोक में, एक बुरे गंतव्य में, एक निम्न लोक में, नरक में पुनः प्रकट होते हैं।'

"बल्कि, मैंने स्वयं इसे जाना है, स्वयं देखा है, स्वयं इसका अवलोकन किया है, इसलिए मैं कहता हूँ, 'मैंने ऐसे प्राणियों को देखा है जो भेंट ग्रहण करने से पराजित हो जाते हैं—उनका मन व्याकुल हो जाता है—मृत्यु के बाद शरीर के विखंडन पर, अभाव के एक लोक में, एक बुरे गंतव्य में, एक निम्न लोक में, नरक में पुनः प्रकट होते हैं। मैंने ऐसे प्राणियों को भी देखा है जो भेंट ग्रहण न करने से पराजित हो जाते हैं—उनका मन व्याकुल हो जाता है—मृत्यु के बाद शरीर के विखंडन पर, अभाव के एक लोक में, एक बुरे गंतव्य में, एक निम्न लोक में, नरक में पुनः प्रकट होते हैं।'"
भेंट प्राप्त करते समय दोनों

& नहीं,

उनकी समाधि (सम्मोहन अवस्था)

अविचलित रहता है;

वह रहता है

सतर्क (बिना आलस्य के):

वह निरंतर ध्यान (सम्मोहन) में लीन रहता था।

आनंदमय, सजग, विपस्सकम (ध्यान में अंतर्दृष्टि से लीन),

आसक्ति के अंत का आनंद लेना—

उसे पुरुष कहा जाता है

ईमानदारी का।

नोट: विपस्सकम - यहाँ इसका तात्पर्य विपश्यना ध्यान से है, अर्थात् समभाव में आंतरिक घटनाओं (शरीर, भावनाएँ, संवेदनाएँ, मन) के प्रति जागरूक होना।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 82. देवसद्दसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 81 <<<पिछला॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 82॥ अगला >>> इतिवुत्तक 83

82. देवसद्दसुत्तम (देवों का उत्सव)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, ये तीन दिव्य ध्वनियाँ उचित अवसरों पर देवों (देवदूतों) के बीच गूंजती हैं। वे तीन कौन सी हैं?

जब कोई श्रेष्ठ जनों का शिष्य अपने बाल और दाढ़ी मुंडवाकर, गेरुए वस्त्र धारण करके, गृहस्थ जीवन छोड़कर बेघर होने का निश्चय करता है, उस अवसर पर देवों के बीच यह दिव्य ध्वनि गूंजती है: 'इस श्रेष्ठ जनों के शिष्य ने
मार (राक्षस/मृत्यु के देवता) से युद्ध करने का निश्चय किया है।' यह पहली दिव्य ध्वनि है जो उचित अवसरों पर देवों (देवदूतों) के बीच गूंजती है।

"जब कोई श्रेष्ठ जनों का शिष्य सात गुणों को विकसित करने के लिए समर्पित जीवन व्यतीत करता है जो ज्ञानोदय के पंख हैं,[1] उस अवसर पर देवों के बीच यह दिव्य ध्वनि गूंजती है: 'यह श्रेष्ठ जनों का शिष्य मार से युद्ध कर रहा है।' यह दूसरी दिव्य ध्वनि है जो उचित अवसरों पर देवताओं के बीच गूंजती है।

"जब श्रेष्ठ जनों का कोई शिष्य आसवों (इच्छाओं/इच्छाओं) के अंत के द्वारा आसव (इच्छा/इच्छा) रहित चेतना में मोक्ष और मोक्ष की अवस्था में प्रत्यक्ष ज्ञान के साथ निवास करता है, और स्वयं इस क्षण में इसे प्रत्यक्ष रूप से जानता और अनुभव करता है, तब देवताओं (देवदूतों) के बीच यह दिव्य ध्वनि गूंजती है: 'श्रेष्ठ जनों के इस शिष्य ने युद्ध जीत लिया है। युद्ध की अग्रिम पंक्ति में रहकर, अब वह विजयी अवस्था में निवास करता है।' यह तीसरी दिव्य ध्वनि है जो उचित अवसरों पर देवताओं के बीच गूंजती है।

"ये तीन दिव्य ध्वनियाँ हैं जो उचित अवसरों पर देवताओं के बीच गूंजती हैं।"
यह देखकर कि उसने लड़ाई जीत ली है

—धर्मी का शिष्य

स्वयंजागृत व्यक्ति (बुद्ध का)—

यहां तक कि देवदूत भी उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

इस महान व्यक्ति के लिए, जो पूरी तरह से परिपक्व है।

हे श्रेष्ठ पुरुष, आपको नमन—

आप जिन्होंने कठिन विजय प्राप्त की है,

मृत्यु की सेना को पराजित करना,

अबाधित

मोक्ष, निर्वाण।

इस प्रकार वे देवों (देवदूतों) को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

जो अपने लक्ष्य तक पहुँच चुका हो,

क्योंकि वे उसमें कोई साधन नहीं देखते [2]

इससे वह मृत्यु के वश में आ जाएगा।

टिप्पणी:
1. जागृति के पंख हैं ध्यान की चार स्थापनाएँ, चार उचित प्रयास, शक्ति के चार आधार, पाँच इंद्रियाँ, पाँच सामर्थ्य, जागृति के सात कारक और आर्य अष्टांगिक मार्ग।
2. श्रीलंका संस्करण के साथ 'ना पासंती' का पाठ करें। थाई संस्करण में 'नमस्संती' लिखा है, जिसका अर्थ है "वे सम्मान करते हैं", जो अर्थहीन है।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 83. पंचपुब्बनिमित्तसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 82 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 83 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 84

83. पंचपुब्बनिमित्तसुत्तम् (जब स्वर्ग में देवदूतों का समय समाप्त हो जाता है)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, जब कोई देव (देवदूत) देवों (देवदूतों) की संगति से विदा होने वाला होता है, तो पाँच शगुन प्रकट होते हैं: उसकी मालाएँ मुरझा जाती हैं, उसके वस्त्र मैले हो जाते हैं, उसकी बगलों से पसीना निकलता है, उसके शरीर पर सुस्ती छा जाती है, वह अपने देव आसन में आनंदित नहीं रहता। देव (देवदूत), यह जानकर कि 'यह देवपुत्र विदा होने वाला है,' उसे तीन बातों से प्रोत्साहित करते हैं: 'हे आदरणीय, यहाँ से किसी अच्छे गंतव्य की ओर जाइए। अच्छे गंतव्य पर जाकर, जो लाभ प्राप्त करना उचित हो, उसे प्राप्त कीजिए। जो लाभ प्राप्त करना उचित हो, उसे प्राप्त करके, सुस्थापित हो जाइए।'" जब यह कहा गया, तो एक भिक्षु ने भगवान बुद्ध से कहा, "हे प्रभु, अच्छे गंतव्य पर जाने के बारे में देवों की क्या धारणा है? उनकी धारणा क्या है? वह लाभ जिसे प्राप्त करना अच्छा है? उनके अनुसार सुस्थापित होना क्या है? "हे भिक्षुओं, मनुष्य अवस्था[1] देवताओं के अनुसार एक अच्छे
गंतव्य की ओर जाने का तरीका है। मनुष्य बनकर, तथागत (बुद्ध) द्वारा सिखाए गए धम्म-और-विनय में दृढ़ विश्वास प्राप्त करना: यही देवताओं के अनुसार वह लाभ है जिसे प्राप्त करना अच्छा है। जब वह विश्वास किसी के भीतर दृढ़, स्थिर और मजबूत हो जाता है, जिसे किसी ब्राह्मण (पुजारी), तपस्वी (भिक्षु), देव (देवदूत), मार (मृत्यु के देवता), ब्रह्मा (प्रधान देवदूत), या संसार में किसी और द्वारा नष्ट नहीं किया जा सकता: यही देवताओं के अनुसार सुस्थापित होना है।"
जब कोई देवदूत (फ़रिश्ता) देहांत प्राप्त करता है

देवताओं की संगति से

अपने जीवनकाल के अंत तक,

तीन ध्वनियाँ सुनाई देती हैं

—देवताओं का प्रोत्साहन।

'जाओ यहाँ से,

माननीय महोदय,

एक अच्छे भाग्य की ओर,

साथ के लिए

मनुष्यों के साथ।

मनुष्य बनने पर,

दोषसिद्धि प्राप्त करना

नायाब

सच्चे धम्म में।

आपका वह दृढ़ विश्वास

सच्चे धम्म में, अच्छी तरह से शिक्षित,

इसका निपटारा होना चाहिए।

जड़ से जुड़ा हुआ,

स्थापित,

—अक्षयित

जब तक आप जीवित रहें।

त्यागने के बाद

शारीरिक दुर्व्यवहार,

मौखिक दुर्व्यवहार,

मानसिक दुराचार,

और जो कुछ भी अन्य त्रुटिपूर्ण है;

शरीर से कुशलतापूर्वक किए गए कार्य को पूरा करने के बाद,

और बहुत से लोग बोलने में कुशल हैं,

जो कुशल है उसे करने के बाद

असीम हृदय के साथ,

बिना किसी अभिग्रहण (मानसिक गुण/इच्छा) के,

फिर—गुणों को बहुत महत्व देने के बाद

यह स्वर्ग में स्वतः उत्पन्न होने का एक आधार है।

दान देकर—

अन्य नश्वरों को स्थापित करें

सच्चे धम्म में और

पवित्र ब्रह्मचर्य जीवन।'

इस सहानुभूति के साथ, देवों ने—

जब उन्हें पता चलता है कि कोई देवता देहांत में जा रहा है—

उसे प्रोत्साहित करें:

'वापस आ जाओ, देवा,'

फिर फिर।'

नोट: 1. थाई संस्करण में भिक्खवे शब्द का प्रयोग किया गया है। बर्मी और श्रीलंकाई संस्करणों में भिक्खु शब्द का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ है "भिक्षु"।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 84. बहुजनहितासुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 83 <<<पिछला || त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 84 || अगला >>> इतिवुत्तक 85

84. बहुजनहितसुत्तम् (अनेक के कल्याण के लिए)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, ये तीन व्यक्ति, संसार में प्रकट होकर, अनेक के कल्याण, अनेक के सुख, संसार के प्रति सहानुभूति रखते हुए, मनुष्य और दैवीय प्राणियों के कल्याण, लाभ और सुख के लिए प्रकट होते हैं। वे कौन से तीन हैं? "एक मामला यह है कि तथागत (बुद्ध) संसार में प्रकट होते हैं, योग्य और सही मायने में आत्म-जागृत, स्पष्ट ज्ञान और आचरण में परिपूर्ण, सुसंस्कृत, ब्रह्मांड के संबंध में विशेषज्ञ, वश में किए जाने वाले लोगों के अद्वितीय प्रशिक्षक, मनुष्य और दैवीय प्राणियों के गुरु, जागृत, बुद्ध। वे धर्म का उपदेश देते हैं जो आरंभ में प्रशंसनीय, मध्य में प्रशंसनीय और अंत में प्रशंसनीय है। वे पवित्र ब्रह्मचर्य जीवन की घोषणा करते हैं, जो अपने विशिष्ट स्वरूपों और सार में पूर्णतः परिपूर्ण और अत्यंत शुद्ध है। यह वह पहला व्यक्ति है जो संसार में प्रकट होकर अनेकों के कल्याण, अनेकों की खुशी और संसार के प्रति सहानुभूति के साथ,
मानव एवं दिव्य प्राणियों के कल्याण, लाभ और सुख के लिए प्रकट होता है।

"इसके अतिरिक्त, उस गुरु का एक योग्य शिष्य है, जिसके आसव (इच्छाएँ/इच्छाएँ) क्षीण हो चुके हैं, जिसने पूर्णता प्राप्त कर ली है, कार्य पूरा कर लिया है, बोझ उतार दिया है, सच्चे लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है, होने के बंधन (भाव) को पूरी तरह से नष्ट कर दिया है, और जो सही दिव्य ज्ञान से मुक्त हो गया है। वह धर्म का उपदेश देता है जो आरंभ में प्रशंसनीय है, मध्य में प्रशंसनीय है और अंत में प्रशंसनीय है। वह पवित्र ब्रह्मचर्य जीवन की घोषणा करता है, जो अपने विशिष्ट स्वरूपों और सार में पूर्णतः परिपूर्ण और अत्यंत शुद्ध है। यह दूसरा व्यक्ति है जो संसार में प्रकट होकर अनेकों के कल्याण, अनेकों के सुख और संसार के प्रति सहानुभूति रखते हुए, मनुष्य और दिव्य प्राणियों के कल्याण, लाभ और सुख के लिए प्रकट होता है।

इसके अतिरिक्त, उस गुरु का एक शिष्य है जो प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले व्यक्ति के लिए अभ्यास का अनुसरण करता है,[1] विद्वान है, जिसने अच्छे आदतों और अभ्यासों में प्रवेश कर लिया है। वह भी धर्म का उपदेश देता है जो आरंभ में प्रशंसनीय है, मध्य में प्रशंसनीय है और अंत में प्रशंसनीय है। वह पवित्र ब्रह्मचर्य जीवन की घोषणा करते हैं, उसके विशिष्ट पहलुओं और सार दोनों में, जो पूर्णतः परिपूर्ण और अत्यंत शुद्ध है। यह वह तीसरा व्यक्ति है जो संसार में प्रकट होकर अनेकों के कल्याण, अनेकों की खुशी और संसार के प्रति सहानुभूति के साथ, मनुष्य और दिव्य प्राणियों के कल्याण, लाभ और सुख के लिए प्रकट होता है। "ये वे तीन व्यक्ति हैं जो संसार में प्रकट होकर अनेकों के कल्याण, अनेकों की खुशी और संसार के प्रति सहानुभूति के साथ, मनुष्य
और दिव्य प्राणियों के कल्याण, लाभ और सुख के लिए प्रकट होते हैं।"

शिक्षक (बुद्ध),

महान द्रष्टा

यह दुनिया में पहला है;

उसके पीछे-पीछे शिष्य

शांत मन से;

और फिर विद्वान व्यक्ति

जो प्रशिक्षणार्थी के लिए अभ्यास का पालन करता है,

अच्छी आदतें अपनाने के बाद,

अभ्यास।

ये तीनों, मुख्य

देवदूतों और मनुष्यों के बीच,

प्रकाश प्रदान करना, धम्म का प्रचार करना,

अमरता के द्वार खोल दो,

कई लोगों को गुलामी से मुक्त करें।

जो लोग मार्ग (मग्गा) का अनुसरण करते हैं,

कारवां के नेता (बुद्ध) द्वारा अच्छी तरह से शिक्षित।

अद्वितीय,

पीड़ा का अंत होगा

यहीं-

जो लोग इस संदेश पर ध्यान दे रहे हैं

तथागत (बुद्ध) का।

नोट:

1. सेक्खो पतिपदो। यह वाक्यांश एमएन 53 में भी मिलता है, जिसकी व्याख्या इसे दो शब्दों के रूप में नहीं, बल्कि एक संयुक्त शब्द के रूप में मानती है जिसका अर्थ है "वह जो सेक्खो-पतिपदा का अनुसरण करता है": दूसरे शब्दों में, वह व्यक्ति जिसने कम से कम ज्ञानोदय का पहला स्तर, धाराप्रवेश प्राप्त कर लिया है, लेकिन अभी तक अरहंत नहीं बना है।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 85. असुभानुपास्सुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।

इतिवुत्तक 84 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 85 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 86

85. असुभानुपस्सुत्तम् (सांसारिक अपवित्रता पर ध्यान):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"हे भिक्षुओं, शरीर की अशुद्धता पर ध्यान केंद्रित करो। अपने भीतर श्वास-प्रश्वास (अनापान ध्यान) को अच्छी तरह से स्थापित करो। सभी संस्कारों (आदतों/आदतों) की अस्थिरता पर ध्यान केंद्रित करो। जो शरीर की अशुद्धता पर ध्यान केंद्रित करता है, वह सौंदर्य के प्रति आसक्ति का त्याग कर देता है। जो अपने भीतर श्वास-प्रश्वास (अनापान ध्यान) को अच्छी तरह से स्थापित कर लेता है, उसके मन में बाहरी विचार और प्रवृत्तियाँ नहीं रहतीं। जो सभी संस्कारों (आदतों) की अस्थिरता पर ध्यान केंद्रित करता है, वह अज्ञान (अविज्जा) का त्याग कर देता है, और स्पष्ट ज्ञान उत्पन्न होता है।"
अपवित्रता पर ध्यान (पासी) करें

शरीर में,

सचेत

अनापान ध्यान (अनापान ध्यान) में श्वास लेने और छोड़ने पर ध्यान केंद्रित करना।

देख के

सभी संस्कारों (मनगढ़ंत बातों) का शांत होना

— उत्साही

हमेशा:

वह एक भिक्षु है

जिसने सही ढंग से देखा है।

उसे वहाँ से रिहा कर दिया गया।

प्रत्यक्ष ज्ञान का उस्ताद,

शांति में (एक योगी),

वह एक संत हैं

बंधनों से परे चला गया।

टिप्पणी:

पासी - विपश्यना ध्यान में सतर्कता को संदर्भित करता है।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 86. धम्मनुधम्मपतिपन्नसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 85 <<<पिछला॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 86॥ अगला >>> इतिवुत्तक 87

86. धम्मनुधम्मपतिपन्नसुत्तम् (धर्म के साथ धम्म का अभ्यास)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, जो भिक्षु धम्म के अनुसार धम्म का अभ्यास करते हैं, उनके धम्म के अनुसार अभ्यास करने के इस तरीके को ही धम्म के अनुसार धम्म का अभ्यास करने वाला कहा जाना चाहिए। बोलते समय वे धम्म की बात करते हैं, अधर्म की नहीं। सोचते समय वे धम्म के बारे में सोचते हैं, अधर्म के बारे में नहीं। इन दोनों चीजों से दूर रहकर वे वैरागी, एकाग्र (ध्यान में) और पूर्णतः सचेत रहते हैं।"
धम्म (धर्म) उसका निवास स्थान है।

धम्म ही उसका आनंद है।

धम्म पर चिंतन करता हुआ एक भिक्षु,

धम्म का स्मरण करते हुए,

दूर नहीं होता

सच्चे धम्म से। [1]

चाहे पैदल चलना हो,

खड़े होना,

बैठे हुए, या

लेटना

उसका मन आंतरिक रूप से संयमित था।

वो आता है

पूर्ण शांति में।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 87. अन्धकारणसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 86 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 87 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 88

87. अंधकरणसुत्तम (अंधकार का निवारण)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, तीन प्रकार के अकुशल विचार हैं जो अंधकार उत्पन्न करते हैं, दृष्टिहीनता उत्पन्न करते हैं, ज्ञान की कमी उत्पन्न करते हैं, प्रत्यक्ष बोध (पन्न) के अंत की ओर ले जाते हैं, कष्ट का पक्ष लेते हैं, और निर्वाण (मुक्ति) के लिए अनुकूल नहीं हैं। वे तीन कौन से हैं? कामुकता से भरा विचार... द्वेष से भरा विचार। हानि से भरा विचार अंधापन उत्पन्न करता है, दृष्टिहीनता उत्पन्न करता है, ज्ञान की कमी उत्पन्न करता है, प्रत्यक्ष बोध (पन्न) के अंत की ओर ले जाता है, कष्ट का पक्ष लेता है, और निर्वाण (मुक्ति) के लिए अनुकूल नहीं है। ये तीन प्रकार के अकुशल विचार हैं जो अंधापन उत्पन्न करते हैं, दृष्टिहीनता उत्पन्न करते हैं, ज्ञान की कमी उत्पन्न करते हैं, प्रत्यक्ष बोध (पन्न) के अंत की ओर ले जाते हैं, कष्ट का पक्ष लेते हैं, और निर्वाण (मुक्ति) के लिए अनुकूल नहीं हैं।" (निर्वाण)।

"तीन प्रकार के कुशल चिंतन हैं जो अंधकार से मुक्ति, दृष्टि, ज्ञान, प्रत्यक्ष बोध (पन्न) को बढ़ावा देते हैं, दुःख से मुक्ति का पक्ष लेते हैं और निर्वाण की ओर अग्रसर होते हैं। वे तीन कौन से हैं? त्याग से युक्त चिंतन... द्वेष रहित चिंतन... अहिंसा से युक्त चिंतन... अहिंसा से युक्त चिंतन जो अंधत्व से मुक्ति, दृष्टि, ज्ञान, प्रत्यक्ष बोध (पन्न) को बढ़ावा देता है, दुःख से मुक्ति का पक्ष लेता है और निर्वाण की ओर अग्रसर होता है। ये तीन प्रकार के कुशल चिंतन हैं जो अंधकार से मुक्ति, दृष्टि, ज्ञान, प्रत्यक्ष बोध (पन्न) को बढ़ावा देते हैं, दुःख से मुक्ति का पक्ष लेते हैं और निर्वाण की ओर अग्रसर होते हैं।"
तीन कुशल विचार

ऐसा सोचना चाहिए,

तीन अकुशल विचार

अस्वीकार कर दिया।

जो भी विचारों और मूल्यांकनों को शांत करता है

—जैसे बारिश से धूल का बादल उठता है—

सोच को शांत करते हुए जागरूकता के माध्यम से,

यहीं पहुँचता है

राज्य

शांति की।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 88. अंतरमालासुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 87 <<<पिछला॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 88॥ अगला >>> इतिवुत्तक 89

88. अंतर्मलसुत्तम (आंतरिक दोष/शत्रु)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, ये तीन आंतरिक दोष हैं, आंतरिक शत्रु, आंतरिक विरोधी, आंतरिक हत्यारे, आंतरिक प्रतिद्वंद्वी। वे तीन कौन से हैं? लोभ एक आंतरिक दोष है, आंतरिक शत्रु है, आंतरिक प्रतिद्वंद्वी है, आंतरिक हत्यारा है, आंतरिक प्रतिद्वंद्वी है। घृणा एक आंतरिक दोष है। मोह एक आंतरिक दोष है, आंतरिक शत्रु है, आंतरिक प्रतिद्वंद्वी है, आंतरिक हत्यारा है, आंतरिक प्रतिद्वंद्वी है। ये तीन आंतरिक दोष हैं, आंतरिक शत्रु हैं, आंतरिक प्रतिद्वंद्वी हैं, आंतरिक हत्यारे हैं,
आंतरिक प्रतिद्वंद्वी हैं।”
लालच नुकसानदेह होता है।

लालच मन को उत्तेजित करता है।

लोगों को इसका एहसास नहीं है

एक ऐसे खतरे के रूप में जो भीतर से ही उत्पन्न होता है।

जब कोई व्यक्ति लालची होता है,

उसे अपनी भलाई की भी परवाह नहीं है;

जब लालची,

धम्म को नहीं देखता।

लालच से अभिभूत होकर,

वह अंधेरे में है, अंधा है।

लेकिन जब कोई लालच का त्याग कर देता है,

कोई लालच महसूस नहीं करता

किस बात के लिए लालच जायज होगा?

उससे लोभ दूर हो जाता है—

पानी की एक बूंद की तरह

कमल के पत्ते से।

घृणा हानि का कारण बनती है।

घृणा मन को उत्तेजित करती है।

लोगों को इसका एहसास नहीं है

एक ऐसे खतरे के रूप में जो भीतर से ही उत्पन्न होता है।

जब कोई व्यक्ति अप्रिय होता है,

उसे अपनी भलाई की भी परवाह नहीं है;

जब अप्रिय हो,

धम्म को नहीं देखता।

घृणा से अभिभूत

वह अंधेरे में है, अंधा है।

लेकिन जब कोई घृणा को त्यागकर,

कोई घृणा महसूस नहीं करता

किस बात से घृणा उत्पन्न हो सकती है?

उसके मन से घृणा दूर हो जाती है—

जैसे ताड़ का पत्ता तने से अलग हो जाता है।

भ्रम हानिकारक होता है।

भ्रम मन को उत्तेजित करता है।

लोगों को इसका एहसास नहीं है

एक ऐसे खतरे के रूप में जो भीतर से ही उत्पन्न होता है।

जब कोई व्यक्ति भ्रमित हो जाता है,

उसे अपनी भलाई की भी परवाह नहीं है;

जब भ्रमित हो,

धम्म को नहीं देखता।

भ्रम से ग्रस्त

वह अंधेरे में है, अंधा है।

लेकिन जब कोई व्यक्ति भ्रम को त्यागकर,

किसी भ्रम का अनुभव नहीं करता

किस बात को भ्रम की श्रेणी में रखा जा सकता है?

वह सभी भ्रमों को दूर करता है।

जैसे ही सूर्योदय होता है, अंधेरा छा जाता है।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 89. देवदत्तसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 88 <<<पिछला II त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 89 II अगला >>> इतिवुत्तक 90

89. देवदत्तसुत्तम (देवदत्त के बारे में - नरक का दंड)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया था, अरहंत द्वारा कहा गया था, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, तीन प्रकार के झूठे धम्मों से पराजित होकर - उनका मन व्याकुल हो गया है - देवदत्त[1] एक युग के लिए असाध्य अभाव, नरक के दंड के लिए अभिशप्त हैं। वे तीन कौन से हैं? बुरी इच्छाओं से पराजित होकर - उनका मन व्याकुल हो गया है - देवदत्त एक युग की अवधि के लिए असाध्य अभाव, नरक के दंड के लिए अभिशप्त हैं। बुरे लोगों से मित्रता से पराजित होकर - उनका मन व्याकुल हो गया है - देवदत्त एक युग की अवधि के लिए असाध्य अभाव, नरक के दंड के लिए अभिशप्त हैं। और, आगे कुछ और किया जाना बाकी था, फिर भी उन्होंने विशिष्ट उपलब्धि के निम्न स्तर पर ही आधे रास्ते में रुक गए। इन तीन प्रकार के झूठे धम्मों से पराजित होकर - उनका मन व्याकुल हो गया है - देवदत्त असाध्य अभाव के दंड के लिए अभिशप्त हैं। युगों के लिए नरक में जाओ।"
दुनिया में कोई भी ऐसा न हो

हमेशा पुनर्जन्म होता रहेगा

बुरी इच्छा से।

जानते है कि

उसके माध्यम से

बुरी इच्छा,

उसका गंतव्य वह है

उन सभी लोगों में से जिनके मन में बुरी इच्छाएं हैं।

मैंने सुना है कि देवदत्त,

— बुद्धिमान, शांत स्वभाव का माना जाता है,

सम्मान से प्रज्वलित—

पूर्णतः जागरूक (स्वयं के भीतर)

तथागत (बुद्ध) पर हमला किया।

और वह चार द्वारों वाले उस भयानक स्थान पर गिर पड़ा:

अविची, पूर्णतः नरक।

जो कोई भी इसके खिलाफ साजिश रचता है

एक ऐसा व्यक्ति जो भ्रष्टाचार से मुक्त हो

जिसने कोई बुरा काम नहीं किया है:

वह बुराई उसे स्वयं भी छू लेती है।

मन से भ्रष्ट,

अपमानजनक।

जो कोई भी सोच सकता है

समुद्र को प्रदूषित करने के बारे में

जहर के घड़े के साथ,

सफल नहीं हो सके।

क्योंकि पानी की मात्रा बहुत अधिक है।

सो है

जब कोई गाली-गलौज से हमला करता है

तथागत (बुद्ध)

सही ही हुआ,

मन की शांति का—

उसे दुर्व्यवहार बिल्कुल भी सहन नहीं होता।

एक बुद्धिमान व्यक्ति को मित्र बनाने चाहिए।

संबद्ध करना चाहिए,

उसके जैसे व्यक्ति के साथ—

जिसका मार्ग एक भिक्षु अनुसरण कर सकता है

और अंत तक पहुंचें

पीड़ा और कष्ट का।

नोट: 1. बुद्ध के चचेरे भाइयों में से एक, देवदत्त ने संघ पर कब्ज़ा करने की साजिश रची और अंततः एक विभाजन का कारण बना। उसकी कहानी अध्याय 7 में बताई गई है। क्रमांक 18 भी देखें। उसकी "विशिष्ट उपलब्धि का निम्नतम स्तर" मानसिक शक्तियों पर उसकी महारत थी।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 90. अग्गप्पासदसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 89 <<<पिछला॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 90॥ अगला >>> इतिवुत्तक 91

90. अग्गप्पसादसुत्तम (विश्वास)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, विश्वास के ये तीन सर्वोच्च विषय हैं। वे तीन कौन से हैं? "जितने भी प्राणी हों—अंगहीन, दो पैरों वाले, चार पैरों वाले, अनेक पैरों वाले; सजीव या निराकार; बोधगम्य, अबोधगम्य, न बोधगम्य और न अबोधगम्य—उनमें तथागत (बुद्ध), योग्य और सही मायने में आत्म-जागृत, सर्वोच्च माने जाते हैं। जो लोग जागृत (बुद्ध) में विश्वास रखते हैं, वे सर्वोच्च में विश्वास रखते हैं; और जो सर्वोच्च में विश्वास रखते हैं, उन्हें सर्वोच्च ही परिणाम मिलता है।"

सभी धर्मों में, चाहे वे सृजित हों या असृजित, वैराग्य—नमग्नता पर काबू पाना, प्यास बुझाना, आसक्ति को जड़ से उखाड़ फेंकना, चक्र तोड़ना, तृष्णा का नाश करना, वैराग्य, निश्चिंतता, निर्वाह और मुक्ति की प्राप्ति—सर्वोच्च माना जाता है। वैराग्य धर्म में विश्वास रखने वालों को सर्वोच्च में विश्वास होता है; और सर्वोच्च में विश्वास रखने वालों को सर्वोच्च ही परिणाम प्राप्त होता है।

सभी सृजित गुणों में, श्रेष्ठ अष्टांगिक मार्ग—सही दृष्टि, सही संकल्प, सही वाणी, सही कर्म, सही आजीविका, सही प्रयास, सही जागरूकता और सही समाधि—सर्वोच्च माना जाता है। श्रेष्ठ मार्ग के धर्म में विश्वास रखने वालों को सर्वोच्च में विश्वास होता है; और सर्वोच्च में विश्वास रखने वालों को सर्वोच्च ही परिणाम प्राप्त होता है। चाहे कितने भी समुदाय या समूह हों, तथागत (बुद्ध) के शिष्यों का संघ (भिक्षु पंथ) सर्वोच्च माना जाता है—अर्थात्, चार [महान शिष्यों के समूह] जब जोड़े में लिए जाते हैं, और आठ जब व्यक्ति के रूप में लिए जाते हैं।[1] संघ में विश्वास रखने वाले सर्वोच्च में विश्वास रखते हैं; और सर्वोच्च में विश्वास रखने वालों को सर्वोच्च परिणाम प्राप्त होता है। "ये, भिक्षुओं, विश्वास के तीन सर्वोच्च लक्ष्य हैं।"
साथ

आत्मविश्वास,

सर्वोच्च धम्म का अहसास करना

सर्वोच्च होना;

सर्वोच्च बुद्ध में विश्वास,

नायाब

योग्य भेंटों में;

सर्वोच्च धम्म में विश्वास,

शांति और वैराग्य का आनंद;

सर्वोच्च संघ (भिक्षुओं के संप्रदाय) में विश्वास,

नायाब

योग्यता के क्षेत्र के रूप में;

सर्वोच्च सत्ता को उपहार देने के बाद,

व्यक्ति में सर्वोच्च योग्यता का विकास होता है।

सर्वोच्च दीर्घायु और सौंदर्य,

स्थिति, सम्मान,

आनंद और शक्ति।

सर्वोच्च सत्ता को देने के बाद,

एकाग्रचित्त व्यक्ति (समाधि की अवस्था में)

सर्वोच्च धम्म में,

चाहे दिव्य बनना हो या मनुष्य बनना हो,

प्रसन्न होता है,

सर्वोच्च अवस्था को प्राप्त कर लिया है।

नोट: 1. श्रेष्ठ शिष्यों के चार समूहों को जब युग्मों में लिया जाता है, तो वे हैं जिन्होंने (1) धारा-प्रवेश का मार्ग और धारा-प्रवेश का फल; (2) पुनर्जन्म का मार्ग और पुनर्जन्म का फल; (3) पुनर्जन्म रहित मार्ग और पुनर्जन्म रहित का फल; और (4) अरहंतत्व का मार्ग और अरहंतत्व का फल प्राप्त किया है। प्रत्येक उपलब्धि को अलग-अलग लेने पर आठ "व्यक्ति" प्राप्त होते हैं। यह इतिवुत्तक लगभग एएन 4:34 के समान है।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 91. जीविकासुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 90 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 91 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 92

91. जीविकासुत्तम (आजीविका के साधन)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, यह आजीविका का एक नीच साधन है, भिक्षा एकत्र करना। संसार में यह कहना एक प्रकार का अपमान है, 'तुम हाथ में कटोरा लेकर भिक्षा मांगने वाले की तरह घूमते हो!' फिर भी अच्छे परिवारों के समझदार युवकों ने इसे एक ठोस कारण से अपनाया है। उन्हें राजाओं या लुटेरों द्वारा, न ही ऋण, भय, या आजीविका के नुकसान के कारण, बल्कि इस विचार से विवश किया गया है: 'हम जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु से, दुखों, विलापों, पीड़ाओं, कष्टों और निराशाओं से घिरे हुए हैं, दुखों से घिरे हुए हैं, दुखों से अभिभूत हैं। हे, इस पूरे दुख और पीड़ा के अंत का ज्ञान हो जाए!' लेकिन अच्छे परिवार का यह युवक, इस मार्ग पर चलकर, इंद्रिय सुखों का लोभी हो सकता है,

उसकी वासनाएँ प्रबल हो सकती हैं, उसका मन द्वेषपूर्ण हो सकता है, उसके संकल्प भ्रष्ट हो सकते हैं, उसकी चेतना विचलित हो सकती है, वह लापरवाह हो सकता है, ध्यान का अभ्यास नहीं कर सकता, उसका मन बिखरा हुआ हो सकता है और उसकी इंद्रियाँ अनियंत्रित हो सकती हैं। जैसे किसी चिता से जलती हुई, बीच में मल से ढकी हुई लकड़ी का उपयोग न तो गाँव में होता है और न ही जंगल में: मैं तुमसे कहता हूँ कि यह इस व्यक्ति के लिए एक उपमा है। वह गृहस्थ के सुखों से वंचित है और तपस्वी जीवन के उद्देश्य को पूरा नहीं करता।
उसे मौका नहीं मिला

गृहस्थ के आनंद पर

और तपस्वियों (भिक्षुओं) के जीवन का उद्देश्य

दुर्भाग्यशाली व्यक्ति!

इसे बर्बाद करके वह इसे फेंक देता है।

नहीं बचेगा

जैसे किसी अंत्येष्टि में जलती हुई मशाल का इस्तेमाल किया जाता है।

लोहे की गेंद खाना बेहतर है

—चमकते हुए, जलते हुए—

इससे भी बढ़कर, सिद्धांतहीन और

अनियंत्रित,

उसे देश की भीख खानी चाहिए।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 92. संघटिकन्नसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 91 <<<पिछला॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 92॥ अगला >>> इतिवुत्तक 93

92. संघटिकन्नसुत्तम् (सही अनुसरण)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"हे भिक्षुओं, यदि कोई भिक्षु मेरे बाहरी वस्त्र को धारण करके मेरे पीछे-पीछे चले, अपने पैर मेरे पदचिह्नों पर रखे, फिर भी यदि वह इंद्रिय सुखों के प्रति लालची हो, अपने कामों में प्रबल हो, मन में द्वेष हो, अपने संकल्पों में भ्रष्ट हो, उसकी चेतना विचलित हो, वह सतर्क न हो, ध्यान का अभ्यास न करता हो, उसका मन बिखरा हुआ हो, और उसकी इंद्रियां अनियंत्रित हों, तो वह मुझसे दूर होगा, और मैं उससे दूर। ऐसा क्यों है? क्योंकि वह धम्म को नहीं देखता। धम्म को न देखकर वह मुझे नहीं देखता।" "परन्तु यदि कोई भिक्षु सौ मील दूर भी रहता

हो, फिर भी यदि वह इंद्रिय सुखों के प्रति लालची न हो, अपने कामों में प्रबल न हो, मन में द्वेष न हो, अपने संकल्पों में निष्कलंक न हो, उसकी चेतना स्थिर हो, वह सतर्क हो, ध्यान का अभ्यास करता हो, उसका मन जब वह एकाग्रचित्त होता है और अपनी इंद्रियों को अच्छी तरह नियंत्रित रखता है, तब वह मेरे निकट होता है और मैं उसके निकट। ऐसा क्यों है? क्योंकि वह धम्म को देखता है। धम्म को देखकर वह मुझे देखता है।
हालांकि ठीक पीछे चलते हुए,

महत्वाकांक्षी, नाराज:

देखो वो कितनी दूर है!

विक्षुब्ध

जो अविचलित है,

सीमा

अनबाउंड से,

लालची व्यक्ति

उससे जिसमें लालच नहीं है।

लेकिन वह बुद्धिमान व्यक्ति जो, इसके माध्यम से

धम्म का प्रत्यक्ष ज्ञान,

धम्म का दिव्य जागरण,

अभी भी और अविचलित रूप से बढ़ता है

जैसे कोई झील हवा से अप्रभावित हो:

देखो वो कितना करीब है!

अविचलित से अविचलित तक,

असीम से असीम तक (निर्वाण प्राप्त करना),

निःसंकोची

उस व्यक्ति के लिए जिसमें लालच नहीं है।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 93. अग्गिसुट्टम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 92 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 93 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 94

93. अग्गिसुत्तम (नरक की अग्नि, पुनर्जन्म)

यह बात भगवान बुद्ध (भागवत) ने कही थी, अरहंत ने कही थी, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, ये तीन अग्नियाँ हैं। कौन सी तीन? राग की अग्नि, दोष की अग्नि, मोह की अग्नि। ये तीन अग्नियाँ हैं।"
नश्वर शरीर में राग की आग जलती रहती है।

आनंद लेते हुए,

मोहित हो जाना

कामुक इच्छाएँ;

द्वेषपूर्ण व्यक्ति में घृणा की अग्नि

जीवन लेना;

भ्रमित व्यक्ति में भ्रम की आग

अज्ञानी

उस महान शिक्षा का।

इन आग की घटनाओं को न समझ पाने वाले लोग

—स्वयं की पहचान के शौकीन—

मारा (शैतान) के बंधनों से मुक्त नहीं हुआ,

नरक की संख्या बढ़ाना,

सामान्य जानवरों, राक्षसों के गर्भ,

भूखे भूतों का लोक।

जबकि वे लोग जो दिन-रात,

समर्पित हैं

संदेश के लिए

सही मायने में आत्मजागृत व्यक्ति का,

राग की आग बुझा दो।

लगातार गड़बड़ी का आभास होना।

वे, असाधारण लोग,

घृणा की आग बुझा दो

सद्भावना के साथ,

और भ्रम की आग

प्रत्यक्ष समझ (पन्ना) के साथ जो आगे ले जाती है

प्रवेश के लिए।

वे, कुशल, दिन-रात अथक परिश्रम करने वाले,

आग बुझाने के बाद,

शेषफल के बिना,

पीड़ा को समझा,

शेषफल के बिना हैं,

पूर्णतः बंधनमुक्त (निर्वाण प्राप्त कर लेता है)।

वे, बुद्धिमान लोग, ज्ञान प्राप्ति करने वाले के साथ

महान दृष्टि,

सही दिव्य जागृति,

सीधे तौर पर जानना

जन्म का अंत,

आगे कोई पुनर्जन्म न हो।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 94. उपपरिक्खसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 93 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 94 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 95

94. उपपरिक्खसुत्तम (जांच)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, एक भिक्षु को इस प्रकार जांच करनी चाहिए कि उसकी चेतना न तो बाह्य रूप से बिखरी हुई हो और न ही आंतरिक रूप से स्थिर हो; वह आसक्ति/पोषण के अभाव में विचलित न हो, और भविष्य के जन्म, वृद्धावस्था, मृत्यु या दुख की उत्पत्ति न हो।”
एक भिक्षु के लिए जिसने त्याग दिया है

सात संलग्नक

और गाइड को काटें: [2]

जन्म में भटकना

समाप्त हो गया है;

उसके लिए है,

आगे और नहीं बढ़ना।

टिप्पणी
1. एमएन 138 में, आदरणीय महाकच्छायन इस गूढ़ कथन की निम्नलिखित व्याख्या प्रस्तुत करते हैं: “चेतना को बाह्य रूप से बिखरी हुई और फैली हुई क्यों नहीं कहा जाता? एक स्थिति यह है कि जब किसी रूप को आँखों से देखा जाता है, तो चेतना उस रूप के विषय के प्रवाह का अनुसरण नहीं करती, न ही उस रूप के विषय के आकर्षण से बंधी होती है। चेतना को बाह्य रूप से बिखरी हुई और फैली हुई नहीं कहा जाता। [अन्य इंद्रियों के साथ भी ऐसा ही है।] “और मन को आंतरिक रूप से स्थित क्यों नहीं कहा जाता? एक स्थिति यह है कि एक भिक्षु, जो कामुकता से पूर्णतः विरक्त है, अकुशल गुणों से विरक्त है, प्रथम ध्यान (समाधि) में प्रवेश करता है और उसमें बना रहता है: एकांत से उत्पन्न परमानंद और आनंद, निर्देशित विचार और मूल्यांकन के साथ।” उनकी चेतना एकांतवास से उत्पन्न परमानंद और आनंद के बहाव का अनुसरण नहीं करती, न ही एकांतवास से उत्पन्न परमानंद और आनंद के आकर्षण से बंधी, जकड़ी या जुड़ी होती है। [इसी प्रकार द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ ध्यान (सम्मोहन अवस्था) में भी होता है।] कहा जाता है कि मन आंतरिक रूप से स्थित नहीं होता। “और आसक्ति/पोषण के अभाव से अविचलितता कैसे उत्पन्न होती है? एक ऐसा मामला है जहाँ श्रेष्ठ पुरुषों का एक दीक्षित शिष्य—जो श्रेष्ठ पुरुषों का आदर करता है, उनके धर्म में पारंगत और अनुशासित है; जो सत्यनिष्ठ पुरुषों का आदर करता है, उनके धर्म

में पारंगत और अनुशासित है—रूप को आत्मा नहीं मानता, न ही आत्मा को रूप धारण करने वाला मानता है, न ही रूप को आत्मा में, न ही आत्मा को रूप में। उनका रूप परिवर्तनशील और अस्थिर होता है, परन्तु उनकी चेतना नहीं बदलती—क्योंकि रूप के परिवर्तनशील और अस्थिरता के कारण वह रूप के परिवर्तन के अनुसार परिवर्तित होती है। रूप परिवर्तन के कारण या अकुशल मानसिक गुणों के सह-उत्पत्ति से उत्पन्न किसी भी व्याकुलता से उसका मन ग्रस्त नहीं होता। और क्योंकि उसकी चेतना व्याकुल नहीं होती, इसलिए वह न तो भयभीत होता है, न ही भयभीत होता है और न ही चिंतित होता है। [इसी प्रकार भावना (संवेदना), बोध, विचार और चेतना के समूह के साथ भी होता है।] "मित्रों, यही आसक्ति/पोषण के अभाव से उत्पन्न अहिंसा है।"
2. सात आसक्तियाँ हैं: राग, घृणा, मोह, मत, अहंकार, अपवित्रता और दुराचार। मार्गदर्शक है तृष्णा, जो पुनर्जन्म की ओर ले जाती है।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 95. कमुपापत्तिसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 94 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 95 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 96

95. कामुपपत्तिसुत्तम (इंद्रिय सुख प्राप्त करने के तरीके):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, इंद्रिय सुख प्राप्त करने के ये तीन तरीके हैं। वे तीन कौन से हैं? वे जिनके इंद्रिय सुख पहले से ही उपलब्ध हैं, वे जो सृजन में आनंद लेते हैं, और वे जो दूसरों द्वारा सृजित वस्तुओं पर नियंत्रण रखते हैं। ये तीन तरीके हैं इंद्रिय सुख प्राप्त करने के।"

देव (देवदूत)[1] जिनके सुख पहले से ही प्रदान किए गए हैं,

जिनके पास नियंत्रण है,

जो लोग सृष्टि में आनंद लेते हैं,

और अन्य सभी जो इंद्रिय सुखों का आनंद ले रहे हैं

इस राज्य में यहाँ

या कहीं और,

आगे मत बढ़ो

भटकते रहना।

इस कमी को जानते हुए

इंद्रिय सुखों में, बुद्धिमान

सभी इंद्रिय संबंधी इच्छाओं का त्याग कर देना चाहिए।

चाहे मानव

या दिव्य।

लालच के प्रवाह को रोककर

सुंदर, मोहक रूपों के लिए

पार पाना बहुत कठिन है,

शेषफल के बिना,

पीड़ा को समझा,

वे बिना किसी शेष के हैं,

पूर्णतः बंधनमुक्त (निर्वाण प्राप्त कर लेता है)।

वे, बुद्धिमान लोग, ज्ञान प्राप्ति करने वाले के साथ

महान दृष्टि,

सही दिव्य जागृति,

जन्म के अंत को प्रत्यक्ष रूप से जानना,

आगे किसी भी प्रकार का जन्म न होना (पुनर्जन्म)।

नोट: 1. जैसा कि इस आयत में स्पष्ट है, ये तीन श्रेणियाँ इंद्रिय सुख के स्वर्ग में स्थित देवों (देवदूतों) के तीन स्तरों को दर्शाती हैं। “नियंत्रण में रहने वाले” इन स्तरों में सबसे उच्च स्तर पर हैं।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 96. कामयोगसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 95 <<<पिछला || त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 96 || अगला >>> इतिवुत्तक 97

96. कामयोगसुत्तम (इंद्रिय सुख पुनर्जन्म का कारण बनता है)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"हे भिक्षुओं, जो कामुकता और पुनर्जन्म के बंधन में बंधे हैं, वे इस अवस्था में लौटते हैं। जो कामुकता के बंधन से मुक्त होकर पुनर्जन्म के बंधन में बंधे हैं, वे इस अवस्था में नहीं लौटते। जो कामुकता और पुनर्जन्म दोनों के बंधन से मुक्त हैं, वे अरहंत हैं जिनके आसव (इच्छाएँ/इच्छाएँ) क्षीण हो जाते हैं।"
दोनों से बंधा हुआ

कामुकता का जुआ

और पुनर्जन्म का बंधन (भाव, पुनर्जन्म),

प्राणी भटकते हुए आगे बढ़ते हैं

जन्म की ओर ले जाना

& मौत।

जिन्होंने इंद्रिय सुख का त्याग कर दिया है

आसवों (इच्छाओं/इच्छाओं) के अंत तक पहुंचे बिना,

वे बनने के बंधन (भाव) से बंधे हुए हैं।

इन्हें वापस न लौटने वाले कहा जाता है।

जबकि जिन्होंने संदेह को त्याग दिया है

अब और अहंकार मत रखो

या आगे चलकर पुनर्जन्म लेना।

जो लोग पहुँच चुके हैं

आसवों का अंत,

दुनिया में रहते हुए

चले गए हैं

आगे।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 97. कल्याणसिलसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।

इतिवुत्तक 96 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 97 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 98

97. कल्याणशीलसुत्तम (सद्‌गुण)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, जो भिक्षु शील (परोपकारी गुण), प्रशंसनीय गुण और प्रशंसनीय प्रत्यक्ष ज्ञान (पन्न) से युक्त है, वह धम्म-विनय में पूर्ण, परिपूर्ण और श्रेष्ठ व्यक्ति कहलाता है।

” और भिक्षु कैसे परोपकारी गुण से युक्त होता है? एक मामला वह है जहाँ भिक्षु गुणी होता है। वह पतिमोक्खा (विनय पिटक में बौद्ध आचार संहिता) के अनुसार संयमित रहता है, अपने व्यवहार और कार्यक्षेत्र में परिपूर्ण होता है। वह प्रशिक्षण नियमों का पालन करते हुए स्वयं को प्रशिक्षित करता है, छोटी से छोटी गलती में भी खतरा देखता है। इस प्रकार भिक्षु परोपकारी गुण से युक्त होता है। अतः वह परोपकारी गुण से युक्त होता है।

“और एक भिक्षु प्रशंसनीय गुणों वाला व्यक्ति कैसे होता है? एक स्थिति यह है कि एक भिक्षु सात गुणों के विकास के लिए समर्पित जीवन व्यतीत करता है जो ज्ञानोदय के पंख हैं।[1] इस प्रकार एक भिक्षु प्रशंसनीय गुणों वाला व्यक्ति होता है। इस प्रकार वह परोपकारी सद्‌गुणों और प्रशंसनीय गुणों से परिपूर्ण होता है।

और एक भिक्षु प्रशंसनीय प्रत्यक्ष ज्ञान (पन्ना) वाला व्यक्ति कैसे होता है? एक स्थिति यह है कि एक भिक्षु—आसवों (इच्छाओं/इच्छाओं) के अंत के साथ—आसव-मुक्त, मोक्ष मन में पन्ना (प्रत्यक्ष ज्ञान) के साथ रहता है, और इसे स्वयं वर्तमान क्षण में प्रत्यक्ष रूप से जानता और अनुभव करता है। इस प्रकार एक भिक्षु प्रशंसनीय प्रत्यक्ष ज्ञान (पन्ना) वाला व्यक्ति होता है। इस प्रकार वह परोपकारी सद्‌गुणों, प्रशंसनीय गुणों और प्रशंसनीय प्रत्यक्ष ज्ञान (पन्ना) से परिपूर्ण होता है। इस धम्म-और-विनय में उसे पूर्ण, परिपूर्ण और श्रेष्ठ व्यक्ति कहा जाता है।”
गलत काम से रहित

विचार, शब्द या कर्म में

उन्हें परोपकारी गुणों वाला व्यक्ति कहा जाता है:

वह भिक्षु कर्तव्यनिष्ठ था।

गुणों में अच्छी तरह विकसित

जो आत्म-जागरूकता की प्राप्ति की ओर ले जाते हैं,

उन्हें प्रशंसनीय गुणों वाला व्यक्ति कहा जाता है:

भिक्षु विनम्र स्वभाव का था।

यहीं पर स्वयं निर्णय लेते हुए,

स्वयं में,

दुखों का अंत

उन्हें प्रशंसनीय प्रत्यक्ष समझ (पन्ना) वाला व्यक्ति कहा जाता है:

वह भिक्षु जिसे कोई आसव (इच्छा/इच्छा) नहीं है।

पूर्ण

ये बातें,

चिंतामुक्त, संदेह दूर हो गया।

संसार में अनासक्त,

कहा जाता है कि उसने त्याग दिया है

सभी।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 98. दानसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 97 <<<पिछला ॥ त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 98 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 99

98. दानसुत्तम (दान):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“भिक्षुओं, दान दो प्रकार के होते हैं: भौतिक वस्तुओं का दान और धर्म का दान। इन दोनों प्रकार के दानों में, धर्म का दान श्रेष्ठ है। दान दो प्रकार के होते हैं: भौतिक वस्तुओं का दान और धर्म का दान। इन दोनों प्रकार के दानों में, धर्म का दान श्रेष्ठ है। सहायता दो प्रकार की होती है: भौतिक वस्तुओं में सहायता और धर्म में सहायता। इन दोनों प्रकार की सहायता में, धर्म के साथ सहायता श्रेष्ठ है।”
वह जिस उपहार का वर्णन करता है

सर्वोच्च के रूप में

और अद्वितीय,

भगवान बुद्ध ने जिस साझाकरण की प्रशंसा की है:

जो योग्यता के सर्वोच्च क्षेत्र में आश्वस्त है,

बुद्धिमान, विवेकशील—

क्या वह इसे उचित समय पर नहीं देगा?

दोनों के लिए, जो इसका दावा करते हैं

और जो सुनते हैं,

तथागत (बुद्ध) के संदेश में विश्वास रखते हुए:

यह उनके सर्वोपरि लाभ को शुद्ध करता है—

जो लोग इस संदेश पर ध्यान दे रहे हैं

तथागत (बुद्ध) का।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 99. तेविज्जासुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 98 <<<पिछला || त्रिकों का अध्याय: इतिवुत्तक 99 || अगला >>> इतिवुत्तक 100

99. तेविज्जसुत्तम (त्रिविध ज्ञान, ज्ञान प्राप्ति की प्रक्रिया)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया था, अरहंत द्वारा कहा गया था, जैसा कि मैंने सुना है:

"हे भिक्षुओं, मैं किसी व्यक्ति को त्रिविध ज्ञान से युक्त ब्राह्मण के रूप में धम्म के संदर्भ में वर्णित करता हूँ, न कि किसी अन्य को, जिसका मापन और पाठ द्वारा किया जाता है। और यह धम्म के संदर्भ में कैसे है कि मैं किसी व्यक्ति को त्रिविध ज्ञान से युक्त ब्राह्मण के रूप में वर्णित करता हूँ, न कि किसी अन्य को, जिसका मापन और पाठ द्वारा किया जाता है? "एक ऐसा मामला है जहाँ एक भिक्षु अपने अनेक पिछले जन्मों को याद करता है, अर्थात् एक जन्म, दो... पाँच, दस... पचास, सौ, हज़ार, एक लाख, ब्रह्मांडीय संकुचन के अनेक युग, ब्रह्मांडीय विस्तार के अनेक युग, ब्रह्मांडीय संकुचन और विस्तार के अनेक युग: 'वहाँ मेरा ऐसा नाम था, मैं ऐसे कुल का था, मेरा ऐसा रूप था। मेरा भोजन ऐसा था, सुख-दुख के प्रति मेरी संवेदनशीलता ऐसी थी, मेरे जीवन का अंत ऐसा था। उस अवस्था से विदा होकर, मैं वहाँ पुनः उत्पन्न हुआ। वहाँ भी मेरा ऐसा ही नाम था, मैं ऐसे ही कुल का था, मेरा ऐसा ही रूप था। मेरा भोजन ऐसा था, सुख-दुख के प्रति मेरी ऐसी ही संवेदनशीलता थी, मेरे जीवन का ऐसा ही अंत हुआ। उस अवस्था से विदा होकर, मैं यहाँ पुनः उत्पन्न हुआ।' इस प्रकार वह अपने अनेक पूर्व जन्मों को उनके स्वरूपों और विवरणों सहित याद करता है। "यह वह प्रथम ज्ञान है जो उसने प्राप्त किया है। अज्ञान (अविज्जा) नष्ट हो गया है; ज्ञान का उदय हुआ है; अंधकार नष्ट हो गया है; प्रकाश का उदय हुआ है—जैसा कि उस व्यक्ति में होता है जो सजग, उत्साही और दृढ़ रहता है।

"फिर भिक्षु—शुद्ध और मनुष्य से परे दिव्य दृष्टि से—प्राणियों को मरते और पुनः प्रकट होते देखता है, और वह यह समझ पाता है कि वे अपने कर्मों के अनुसार कैसे हीन और श्रेष्ठ, सुंदर और कुरूप, भाग्यशाली और दुर्भाग्यशाली हैं: 'ये प्राणी—जो शारीरिक दुराचार, वाणी दुराचार और मानसिक दुराचार से ग्रस्त थे; जो लोग श्रेष्ठ व्यक्तियों की निंदा करते थे, गलत विचार रखते थे और गलत विचारों के प्रभाव में कर्म करते थे, वे शरीर के टूटने के बाद, मृत्यु के बाद, अभाव के लोक, एक बुरे गंतव्य, एक निचले लोक, नरक में पुनः प्रकट

होते हैं। परन्तु वे प्राणी—जो शारीरिक रूप से अच्छे आचरण, वाणी से अच्छे आचरण और मानसिक रूप से अच्छे आचरण से संपन्न थे; जिन्होंने श्रेष्ठ व्यक्तियों की निंदा नहीं की, जिन्होंने सही विचार रखे और सही विचारों के प्रभाव में कर्म किए—शरीर के टूटने के बाद, मृत्यु के बाद, एक अच्छे गंतव्य, एक स्वर्गलोक में पुनः प्रकट होते हैं। इस प्रकार—पवित्र और मनुष्य की दृष्टि से श्रेष्ठ दिव्य दृष्टि से—वह प्राणियों को मरते और पुनः प्रकट होते हुए देखता है, और उनके कर्मों के अनुसार उनके हीन और श्रेष्ठ, सुंदर और कुरूप, भाग्यशाली और दुर्भाग्यशाली होने का बोध करता है। "यह वह दूसरा ज्ञान है जो उसने प्राप्त किया है। अज्ञान (अविज्जा) नष्ट हो गया है; ज्ञान (समझ) उत्पन्न हुआ है; अंधकार नष्ट हो गया है; प्रकाश उत्पन्न हुआ है—जैसा कि उस व्यक्ति में होता है जो सतर्क, उत्साही और दृढ़ रहता है।"

"फिर, आसवों (इच्छाओं/इच्छाओं) के अंत के साथ, भिक्षु आसव (इच्छा/इच्छा) से मुक्त मन में रहता है और प्रत्यक्ष ज्ञान (पन्न) के साथ, इसे स्वयं वर्तमान क्षण में प्रत्यक्ष रूप से जानता और अनुभव करता है। "यह वह तीसरा ज्ञान है जो उसने प्राप्त किया है। अज्ञान (अविज्जा) नष्ट हो गया है; ज्ञान उत्पन्न हुआ है; अंधकार नष्ट हो गया है; प्रकाश उत्पन्न हुआ है—जैसा कि उस व्यक्ति में होता है जो सजग, उत्साही और दृढ़ रहता है। "इस प्रकार, धम्म के संदर्भ में, मैं किसी व्यक्ति को त्रिविध ज्ञान से संपन्न ब्राह्मण के रूप में वर्णित करता हूँ, न कि किसी अन्य व्यक्ति के रूप में जिसे उद्धरण और
पाठ द्वारा मापा जाता है।"
वह अपने पिछले जन्मों को जानता है।

वह स्वर्ग और दुख की अवस्थाओं को देखता है।

जन्म की समाप्ति को प्राप्त कर चुका है,

वह एक ऐसा ऋषि है जिसने प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करने में महारत हासिल कर ली है।

इन तीन ज्ञानों के माध्यम से

वह त्रिज्ञानी ब्राह्मण बन जाता है। [1]

मैं उन्हें तीन ज्ञान वाला व्यक्ति कहता हूँ—

एक और नहीं,

उद्धृत करना, सुनाना।

नोट: 1. ब्राह्मण धर्म में, "त्रिज्ञानी व्यक्ति" वह होता था जिसने तीनों वेदों को याद किया हो। यह श्लोक ब्राह्मणवादी शब्द को लेकर उसे एक नया, बौद्ध अर्थ देता है।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 100. ब्राह्मणधम्मयागसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 99 <<<पिछला || चार अध्याय: इतिवुत्तक 100 || अगला >>> इतिवुत्तक 101

100. ब्रह्मनाधम्मयगसुत्तम् (ब्रह्मन धर्म)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"मैं एक ब्राह्मण हूँ, भिक्षुओं, मैं सदा प्रार्थनाओं का उत्तर देने वाला, उदार हाथों वाला, अपना अंतिम शरीर धारण करने वाला, अद्वितीय चिकित्सक और शल्य चिकित्सक हूँ। तुम मेरे बच्चे हो, मेरे पुत्र हो, मेरे मुख से जन्मे हो, धम्म से जन्मे हो, धम्म द्वारा सृजित हो, धम्म के उत्तराधिकारी हो, भौतिक वस्तुओं के उत्तराधिकारी नहीं।

"दो प्रकार के दान हैं: भौतिक वस्तुओं का दान और धम्म का दान। इन दोनों प्रकार के दानों में, धम्म का दान सर्वोच्च है।

"दो प्रकार की सहभागिता है: भौतिक वस्तुओं की सहभागिता और धम्म की सहभागिता। इन दोनों प्रकार की सहभागिता में, धम्म की सहभागिता सर्वोच्च है।

"दो प्रकार की सहायता है: भौतिक वस्तुओं में सहायता और धम्म में सहायता। इन दोनों प्रकार की सहायता में, धम्म के साथ यह सर्वोच्च सहायता है।"

"सामूहिक दान दो प्रकार के होते हैं: भौतिक वस्तुओं का सामूहिक दान और धम्म का सामूहिक दान। इन दोनों प्रकार के सामूहिक दानों में से धम्म का सामूहिक दान सर्वोच्च है।"
जो व्यक्ति निःसंकोच,

धम्म का सामूहिक दान किया।

तथागत (बुद्ध),

सभी प्राणियों के प्रति सहानुभूति रखने वाला:

उस तरह के किसी एक को

सर्वश्रेष्ठ प्राणी, मनुष्य और दिव्य—

जीव-जंतु श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं—

एक चला गया

परे

पुनर्जन्म का।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 101. सुलभसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 100 <<<पिछला ‖ चार अध्याय: इतिवुत्तक 101 ‖ अगला >>> इतिवुत्तक 102

101. सुलभसुत्तम (आसानी से उपलब्ध):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, ये चार वस्तुएँ नगण्य हैं, आसानी से प्राप्त होने वाली और निष्पाप हैं। कौन सी चार वस्तुएँ? त्यागा हुआ वस्त्र नगण्य है, आसानी से प्राप्त होने वाला और निष्पाप है। भिक्षा भोजन नगण्य है, आसानी से प्राप्त होने वाला और निष्पाप है। वृक्ष की जड़ निवास स्थान के रूप में नगण्य है, आसानी से प्राप्त होने वाली और निष्पाप है। सड़े हुए मूत्र से बनी औषधि[1] नगण्य है, आसानी से प्राप्त होने वाली और निष्पाप है।

ये चार वस्तुएँ नगण्य हैं, आसानी से प्राप्त होने वाली और निष्पाप हैं। जब कोई भिक्षु नगण्य, आसानी से प्राप्त होने वाली और निष्पाप वस्तुओं से संतुष्ट होता है, तब मैं कहता हूँ कि उसमें संन्यासी जीवन के एक घटक तत्व का समावेश है।"
जो निर्दोष है, उससे संतुष्ट रहना।

उच नहीं के बराबर,

आसानी से प्राप्त किया जा सकता है,

उसका मन व्याकुल नहीं था

आवास, वस्त्र आदि के अलावा

भोजन या पेय पदार्थ:

चारों दिशाएँ उसे अवसर प्रदान करती हैं

कोई अवरोध नहीं।

इन चीजों को अनुकूल घोषित किया गया है

संन्यासी के जीवन के लिए,

भिक्षु के पास हैं

सतर्क, संतुष्ट।

नोट: 1. यह भिक्षुओं की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है। इस बात पर कुछ मतभेद है कि क्या यह मूत्र में संरक्षित औषधि को संदर्भित करता है, या औषधि के रूप में मूत्र के उपयोग को (जैसा कि आज भी एशिया के कुछ हिस्सों में प्रचलित है)। यह इतिवुत्तक एएन 4:27 के समान है।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 102. असवक्खयसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।

इतिवुत्तक 101 <<<पिछला ॥ चार अध्याय: इतिवुत्तक 102 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 103

102. आसवक्खयासुत्तम् (इच्छाओं का क्षय)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, मैं तुमसे कहता हूँ, जो जानता और देखता है, उसके आसवों (इच्छाओं/इच्छाओं) का अंत होता है, जो नहीं जानता और नहीं देखता। जो जानता और देखता है, उसके आसवों (इच्छाओं/इच्छाओं) का अंत कैसे होता है? जो जानता और देखता है, 'यह दुख है,' उसके आसवों का अंत होता है। जो जानता और देखता है, 'यह दुख का कारण है,' उसके आसवों का अंत होता है। जो जानता और देखता है, 'यह दुख का निवारण है,' उसके आसवों का अंत होता है। जो जानता और देखता है, 'यह दुख के निवारण की ओर ले जाने वाला साधना मार्ग है,' उसके आसवों का अंत होता है। जो इस प्रकार जानता और देखता है, उसके आसवों का अंत होता है।"
प्रशिक्षण ले रहे शिक्षार्थी के लिए

सीधे रास्ते पर चलते हुए, यह उत्पन्न होता है:

सर्वप्रथम, अंत का ज्ञान;

तब, दिव्य जागृति अतुलनीय होती है;

फिर, मुक्त हुए व्यक्ति का दिव्य जागरण—

रिलीज-ज्ञान, अतिशयोक्तिपूर्ण,

अंत का ज्ञान:

'जंजीरें सड़ चुकी हैं।'

निश्चित रूप से उस आलसी मूर्ख द्वारा नहीं।

समझ से परे,

वहाँ प्राप्त किया गया है

निब्बान से मुक्ति

सभी संबंधों का शिथिल होना।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 103. समानब्राह्मणसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 102 <<<पिछला ॥ चार अध्याय: इतिवुत्तक 103 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 104

103. समनाब्रह्मणसुत्तम् (भिक्षु एवं पुरोहित):

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“हे भिक्षुओं, कोई भी तपस्वी (भिक्षु) या ब्राह्मण (पुरोहित) जो यह नहीं समझते हैं, जैसा कि हुआ है, कि 'यह दुख है,' ... कि 'यह दुख का कारण है,' ... कि 'यह दुख का निवारण है,' जो यह नहीं समझते हैं, जैसा कि हुआ है, कि 'यह दुख के निवारण की ओर ले जाने वाला साधना मार्ग है': मेरे लिए ये तपस्वी (भिक्षु) और ब्राह्मण तपस्वियों में तपस्वी (भिक्षु) या ब्राह्मणों में ब्राह्मण नहीं गिने जाते। इसके अलावा, वे तपस्वी जीवन के लक्ष्य या ब्राह्मण जीवन के लक्ष्य में प्रवेश नहीं करते और न ही उसमें बने रहते हैं, क्योंकि उन्होंने स्वयं इसे वर्तमान क्षण में प्रत्यक्ष रूप से जान और अनुभव किया है।

“लेकिन कोई भी वे तपस्वी (भिक्षु) या ब्राह्मण जो यह समझते हैं कि 'यही दुख है,' ... 'यही दुख का कारण है,' ... 'यही दुख का निवारण है,' जो यह समझते हैं कि 'यही दुख निवारण का मार्ग है': मेरे लिए ये तपस्वी (भिक्षु) और ब्राह्मण तपस्वियों में तपस्वी और ब्राह्मणों में ब्राह्मण हैं। इसके अलावा, वे तपस्वी जीवन के लक्ष्य और ब्राह्मण जीवन के लक्ष्य में प्रवेश करते हैं और उसमें बने रहते हैं, क्योंकि उन्होंने स्वयं इस समय और यहीं पर इसे प्रत्यक्ष रूप से जान लिया है और अनुभव कर लिया है।
जो लोग दुख को नहीं पहचानते,

पीड़ा अपना असर दिखाने लगी है।

और जहां यह पूरी तरह से रुक जाता है,

बिना पहचाने,

जो रास्ता नहीं जानते,

दुखों को शांत करने का मार्ग:

निम्न

उनके मुक्त मन में

और समझ में स्वतंत्रता (पन्ना),

अक्षम

अंत करने का,

वे जा रहे हैं

जन्म और वृद्धावस्था के लिए।

लेकिन जो लोग दुख को समझते हैं,

पीड़ा अपना असर दिखाने लगी है।

और जहां यह पूरी तरह से रुक जाता है,

बिना पहचाने,

जो मार्ग को पहचानते हैं,

दुखों को शांत करने का मार्ग:

समाप्त

उनकी जागरूकता-जारी में

और प्रत्यक्ष समझ (पन्ना) में स्वतंत्रता,

काबिल

अंत करने का,

वे आगे नहीं बढ़ रहे हैं

पुनर्जन्म और वृद्धावस्था के लिए।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 104. सिलसम्पन्नसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 103 <<<पिछला ॥ चार अध्याय: इतिवुत्तक 104 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 105

104. शिलासंपन्नसुत्तम (सद्गुणों से परिपूर्ण)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

“हे भिक्षुओं, वे भिक्षु जो सद्गुणों (शील) से परिपूर्ण हैं, समाधि (सम्मोहन) से परिपूर्ण हैं, प्रत्यक्ष ज्ञान (पन्न) से परिपूर्ण हैं, मुक्ति से परिपूर्ण हैं, मुक्ति के ज्ञान और दृष्टि से परिपूर्ण हैं; जो उपदेश देते हैं, उदाहरण देते हैं, निर्देश देते हैं, प्रेरित करते हैं, जगाते हैं और प्रोत्साहित करते हैं; जो सही ढंग से सच्चे धम्म को इंगित करने में सक्षम हैं: मैं तुमसे कहता हूँ, उन्हें देखने से बहुत कुछ प्राप्त होता है; उन्हें सुनने से... उनके पास जाने से... उनकी देखभाल करने से... उनका स्मरण करने से, उनके पीछे चलते हुए बहुत कुछ प्राप्त होता है। ऐसा क्यों है?
“इस प्रकार के भिक्षुओं के साथ संगति करने से, उनके साथ सहभागिता करने से, उनकी देखभाल करने से, अभी तक अविकसित सद्गुणों (शील) का समूह अपने विकास की पराकाष्ठा तक पहुँचता है, अभी तक अविकसित समाधि (सम्मोहन) का समूह अपने विकास की पराकाष्ठा तक पहुँचता है।” विकास के क्रम में, प्रत्यक्ष बोध (पन्ना) का अभी तक पूर्ण न हुआ समुच्चय अपने विकास की पराकाष्ठा की ओर बढ़ता है, मुक्ति का अभी तक पूर्ण न हुआ समुच्चय अपने विकास की पराकाष्ठा की ओर बढ़ता है, मुक्ति के ज्ञान और दृष्टि का अभी तक पूर्ण न हुआ समुच्चय अपने विकास की पराकाष्ठा की ओर बढ़ता है। इस प्रकार के भिक्षुओं को शिक्षक,

रथगामी नेता, कलह का त्याग करने वाले, अंधकार को दूर करने वाले, प्रकाश उत्पन्न करने वाले, दीप्ति उत्पन्न करने वाले, चमक उत्पन्न करने वाले, दीप्ति उत्पन्न करने वाले, ज्ञान प्रदान करने वाले, महान और दृष्टि से संपन्न कहा जाता है।
यह एक स्थिति है

आनंद उत्पन्न करना

जो लोग जानते हैं उनके लिए:

धम्म का जीवन जीना

श्रेष्ठ लोगों में से,

मन को शांत रखते हुए।

वे सच्चे धम्म को प्रकाशमान करते हैं।

इसे प्रकाशित करो, यह खूब चमके।

वे प्रकाश के निर्माता हैं।

प्रबुद्ध (बुद्धिमान),

संघर्ष के परित्यागी।

उनकी आंखें हैं

जो देखते हैं।

उनका संदेश सुनकर

सही दिव्य जागृति के साथ, बुद्धिमान

सीधे तौर पर जानना

जन्म का अंत,

आगे किसी भी प्रकार का जन्म न होना (पुनर्जन्म)।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 105. तनहुप्पासुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 104 <<<पिछला॥ चार अध्याय: इतिवुत्तक 105 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 106

105. तनहुप्पदसुत्तम (लालसा का जन्मस्थान)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, तन्हा की ये चार जन्मस्थान हैं जहाँ एक भिक्षु की तन्हा, जन्म लेते समय, उत्पन्न होती है। वे चार कौन से हैं? या तो वस्त्र के लिए, या भिक्षा भोजन के लिए, या आवास के लिए, या यह या वह बनने या न बनने के लिए, जन्म लेते समय, भिक्षु की तन्हा उत्पन्न होती है। ये चार जन्मस्थान हैं जहाँ एक भिक्षु की तन्हा, जन्म लेते समय, उत्पन्न होती है।"
अपने साथी के लिए लालसा (तन्हा) के साथ, एक आदमी

बहुत लंबे समय तक भटकता रहता है।

न ही इस राज्य में यहाँ

और न ही कहीं और

क्या वह इससे आगे जाता है?

भटकते रहना।

इस कमी को जानते हुए—

वह लालसा (तन्हा) दुख को जन्म देती है—

लालसा से मुक्त (तन्हा),

आसक्ति से रहित,

ध्यानमग्न भिक्षु

वह भिक्षु जीवन व्यतीत करता है।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 106. सब्रह्मकसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 105 <<<पिछला ॥ चार अध्याय: इतिवुत्तक 106 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 107

106. सब्रह्मकसुत्तम् (माता-पिता, ब्रह्मा के समान हैं)

यह बात भगवान बुद्ध (भागवत) ने कही है, अरहंत ने भी यही कहा है, जैसा मैंने सुना है:

“हे भिक्षुओं, ब्रह्मा (प्रधान देवदूत) के साथ रहने वाले वे परिवार हैं जहाँ घर में बच्चे माता-पिता का आदर करते हैं। प्रथम देवों (देवदूतों) के साथ रहने वाले वे परिवार हैं जहाँ घर में बच्चे माता-पिता का आदर करते हैं। प्रथम गुरुओं के साथ रहने वाले वे परिवार हैं जहाँ घर में बच्चे माता-पिता का आदर करते हैं। दान के योग्य लोगों के साथ रहने वाले वे परिवार हैं जहाँ घर में बच्चे माता-पिता का आदर करते हैं। 'ब्रह्म (प्रधान देवदूत)' माता-पिता का पर्यायवाची है। 'प्रथम देव (देवदूत)' माता-
पिता का पर्यायवाची है। 'प्रथम गुरु' माता-पिता का पर्यायवाची है। 'दान के योग्य लोग' माता-पिता का पर्यायवाची है। ऐसा क्यों है? माता-पिता अपने बच्चों के लिए बहुत कुछ करते हैं। वे उनकी देखभाल करते हैं। उनका पालन-पोषण करो, उन्हें इस दुनिया से परिचित कराओ।"
माँ बाप,

अपने परिवार के प्रति दयालु,

कहा जाता है

ब्रह्मा (प्रधानदेव),

पहले शिक्षक,

उपहारों के योग्य

अपने बच्चों से।

इसलिए समझदारों को उन्हें भुगतान करना चाहिए

श्रद्धांजलि,

सम्मान,

खाने-पीने के साथ,

कपड़े और बिस्तर,

अभिषेक और स्नान,

और उनके पैर धोना।

अपने माता-पिता को ये सेवाएं प्रदान करते हुए,

समझदार

यहीं उनकी प्रशंसा की जाती है

और मृत्यु के बाद

स्वर्ग में आनंद मनाओ।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 107. बहुकरसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 106 <<<पिछला || चार अध्याय: इतिवुत्तक 107 || अगला >>> इतिवुत्तक 108

107. बहुकारसुत्तम (सहायक)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, ब्राह्मणों और गृहस्थों को आपका बहुत सहायक होना चाहिए, क्योंकि वे आपको वस्त्र, भिक्षा, भोजन, आवास और बीमारों के लिए चिकित्सा सामग्री प्रदान करते हैं। और आप, भिक्षुओं, ब्राह्मणों और गृहस्थों के लिए बहुत सहायक हैं, क्योंकि आप उन्हें धर्म का उपदेश देते हैं जो आरंभ में प्रशंसनीय, मध्य में प्रशंसनीय और अंत में प्रशंसनीय है; क्योंकि आप ब्रह्मचर्य जीवन का उसके विवरण और सार दोनों में पूर्णतः पूर्ण, अत्यंत शुद्ध वर्णन करते हैं। इस प्रकार ब्रह्मचर्य जीवन परस्पर निर्भरता में जिया जाता है, ताकि बाढ़ को पार किया जा सके और
दुखों का सही अंत किया जा सके।"

गृहस्थ और बेघर

पारस्परिक निर्भरता में

दोनों ही सच्चे धम्म तक पहुँचते हैं:

गुलामी से अद्वितीय सुरक्षा।

गृहस्थों से लेकर बेघरों तक

आवश्यक वस्तुएँ प्राप्त करें: वस्त्र, आवास,

प्रतिकूल मौसम से सुरक्षा।

जबकि उन लोगों पर निर्भरता बनी हुई है जो गुजर चुके हैं,

घर से प्यार करने वाले गृहस्थों

अरहंतों में आस्था रखें

महान प्रत्यक्ष समझ (पन्ना) का

ध्यान (सम्मोहन) में लीन।

यहाँ धम्म का अभ्यास करने के बाद—

अच्छे गंतव्यों की ओर ले जाने वाला मार्ग—

देवलोक में आनंदित होते हुए,

वे प्रसन्न होते हैं,

कामुक सुखों का आनंद लेना।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 108. कुहासुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 107 <<<पिछला ॥ चार अध्याय: इतिवुत्तक 108 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 109

108. कुहासुत्तम (धोखेबाज)

यह बात भगवान बुद्ध (भागवत) ने कही है, अरहंत ने कही है, जैसा मैंने सुना है:

"हे भिक्षुओं, जो भिक्षु धोखेबाज, हठी, बातूनी, कपटी, अहंकारी और ध्यानमग्न (सम्मोहन का अभ्यास न करने वाले) हैं, वे मेरे अनुयायी नहीं हैं। वे धम्म-विनय से विमुख हो गए हैं। वे धम्म-विनय के संदर्भ में कोई उन्नति, वृद्धि या समृद्धि प्राप्त नहीं करते।" "परन्तु जो भिक्षु धोखेबाज नहीं हैं, बातूनी नहीं हैं, जो धैर्यवान, विनम्र और ध्यानमग्न (सम्मोहन में) हैं, वे मेरे अनुयायी हैं। वे धम्म-विनय से विमुख नहीं हुए हैं। वे धम्म-विनय के संदर्भ में उन्नति, वृद्धि और समृद्धि प्राप्त करते हैं।"
कपटी, जिद्दी, बातूनी, धोखेबाज

अहंकारी, अस्थिर (सम्मोहन का अभ्यास न करने वाला):

वे धम्म में नहीं उगते

सही (पूरी तरह से) द्वारा सिखाया गया

स्वयंजागृत व्यक्ति (बुद्ध)।

न तो कपटी, न ही बातूनी।

दृढ़, लचीला,

अच्छी तरह से केंद्रित (समाधि का अभ्यास करता है):

वे धम्म में बढ़ते हैं

एक द्वारा सिखाया गया

ठीक

आत्मजागृत (बुद्ध)।

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 109. नादिसोत्सुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 108 <<<पिछला ‖ चार अध्याय: इतिवुत्तक 109 ‖ अगला >>> इतिवुत्तक 110

109. नादिसोतसुत्तम (नदियाँ और धाराएँ)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, मान लीजिए कि एक व्यक्ति नदी की सुंदर और आकर्षक धारा में बह रहा है। तभी नदी के किनारे खड़ा एक अन्य व्यक्ति, जिसकी दृष्टि अच्छी है, उसे देखकर कहता है, 'हे मेरे भले, यद्यपि तुम नदी की सुंदर और आकर्षक धारा में बह रहे हो, लेकिन यहाँ से आगे लहरों और भंवरों वाला एक कुंड है, जिसमें राक्षस और दानव हैं। उस कुंड में पहुँचकर तुम्हें मृत्यु या मृत्यु के समान पीड़ा सहनी पड़ेगी।' तब पहला व्यक्ति, दूसरे व्यक्ति के शब्दों को सुनकर, धारा के विपरीत जाने के लिए अपने हाथों और पैरों से प्रयास करेगा। "मैंने आपको यह उपमा अर्थ स्पष्ट करने के लिए दी है। इसका अर्थ यह है: नदी की धारा तृष्णा (तन्हा) का प्रतीक है। सुंदर और आकर्षक छह आंतरिक इंद्रिय-माध्यमों का प्रतीक है। आगे स्थित कुंड पाँच निम्न बंधनों का प्रतीक है।[1] लहरें क्रोध और पीड़ा का प्रतीक हैं। भंवर कामुकता के पांच तार दर्शाते हैं। पकड़ने वाले और राक्षस विपरीत लिंग का प्रतीक हैं। धारा के विपरीत जाना त्याग का प्रतीक है। हाथों और पैरों से प्रयास करना दृढ़ता को जगाने का प्रतीक है। तट पर खड़ा अच्छी दृष्टि वाला व्यक्ति तथागत (बुद्ध) का प्रतीक है, जो योग्य और सही मायने में आत्मजागृत हैं।
भले ही इसमें कष्ट सहना पड़े,

आपको त्याग देना चाहिए

कामुक इच्छाएँ

यदि आप आकांक्षा रखते हैं

भविष्य में गुलामी से सुरक्षा के लिए।

पूर्णतः जागरूक होकर (समभाविक ध्यान में),

मुक्त मन के साथ,

यहां-वहां (स्वयं के भीतर) अनुभूति का अनुभव करना,

ज्ञान प्राप्त करने वाला

ब्रह्मचर्य का पवित्र जीवन व्यतीत करने के बाद,

कहा जाता है कि वह चला गया है

दुनिया के अंत तक, चला गया

आगे।

नोट: 1. निम्नतम पाँच बंधन हैं: आत्म-पहचान का दृष्टिकोण, अनिश्चितता, आदतों और प्रथाओं से आसक्ति, कामुक वासना और प्रतिरोध। एएन 7:48 और एएन 10:13 भी देखें।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 110. चरसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 109 <<<पिछला ॥ चार अध्याय: इतिवुत्तक 110 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 111

110. चरसुत्तम (चलते समय...)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"यदि चलते समय किसी भिक्षु के मन में कामुकता, द्वेष या हानि पहुँचाने का विचार उत्पन्न होता है, और वह उस विचार को शीघ्रता से त्यागकर, दूर करके, नष्ट करके या मिटाकर नहीं मिटाता है, तो ऐसे भिक्षु को निरंतर आलसी और दृढ़ संकल्प में कम कहा जाता है।
"यदि खड़े होते समय...
"यदि बैठे होते समय...
"यदि लेटे होते समय किसी भिक्षु के मन में कामुकता, द्वेष या हानि पहुँचाने का विचार उत्पन्न होता है, और वह उस विचार को शीघ्रता से त्यागकर, दूर करके, नष्ट करके या मिटाकर नहीं मिटाता है, तो ऐसे भिक्षु को निरंतर आलसी और दृढ़ संकल्प में कम कहा जाता है।

लेकिन यदि चलते समय किसी भिक्षु के मन में कामुकता, द्वेष या हानि पहुँचाने का विचार उत्पन्न हो, और वह उस विचार को तुरंत त्याग दे, दूर कर दे, नष्ट कर दे और मिटा दे, तो ऐसे उत्साह और पश्चाताप के साथ चलने वाले भिक्षु को निरंतर दृढ़ निश्चयी, दृढ़ संकल्प से परिपूर्ण कहा जाता है।
यदि खड़े रहते समय...
यदि बैठे रहते समय...
यदि लेटे रहते समय किसी भिक्षु के मन में कामुकता, द्वेष या हानि पहुँचाने का विचार उत्पन्न हो, और वह उस विचार को तुरंत त्याग दे, दूर कर दे, नष्ट कर दे और मिटा दे, तो ऐसे उत्साह और पश्चाताप के साथ लेटे रहने वाले भिक्षु को निरंतर दृढ़ निश्चयी, दृढ़ संकल्प से परिपूर्ण कहा जाता है।
चाहे चलना हो या खड़े रहना हो,

बैठे हुए, या लेटे हुए,

जो कोई भी बुरे विचार सोचता है,

घरेलू जीवन से संबंधित,

यह किसी भी मार्ग का अनुसरण नहीं कर रहा है।

पीटा गया

भ्रामक चीजों के साथ।

वह अक्षम है।

इस तरह का एक भिक्षु,

स्पर्श करने का अतिशयोक्तिपूर्ण

आत्मजागरूकता।

लेकिन जो कोई भी

चलना, खड़े होना,

बैठे हुए, या लेटे हुए

विचार पर विजय प्राप्त करता है,

विचारों के शांत होने में आनंद लेना:

वह सक्षम है।

इस तरह का एक भिक्षु,

स्पर्श करने का अतिशयोक्तिपूर्ण

आत्म-जागरूकता (बोधि)।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 111. संपन्नशिलासुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 110 <<<पिछला ॥ चार अध्याय: इतिवुत्तक 111 ॥ अगला >>> इतिवुत्तक 112

111. संपन्नशीलसुत्तम (सद्‌गुणों से परिपूर्ण)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"हे भिक्षुओं, सद्गुणों से परिपूर्ण हो और पतिमोक्ख (विनय पिटक में बौद्ध आचार संहिता) का पूर्णतया पालन करो। पतिमोक्ख के अनुसार संयमित रहो, अपने आचरण और कार्यक्षेत्र में परिपूर्ण रहो। प्रशिक्षण नियमों का पालन करते हुए स्वयं को प्रशिक्षित करो, छोटी से छोटी गलती में भी खतरे को पहचानो। जब कोई सद्गुणों से परिपूर्ण हो, पतिमोक्ख से परिपूर्ण हो; पतिमोक्ख के अनुसार संयमित रहता हो,

अपने आचरण और कार्यक्षेत्र में परिपूर्ण हो; प्रशिक्षण नियमों का पालन करते हुए स्वयं को प्रशिक्षित करता हो, छोटी से छोटी गलती में भी खतरे को पहचानता हो—तो और क्या करना बाकी है?" "यदि चलते समय किसी भिक्षु का लालच, द्वेष, आलस्य, बेचैनी और चिंता दूर हो जाए, अनिश्चितता का त्याग हो जाए; यदि उसका दृढ़ संकल्प जागृत हो और शिथिल न हो; यदि उसकी जागरूकता स्थिर और स्पष्ट हो; यदि उसका

शरीर शांत और उत्तेजित न हो; यदि उसका ध्यान केंद्रित (सम्मोहन में) और एकीकृत हो: तो ऐसे उत्साह और पश्चाताप के साथ चलने वाले भिक्षु को निरंतर और सतत दृढ़ निश्चयी, जागृत दृढ़ता वाला भिक्षु कहा जाता है।

"यदि खड़े रहते समय...

"यदि बैठे रहते समय...

"यदि लेटते समय किसी भिक्षु का लालच, द्वेष, आलस्य, बेचैनी और चिंता दूर हो जाए, अनिश्चितता का त्याग हो जाए; यदि उसका दृढ़ संकल्प जागृत हो और शिथिल न हो; यदि उसकी जागरूकता स्थिर और स्पष्ट हो; यदि उसका शरीर शांत और उत्तेजित न हो; यदि उसका ध्यान केंद्रित (समाधि की अवस्था में) और एकीकृत हो, तो ऐसे उत्साह और पश्चाताप के साथ लेटे हुए भिक्षु को निरंतर और सतत दृढ़ निश्चयी, दृढ़ता से जागृत भिक्षु कहा जाता है।

चलने में नियंत्रित,

खड़े होने की स्थिति में नियंत्रित,

बैठने की स्थिति में नियंत्रित,

लेटने की स्थिति में नियंत्रित,

अपने अंगों को मोड़ने और फैलाने में नियंत्रित।

ऊपर, चारों ओर और नीचे

दुनिया की सीमा तक

इसके उद्भव और क्षय का अवलोकन करना

(ध्यान में क्षणभंगुरता को देखते हुए)

आंतरिक घटनाओं का,

समुच्चय का

(5 खंड: रूप, भावनाएँ (संवेदनाएँ), बोध, विचार और चेतना)

एक भिक्षु जो इस प्रकार उत्साहपूर्वक निवास करता है,

बेचैन नहीं, शांति में

हमेशा

सचेत, समभाव,

महारत हासिल करने का प्रशिक्षण

जागरूकता-शांति

कहा जाता है कि लगातार

दृढ़ निश्चयी।
तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> इतिवुत्तक >> 112. लोकसुत्तम

थानिसारो भिक्खु (जियोफ्रे डीग्राफ) द्वारा किए गए अनुवाद से रूपांतरित।
पाली त्रिपिटक से तुलना www.tipitaka.org पर उपलब्ध है।
इतिवुत्तक 111 <<<पिछला॥ चौगुने अध्याय: इतिवुत्तक 112 [समाप्त]॥

112. लोकसुत्तम् (तथागत बुद्ध द्वारा ज्ञात समस्त लोक)

यह भगवान बुद्ध (भागवत) द्वारा कहा गया है, अरहंत द्वारा कहा गया है, जैसा कि मैंने सुना है:

"भिक्षुओं, इस संसार[1] को तथागत (बुद्ध) ने पूर्णतः ज्ञात कर लिया है। तथागत (बुद्ध) इस संसार से विमुख हैं। संसार की उत्पत्ति को तथागत (बुद्ध) ने पूर्णतः ज्ञात कर लिया है। संसार की उत्पत्ति का तथागत (बुद्ध) ने त्याग कर दिया है। संसार के अंत को तथागत (बुद्ध) ने पूर्णतः ज्ञात कर लिया है। संसार के अंत का तथागत (बुद्ध) ने अनुभव कर लिया है। संसार के अंत की ओर ले जाने वाले मार्ग को तथागत (बुद्ध) ने पूर्णतः ज्ञात कर लिया है। संसार के अंत की ओर ले जाने वाले मार्ग का तथागत (बुद्ध) ने विकास किया है।[2] "इस संसार में जो कुछ भी है—अपने देवताओं (देवदूतों) सहित, मारस (राक्षस), ब्रह्मा (प्रधान देवदूत), उनकी पीढ़ियाँ, तपस्वियों (भिक्षुओं) , ब्राह्मणों (पुजारियों), राजकुमारों और मनुष्यों सहित—उन सभी को तथागत (बुद्ध) द्वारा पूर्णतः जागृत बुद्धि द्वारा देखा, सुना, अनुभव किया, जाना, प्राप्त किया, खोजा और विचार किया जाता है। अतः उन्हें तथागत (बुद्ध) कहा जाता है। "जिस रात तथागत (बुद्ध) ने पूर्णतः बोधि (जागृति) प्राप्त की, उस रात से लेकर जिस रात वे पूर्णतः निर्वाण प्राप्त कर निर्वाणिक अवस्था में बिना किसी पुनर्जन्म के निर्वाण प्राप्त कर लेते हैं,[3] तथागत (बुद्ध) ने जो कुछ भी कहा, बोला, समझाया है, वह सत्य है, अन्यथा नहीं। अतः उन्हें तथागत कहा जाता है। "तथागत वह हैं जो अपने उपदेशों का पालन करते हैं, जो उपदेश देते हैं वही करते हैं। क्योंकि वे अपने उपदेशों के अनुरूप कार्य करते हैं, और अपने कर्मों के अनुरूप उपदेश देते हैं, इसीलिए उन्हें तथागत कहा जाता है। "इस संसार में, जहाँ देवता (देवदूत), मार (मृत्यु के देवता) और ब्रह्मा (प्रधान देवदूत) विद्यमान हैं, और जहाँ
तपस्वियों (भिक्षुओं) और ब्राह्मणों, राजकुमारों और मनुष्यों की पीढ़ियाँ व्याप्त हैं, तथागत (बुद्ध) अजेय विजेता, पूर्ण द्रष्टा और शक्ति के स्वामी हैं।[4] इसीलिए उन्हें तथागत कहा जाता है।"
सीधे तौर पर पूरी दुनिया को जानना,
पूरी दुनिया जैसी वह वास्तव में है,
पूरी दुनिया से अलग होकर,

पूरी दुनिया में बेजोड़।
सभी पर विजय प्राप्त करना
सभी मायनों में,
प्रबुद्ध,
सभी बंधनों से मुक्त,
वह परम शांति को स्पर्श करता है—
निर्वाण (मुक्ति), मुक्त
डर से।

वह आसव (इच्छा/इच्छा) से मुक्त है।

परेशानी का,

जागृत,

उसके संदेह स्पष्ट रूप से सामने आ गए;

क्रिया का अंत हो चुका है।

मानसिक उपलब्धियों के विनाश में जारी किया जाता है

(विशेषताएं/इच्छाएं)।
वे जागृत हो चुके हैं, बुद्ध।
वह एक शेर है, जिसकी कोई बराबरी नहीं।
इस संसार में, इसके देवों (देवदूतों) के साथ
उसने ब्रह्मचक्र को घुमाना शुरू कर दिया।5
इसी प्रकार दिव्य और मनुष्य भी करते हैं।
जो बुद्ध की शरण में गए हैं,
सभा, श्रद्धांजलि अर्पित करना
उस महान व्यक्ति को, जो पूर्णतः परिपक्व है:
'वश में करने पर, वह सबसे अच्छा है'
उनमें से जिन्हें वश में किया जा सकता है;
शांत, द्रष्टा
उन लोगों में से जिन्हें शांत किया जा सकता है;
जारी किया गया, सर्वोच्च
जिन लोगों को रिहा किया जा सकता है उनमें से;
पार किया, सबसे आगे
उनमें से जो पार कर सकते हैं।'
इस प्रकार वे श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं
उस महान व्यक्ति को, जो पूर्णतः परिपक्व है:
इस संसार में, अपने देवदूतों के साथ,
वहाँ कोई नहीं है

तुलना करने के लिए
तुम्हारे साथ।'
मैंने सुना है कि भगवान बुद्ध के वचन का भी यही अर्थ था।
टिप्पणी:
1. एसएन 35:82 में "संसार" को छह इंद्रिय क्षेत्रों, उनके विषयों, उन क्षेत्रों में चेतना, उन क्षेत्रों में संपर्क और उस संपर्क के आधार पर उत्पन्न होने वाली हर चीज के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसे सुख, दुख या न सुख और न दुख के रूप में अनुभव किया जाता है।
2. यह अंश, एक परिवर्तन के साथ, चार आर्य सत्यों के लिए उपयुक्त कर्तव्यों के समानांतर है: दुख के उद्गम का त्याग करना, उसके निवारण को जानना और उसके निवारण की ओर ले जाने वाले साधना मार्ग का विकास करना। एकमात्र विचलन यह है कि जहाँ दुख के संबंध में कर्तव्य उसे समझना है, वहीं यहाँ तथागत संसार से विरक्त हैं। एसएन 56:11 देखें।
3. क्रमांक 44 देखें।
4. ये विशेषण सामान्यतः महाब्रह्म से जुड़े होते हैं। क्रमांक 22 देखें।
5. ब्रह्म-चक्र = धम्म-चक्र, बुद्ध के प्रथम उपदेश का नाम, क्योंकि इसमें एक "चक्र" है जो दो चरों के सभी बारह संयोजनों को सूचीबद्ध करता है: चार आर्य सत्य—दुख, उसका उद्भव, उसका निवारण और उसके निवारण का मार्ग—और प्रत्येक सत्य के लिए उपयुक्त ज्ञान के तीन स्तर: सत्य का ज्ञान, सत्य के लिए उपयुक्त कार्य का ज्ञान और कार्य
पूर्ण होने का ज्ञान। यह चक्र बुद्ध की सबसे केंद्रीय शिक्षा का सार है।
यह इतिवुत्तक एएन 4:23 के समान है।